यह समय बेदाग़ कलीसिया के लिए है !

जब परमेश्वर ने मुझे सेवकाई में बुलाया
उसने मुझे तीन होने वाली बातों का दर्शन दिखाया,
जिन का प्रकाशन मैं मसीह की देह पर
तीन बड़े दाग़ों के रूप में करूँगा।

उसने उस समय कहा,

"ये तीन उदाहरण हैं।"

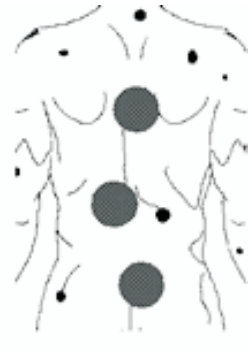

यह पुस्तक उस दाग़ के बारे में हैं,
जो कि परमेश्वर के हृदय के निकट है!

"मुक्ति की प्रक्रिया"

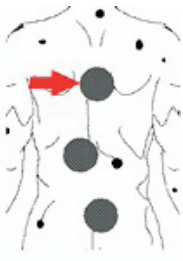

1 कुरिन्थियों 2:12, 13
परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जाने, जो परमेश्वर ने हमें दी है! जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते है।

यह चिन्ह जो इस पुस्तक में दिया गया है ''आत्मा की बातें'' जो परमेश्वर के द्वारा समझने के लिए दी गई है, पहचान करवाता है।

लेखक की ओर से :

मैं यह लिख रहा हूँ क्योंकि लोगों ने मुझ से सम्पर्क किया, और जो मैने मुक्ति के विषय में लिखा चिंतित किया। मैं यह बता सकता हूँ कि, उन्हों ने वह सब नहीं पढ़ा, जो मैंने प्रस्तुत किया और निश्चित रूप से उन सारे प्रमाणों को नहीं पढ़ा, जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रस्तुत किए गए। उन समस्याओं के कारण, जो कि स्वर्ग में 48% अनुपस्थित है!

परमेश्वर ने इस बात को प्रकट किया है कि पृथ्वी पर कोई भी सेवकाई ऐसी नहीं है जो इस समस्या में योगदान नहीं देती, या रीति-रिवाज के द्वारा या सिद्धांत के द्वारा। हमारे कुछ ऐसे रीति-रिवाज जो हमारी गवाहीयों में पाए जाते हैं। वो गलत हैं, जैसा कि परमेश्वर ने मुझे प्रमाण दिया कि, अगुवों को आवश्यकता है कि वो खुले हृदयों से इस बात की खोज करें कि, पवित्र आत्मा ने क्या प्रकाशित किया है। क्योंकि परमेश्वर अगुवों को ही जिम्मेदार ठहराता है। उन आत्माओं के लिए जिन्हें व छूने के योग्य हैं। इस बात को समझने का प्रयत्न करें कि, हम इन रीति-रिवाजों और विश्वास के साथ पले बढ़े हैं, और कभी भी परमेश्वर के साथ उनकी जाँच-पड़ताल नहीं की, कि परमेश्वर के निकट आयें और पता लगाएँ कि, जो गवाही मैं देता हूँ, वह सत्य है।

आप में से कुछ मुझे ''उत्तेजित'' समझेंगे कि, मैं इतनी निडरता के साथ यह कैसे कह सकता हूँ, क्योंकि आप कभी भी स्वर्ग नहीं गए और न ही उस विश्वासी को देखा है, जो वहां नरक में था। जोकि मनुष्य के रीति-रिवाजों और शिक्षाओं के कारण वहाँ पर था! हाल ही में, मैं ओर भी निडर हो गया, जब परमेश्वर ने मुझ से यह कहा ''आप क्यो इन परेशान लोगों के बारे में चितिंत हो रहे हो? यदि मैं तुम्हारे जीवन में नहीं आता, तो तुम्हारी बेटीयाँ उद्धार रहित रह जाती। यह सोचते हुए कि, सब कुछ ठीक है। मैं इसका प्रमाण देता हूँ।''

Roy Sauzek
रोय सौज़ेक

सूचिपृष्ठ

पुस्तक में यह चिन्ह–लेखक की ओर से है!

मैंने सीधा फाटक देखा पृष्ठ-1

मुक्ति का दर्शन पृष्ठ- 4

परमेश्वर मुझे स्वर्ग में ले गया पृष्ठ- 6

"मेरे पीछे दोहराइये" काम क्यों नहीं करते? पृष्ठ -8

प्रार्थना क्यों मुक्ति के लिए अंगीकार का माध्यम नहीं है? पृष्ठ-10

एक सच्चे अंगीकार में क्या है? पृष्ठ-13

कुछ तो आदर के लिए, और कुछ अनादर के लिए। पृष्ठ-22

हमें मसीह के बारे में क्या अंगीकार करना चाहिए? पृष्ठ-25

जब कोई परमेश्वर को अपने हृदय में आने को कहता है?
तो वह उसके बारे में कैसे प्रभावित होता है? पृष्ठ-28

आपकी आत्मा का नये सिरे से जन्म कब होता है? पृष्ठ-29

परमेश्वर खुले तौर पर प्रमाणित करता है जब आपकी आत्मा नये
सिरे से जन्म लेती है! पृष्ठ-30

एक ओर दूसरा प्रमाण जब आपकी आत्मा नये सिरे से जन्म लेती है! पृष्ठ-31

पानी में बपतिस्मा–यह क्या है और यह क्या नहीं है! पृष्ठ-32

किसी की वेदी पर निमंत्रण करना खतरा भी हो सकता है!!! पृष्ठ-35

मुक्ति की गंभीरता की स्थिति के विषय में परमेश्वर मुझे इन गवाहियों को दिखा रहा है:

परमेश्वर प्रकट करता है कि समस्या मेरे कितने निकट थी। पृष्ठ-39

परमेश्वर ने कहा, "धर्म!" पृष्ठ-40

एक छोटा लड़का चिड़चिड़ आत्मा के साथ! पृष्ठ-42

एक पल निकाले? पृष्ठ-47

"बचाया गया" शब्द को उचित रीति से विभाजित करना! पृष्ठ-52

Copyright Protected by Roy Sauzek 1999-2010

But feel free to copy and Spread.

मैने सीधा फाटक देखा!

यीशु ने कहा,

मत्ती 7:14

क्योंकि सकेत है वह फाटक और, सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते है।

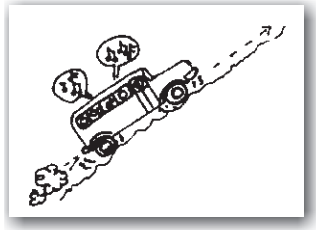

रात के दर्शन में , प्रभु ने मुझे आनन्दमय लोगों, से भरी एक कलीसिया बस दिखाई, सभी परिवार भजन गाते हुए एक मनुष्य के द्वारा एक पहाड़ी के ऊपर अंधकार में ''सीधे फाटक'' की ओर ले जाए जा रहे थे।

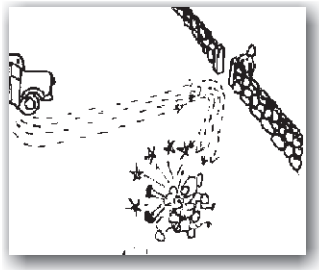

वे पहुँचे और बस में से निकलने के बाद ''सीधे फाटक'' से गुजरने का प्रयत्न किया, परन्तु वे सब दूर कर दिए गए। तब वह बस के चालक की ओर फिरे, और उसे मुक्कों से मारते हुए, झपटे और उसे पैरों के नीचे कुचलना शुरू किया।

एक दिन मैं कम्पयूटर पर था और एक मनुष्य ने इसे मेरे साथ बाँटा।

''एक मनुष्य जो कलीसिया में था, जो नरक के ऊपर खड़े होकर, एक दर्शन देख रहा था, और किसी एक मनुष्य को आग के नीचे जाते हुए देख रहा था, और वह पीड़ा में अपने सिर को उन आग की लपटों के बीच में से ऊपर की ओर खींच रहा था। वह एक चेहरे को देखना चाहता था, तब उस ने घृणा में होकर कहा, जाने दो, और दूसरे मनुष्य पर झपटा। तब जो मनुष्य कलीसिया में था, उस से पूछा कि, वह क्या कर रहा है? उसने क्रोध में आग बबूला होकर कहा, 'मैं' उस प्रचारक को ढूंढ रहा हूँ। जिसने मुझसे झूठ बोला है! जिसने मुझे सच नहीं बताया। मैं जानता हूँ कि, वह भी यहीं कहीं इसी स्थान में है।'''

यीशु ने कहा

लूका 13:24-27

24 उसने उनसे कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। 25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार

बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु हमारे लिये खोल दे, और वह उत्तर दे कि, मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो? 26 तब तुम कहने लगोगे कि, हमने तेरे सामने खाया पीया और तुम ने हमारे बाजारों में उपदेश किया। 27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुमसे कहता हूँ, मैं नहीं जानता तुम कहां से हो, हे कुकर्म्म करने वालों, तुम सब मुझ से दूर हो।

पहली बात जो परमेश्वर ने मुझ से कही, जब उसने मुझे मुक्ति के बारे में सिखाना आरम्भ किया वह यह थी, "बातें ऐसी नहीं हैं, जैसी वो दिखती हैं।" मैं एक ऐसा मनुष्य था, जो सोचता था, कि सब बातें नियंत्रण में है, कि जो बातें मूल रूप से ठीक थी, जब यह कलीसिया में आई। मैं "आत्मा की बातों" को अनदेखा करता रहा, जैसे कि सीधे फाटक में हो रहा है। जो परमेश्वर ने मुझे दिखाया था। मैंने यह लगभग तीन साल तक किया। प्रमुख रूप से, क्योंकि यदि मैं स्वीकार करता कि, जो परमेश्वर मुझे अपनी आत्मा के द्वारा दिखा रहा था, **तो मुझे इस पर काम करना पड़ेगा।** मैं अपने जीवन में परमेश्वर को केवल वहाँ रख कर, जहाँ मैं चाहता हूँ, आगे बढ़ने के योग्य नही हूँगा। इसलिए मैंने यह दर्शन **कलीसियाओं में आपके साथ बाँटा हैं क्योंकि "बातें ऐसी नहीं हैं जैसी वो दिखती हैं।"**

इस पुस्तक में जो मनुष्य बस चला रहा है वह अगुवों को दर्शाता हैं। न केवल पादरीयों को यां प्रचारकों को जो किसी के बचाये जाने की सही सवैधनिक विधि को नहीं समझते। **यह मनुष्य जो अंधकार में है और यीशु से प्रेम करता है।** वह यात्रियों के साथ भज़न गा रहा था।

इस दर्शन में **प्रभु हमें दो सच्चाईओं को दिखा रहा है,** पहला सच यह है कि बाईबल की भविष्यद्वाणीयों के अनुसार कलीसियाओं की शिक्षाओं में समस्या है, दूसरा सच यह है कि सकेत फाटक का रास्ता **बहुत ही सरल** है।

यदि आप चित्र पर देखें, तो यहाँ सीधे फाटक को खोलने के लिए कोई भी दरवाज़ा नहीं है, इसी तरह पवित्र आत्मा ने मुझे दिखाया कि, प्रवेश द्वार में खोलने के लिए कोई दरवाज़ा नहीं था। यह दरवाज़ा जो दर्शाता है कि, किसी भी मनुष्य को अनन्त जीवन की मुक्ति के लिए इसके द्वारा ही गुज़रना चाहिए। मैं फिर से इस दरवाज़े के बारे में लेख में वर्णन करूँगा "मेरे कामों को फिर से "क्यों नहीं" दोहराते?" लेकिन, यह यहाँ ओर भी अधिक विस्तार से वर्णित है।

यह एक प्रवेश द्वार था, जिस की दीवार पत्थर या बजरी की दिखाई देती थी। यह कम से कम 3-4 फीट मोटी थी। जैसा कि, मैंने इस दीवार को खुलते हुए देखा, तो मैंने

जाना कि कोई भी शक्तिशाली विस्फोट उस दरवाज़े, या दीवार में कोई भी बदलाव (गिरा) नहीं ला सकता था। मैं या आप इसे खोलने के लिए कोई भी बदलाव नहीं ला सकते। या वह मार्ग जो परमेश्वर ने अनन्त जीवन की मुक्ति की प्राप्ति के लिए ठहराया है, उसे हम अपने सोच विश्वास के द्वारा बदल नहीं सकते हैं। जो दरवाज़ा मैंने देखा, और सीधा फाटक (प्रतीकात्मक) उस मार्ग को दर्शाता है, जोकि परमेश्वर ने ठहराया है। दोनों 'आत्मा की बातें' से हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि, मार्ग सरल है। ''कार्यों'' को हमारे भाग में शामिल हुए बिना, जब अनन्त मुक्ति आती है। क्योंकि वहाँ दरवाज़ा नहीं है, और न ही खोलने के लिए कोई फाटक है। यदि हम उसे खोलते हैं, तो हमें काम करना पड़ेगा (काम करो)। कार्य का सम्बन्ध जो कुछ शारीरिक है, और कुछ बदलने के लिए आदि, (एक परिभाषा का सुझाव, कि यदि आप दीवार को सारा दिन धकेलतें रहें, उस पर कुछ कार्य किए बिना, तो फिर आपने इस प्रकार से कोई भी काम नहीं किया है।)

मैं आपके ध्यान को इस बात पर ला चुका हूँ कि, सीधे फाटक को खोलने के लिए कोई भी दरवाज़ा नहीं है। क्योंकि जैसा कि, आपने इन लेखों में पढ़ा है कि, जिनका सम्बन्ध मुक्ति के साथ है। तो आप भी समझ सकते हैं कि, क्यों यहाँ सीधे फाटक में दरवाजा नहीं है। क्योंकि आपके जो 'कार्य' हैं, उनके प्रर्दशन द्वारा आप प्रवेश नहीं कर सकते। आप समझ सकते हैं कि, सच्चा अंगीकार कार्य नहीं है, ब्लकि त्यागना और स्वीकार करना है।

इस दर्शन में भी फाटक के दूसरी तरफ एक मनुष्य खड़ा है, जो इन लोगों को कलीसिया बस में से बाहर की ओर धकेल रहा था। मैं आपका ध्यान इस बात की तरफ लाना चाहता हूँ कि, जो यीशु ने लूका 13:24-27 की तुलना में कहा, जो इस दर्शन को प्रकट करता है।

24 उसने उनसे कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे!

जो कलीसिया बस में सवार लोग थे, वे ऊपर की ओर जा रहे थे, (अंदर जाने के इच्छुक थे) **परन्तु वापिस मोड़ दिए गए। यानि कि, बस पर सवार सभी एक अधिकारी की तरफ से वापस मोड़ दिए गए।** (घर का स्वामी)।

25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु हमारे लिये खोल दे, और वह उत्तर दे कि, मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो?

अपने ध्यान में रखिये कि यह दर्शन स्पष्ट रूप से हमें दिखाता है कि, उन "विश्वासीयों" के लिए जो कलीसिया में जाने वाले लोग, और अगुवों, के बारे में, जो कि बाहर निकाल दिए गए। अब देखिये कि, यीशु उन लोगों से क्या कहता है, जो लोग बाहर निकाल दिए गए।

26 तब तुम कहने लगोगे, कि हमने तेरे सामने खाया पीया और तुम ने हमारे बाजारों में उपदेश किया।

जब मैं स्वर्ग में था, तो मैंने एक विश्वासी को नरक में देखा, जिसने प्रभु भोज लिया था। (उसकी उपस्थिति में खाया और पीया) ये बातें समझने के योग्य हैं उसने हमारे बाजारों में सिखाया। क्योंकि कलीसिया को एक चिन्ह (शहर) के रूप में देखा जाता है। यह स्पष्ट है कि, जो लोग 25वीं आयत पर बाहर निकाले गए हैं, वो यह अच्छी तरह से जानते थे कि, यीशु मसीह कौन है। क्योंकि उन्होंने कहा, (प्रभु, प्रभु, हमारे लिए खोल दे) और **उन्होने सोचा कि उन्हें अन्दर जाने दिया जाएगा,** जिस तरह सीधा फाटक जो कि दर्शन को प्रकट करता है, जो लोग कलीसिया बस में भज़न गाते और अच्छा समय व्यतीत कर रहे थे। वह जानते थे कि वे कहा जा रहे थे। इस बात पर ध्यान दीजिए कि, उन्होने दरवाज़े पर खटखटाया, परन्तु दरवाज़े के ऊपर नहीं खटखटाया। वह समझ रहें हैं कि, प्रवेश द्वार में कोई दरवाज़ा नहीं हैं, और न ही फाटक में कोई मार्ग है। यीशु फिर 27वीं आयत में प्रकट करता है कि, क्यों उन्हें अन्दर जाने नहीं दिया गया। कुकर्म्म के कारण। कुकर्म्म का सम्बन्ध नियम तोड़ने से है। नियमानुसार उनको प्रवेश करने के लिए क्या कमी थी! हमें यह मानना चाहिए कि, सीधा फाटक जो है, वह एक कानूनी मार्ग; है। यह सकरा है **परन्तु बहुत ही सरल है।** पवित्र शास्त्र **लूका 13:24-27,** इस दर्शन के द्वारा दिखाए गए, चित्र के अनुसार, एक चित्र बनाता है, जैसे कि आप नीचे दिए गए लेखों को पढ़ते है। तो आप को यह पता लग जाएगा कि, ठीक मार्ग इतना सरल क्यों है। मैं आपको कठिनाई वाला और ठीक मार्ग दिखाता रहूँगा। जैसा कि प्रभु ने मुझे उनके लिए दिखाया है।

मुक्ति का दर्शन

यह मुक्ति के दर्शन के बारे में गवाही है, जो प्रभु ने मुझे दी, और उन सारे घटनाक्रम की जो आस-पास घटित होता है:

यह उन आरम्भ के दिनों की बात है, जब में सेवकाई में बुलाया गया, मैंने प्रभु से अपनी पत्नी को बचाने के लिए अनुरोध किया। जब मैंने पीछे देखा तो, पवित्र आत्मा ने

मुझे झिंझौला। क्योंकि किसी कारण वश मुझे अपनी पत्नी के बचाये जाने पर सन्देह था। मैंने कहा "हे प्रभु, मेरी पत्नी को बचा। क्योंकि मैं नहीं जानता था कि, वह बचाई गई है या नहीं, "हे प्रभु, परन्तु मैं आपसे उसके बचाये जाने के बारे में पूछ रहा हूँ। यदि कोई ऐसा कारण है कि, वह नरक में जाएगी, तो मुझे उसका स्थान लेने दो, कि वह जीवित रह सके!" मैं अपने पूरे हृदय के साथ प्रार्थना कर रहा था। तब मैंने अपने मन में शान्ति को महसूस किया, और मैंने जाना कि सब कुछ ठीक हो रहा था। मैंने जाना कि सब कुछ ठीक हो गया था!

उसी रात मेरी पत्नी और मैं हमारी कलीसिया में प्रभु-भोज के लिए गए। यह बड़े ही अलग प्रकार से किया गया और हम दोनों लिए बहुत ही अर्थपूर्ण था।
अगली सुबह मैंने एक दर्शन देखा। :

मैंने अपनी पत्नी को अपने सामने खड़े हुए देखा और हम एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे। मैंने उससे निम्नलिखित प्रश्नों को पूछा।

"कल रात जब तुमने प्रभु-भोज की रोटी खाई, तो क्या तुमने विश्वास किया कि, यह जीवन की रोटी है ? उसने उत्तर दिया, "हाँ ।"

"जब तुमने दाखरस पीया, तो क्या तुमने विश्वास किया कि यह यीशु का लहू है, और कि वह तुम्हारे लिए मरा?" उसने उत्तर दिया, "हाँ ।"

"जैसे तुमने मेरे सामने अंगीकार किया है, किसी दूसरे मनुष्य, यानि कि, अपने पति के समाने, तुम बचाई गई हो।"

मैंने उसी सुबह दर्शन में उससे पूछे गए प्रश्नों के माध्यम से, उसके साथ अपनी दर्शन की बातों को पूछा और उसने सभी का उत्तर हाँ में दिया। बिल्कुल वैसा ही जैसा प्रभु ने मुझे पर प्रकट किया था, कि ऐसा ही होगा।

यहाँ कुछ सच्चाईयां है जिसे दर्शन प्रकट करता है :

#1) परमेश्वर जानता था कि, मेरी पत्नी ने अपने पूरे हृदय से विश्वास किया है, और इस लिए वह सभी उत्तर जानती थी।

#2) परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि, हमारे विश्वास की घोषणा किसी दूसरे मनुष्य के लिए है, परमेश्वर के लिए नहीं।

#3) परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि, वह बचाई नही गयी थी, जब तक उसने उन पलों

में अपने विश्वास को मेरे समाने, अपने पति के सामने अंगीकार नही किया था, यद्यापि उसने अपने हृदय के साथ विश्वास किया।

#4) परमेश्वर ने उसके अंगीकार को मेरे द्वारा प्रकट करवा कर उसे बचाया।

यह नियम और दर्शन के बाद मैंने जाना कि, मेरी पत्नी उस दर्शन के कारण पूरी तरह से बचाई गई थी। कुछ दिनों के पश्चात मेरी पत्नी मेरी पास आयी और मुझसे कहने लगी, कि उसे वहीं बाईबल चाहिए, जो कि मेरे पास है। वह कहने लगी कि, अब उसको टिंकर खिलौने की तरह लग रहा था। उसने सदा अपने अच्छे समाचारों को आधुनिक मनुष्य के लिए प्रयोग किया था। उसने पहली बार मुझसे कहा, कि यह सिर्फ एक बात थी, जिसे वह समझ सकी। उसका नई बाईबल मांगना उसके आन्तरिक बदलाव का बाहरी चिन्ह था। परमेश्वर ने बाद में मुझसे पुष्टि की, कि वह इस लिए बचाई गयी थी, क्योंकि उसका नाम और उसके कार्य उसकी पुस्तक में से लापता था। आप इसके बारे में यह लेख में पढ़ोगे, **क्या आपका नाम लिखा है।**

परमेश्वर मुझे स्वर्ग में ले गया

जैसा कि आप पढ़ेगें, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि, क्यों इस अनुभव ने मेरे जीवन को बदल दिया। मैं स्वर्ग में ले जाया गया, विशेष तौर पर, क्योंकि मैं मुक्ति के दर्शन के महत्त्व को नहीं समझ पाया था।

स्वर्ग :

प्रभु ने मुझसे नहीं पूछा कि, क्या मैं जाना चाहता हूँ, परन्तु अचानक मैंने अपने आपको स्वर्ग में पाया। यह दृश्य स्वर्ग पर तीसरे दिन मुझ पर खुला। मैं स्वर्ग में घुटनों तक बादलों के बीच में चल फिर कर, तीन दिनों से, खोज कर रहा था। मुझे याद है, जो मैंने देखा कि, स्वर्ग में यहाँ वहाँ ''सभाऐं'' चल रही हैं, जैसे कि मैं चल फिर रहा था। तो मैंने महुसस किया कि, मैंने अपनी पत्नी को वहाँ नहीं देखा, जिसे मैं जानता था कि उसे भी वहाँ होना चाहिए। मैं अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता और अचम्भित हो रहा था, कि जो उसने यहाँ जाने के बारे में सोचा था। एक मनुष्य जो मेरे पास से गुज़र रहा था, मैंने उससे पूछा कि, क्या मैं परमेश्वर को देख सकता हूँ, वह शीघ्र ही आया और बहुत तेजी से मेरी दाहिनी तरफ खड़ा हो गया। मैंने प्रभु से पूछा कि मेरी पत्नी कहाँ है, यह सोचकर कि प्रभु मुझे उसे दिखाने के लिए स्वर्ग में किसी स्थान पर लेकर जाएँगे। परन्तु प्रभु ने उस जगह में

अपना दाहिना हाथ दाएँ से बाएँ की ओर घुमाया, और स्वर्ग की सतह खुल गयी। प्रभु ने झुककर सतह की ओर संकेत किया। तब मैंने अपनी पत्नी को नरक के किनारे के ऊपर खड़े हुए देखा। मेरा मन बहुत ही भर गया, और मैं राते हुए उठा, मैंने सामना करते हुए संकेत किया और प्रभु से कहने लगा, ''जाओ उसे लाओ।''

उसने कहा, ''मेरा वचन क्या कहता है ?''

मैं अपने दिमाग पर जोर डालकर, पवित्रशास्त्र को समझने की कोशिश कर रहा था। चिल्लाते हुए, मैंने जोर से बोला, ''आपका वचन कहता है, कि प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। (प्रेरितों के काम 16:31) हे प्रभु, जाओ उसे लाओ!''

प्रभु ने दूसरी बार कहा ''मेरा वचन क्या कहता है ?''

मैंने कहा, ''मैं नहीं जानता, प्रभु, मैं एक प्रचारक नहीं हूँ।'' मैं फिर अपने दिमाग पर जोर डाल रहा था, ''हे परमेश्वर, आप उसे लेने के लिए क्यों नहीं जाते?'' मैंने जोर के साथ फिर, नरक की ओर संकेत करते हुए बोला, ''रोमियों- हाँ, रोमियों की पत्री में लिखा है, यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा! प्रभु वह विश्वास करती है! 'जाओ उसे लाओ।'' मैंने देखा कि, प्रभु की आँखों से आँसू बह रहे थे। फिर प्रभु ने कहा, ''परन्तु मैंने क्या कहा है।''

हम टखनों तक, आँसूओं के बीच में खड़े हुए थे। वह स्वर्ग से निकल रहे थे, जहाँ से प्रभु इसे अलग कर चुका था। **फिर प्रभु ने कहा,** ''तुम वापिस जाओ और उन्हे बताओ कि यह कैसे होता, यदि तुम और तुम्हारी पत्नी पहले मारे गए होते तो.....''

इस से पहले कि प्रभु ने अपना वाक्य पूरा किया, मैं पृथ्वी पर वापिस आ चुका था। प्रभु जानता था कि, मैं समझ गया हूँ, जिसके बारे में वह मुझसे बात कर रहा थाः पहले .. मैं उस दर्शन के नियम के बारे में, जिसे प्रभु ने मुझे मेरी पत्नी के विषय, उसकी मुक्ति के बारे में बताया था।

प्रभु मुझे शीघ्र ही ले गया :

मत्ती 10:32

32 जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा!

यह एक वाचा की प्रतिज्ञा है और ऐसा कहना प्रकट करता है कि कैसे हम उसकी आज्ञा के द्वारा अनन्त जीवन को प्राप्त करते है।

लूका 6:47-49

47 जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हे मानता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह किसके समान हैं ? 48 वह उस मनुष्य के समान हैं, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी, क्योंकि वह पक्का बना था। 49 परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिसने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।

मेरी पत्नी ने यह कथन मत्ती 10:32 को नहीं सुना था, और न ही उन्होंने जो उसके चारों तरफ थे, जिन्होंने उसको ऐसा करने की अगुवाई की थी, जो यह कहती है। कि उसका घर रेत पर बना था, न कि चट्टान पर जैसा कि यीशु कह रहा था, कि यह होना चाहिए। ''चट्टान'' जिसके बारे में यीशु बात कर रहा है। कि तुम्हे अपना घर स्थिर करने के लिए पृथ्वी पर यह करना आवश्यक होगा और तब तुम स्वर्ग में जाओगे। परमेश्वर ने मत्ती 10:32 में कलीसिया में बुद्धि की कमी होने के कारण यह सब मुझ पर प्रकट किया, कि सचमुच में मेरी पत्नी को मरना और नाश होना था। (घर का सर्वनाश बहुत बड़ा था) **नहीं तो वह नरक में चली गई होती।**

आप का घर वहीं है, जो आप विश्वास करते है, यह वहीं है, जिसे एक विशेष कलीसिया मानती है। यह वहीं है, जिसे कोई एक विश्वास करता है, एक घर वह है, जहाँ आप सुरक्षित और आरामदायक महसूस करते हो। क्या आपका विश्वास सुरक्षित है? मेरी पत्नी का नहीं था, उसके लिए अजनबी या हम में से कोई भी। उसने यह विश्वास किया और वह उस विश्वास के साथ बहुत ही सतुंष्ट थी, जो उसने किया था। यदि वह 1980 में पहले मर गई होती तो, इस समय उसे नरक में होना होता और सब जो यह सोचते है, कि वह स्वर्ग में है **वो गलत होते।** आप प्रतिक्षा नहीं कर सकते और पता नहीं लगा सकते, कि यदि आपका विश्वास सही है। क्योंकि मरने के बाद सुधार करना देरी की बात होती है।

''मेरे पीछे दाहराईये'' काम क्यों नहीं करते?

मैं चाहता हूँ कि, आप मेरे पीछे जोर के साथ दाहरायें **''फरैडस पीकलड फिश फार्म''** ये शब्द कहाँ से आयें हैं? क्या ये आपकी ओर से नहीं आयें? नहीं, वे मेरी ओर से आयें

हैं। आप देखें कि, वो सभी कुछ जो हम कहते है, हमारी ओर से नहीं आता। मेरे पीछे दोहरायें **''मैं विश्वास करता हूँ कि, यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।''** यह शब्द भी ''फरैडस पीकलड फिश फार्म'' की तरह आपके नहीं हैं। हमारी निजी घोषणा और विश्वास का अंगीकार हमारे भीतर (अंदर) से आना चाहिए, न कि किसी ओर के द्वारा।

जब प्रभु मेरे साथ इस विषय के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने मुझे एक दरवाज़ा दिखाया। मैंने दर्शन में जाना कि, यह दरवाज़ा हिलने के योग्य नहीं था। प्रभु ने कहा, ''यह एक अकेला आदमी दरवाज़ा हैं'', मैं दरवाज़े की ओर देखता रहा और उसने फिर मुझसे कहा, ''यह एक अकेला आदमी दरवाज़ा है।'' यह दर्शन जब तक समाप्त नहीं हुआ, तब मैं समझ गया कि, दो मनुष्य एक ही साथ, और एक ही समय पर दरवाज़े के द्वारा अन्दर जाने का प्रयत्न कर रहे थे, और जो कि बहुत ही असंभव था।

यीशु मसीह दरवाज़ा है, और प्रत्येक मनुष्य को बचाये जाने के लिए उसके माध्यम से अन्दर जाने की आवश्यकता है। जब एक मनुष्य शब्दों को दोहराता हुआ, अंगीकार करता है, तो वो शब्द जो वह दोहरा रहा है, वो उसके नहीं हैं, बल्कि उस मनुष्य के है, जो अंगीकार में उसकी अगुवाई कर रहा है। (दो मनुष्य एक ही समय पर दरवाज़े से अन्दर जाने का प्रयत्न कर रहे हैं।) आप किसी दूसरे के अंगीकार के द्वारा बचाये नहीं जा सकते। **केवल <u>आप</u> अपने ही विश्वास से स्थिर रह सकते हैं,** किसी दूसरे के विश्वास के द्वारा नहीं।

प्रेरितों के काम **8:35-37** फिलिप्पुस ने एक खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया और उसे बपतिस्मा देने से पहले विश्वास दिलाया और उससे अंगीकार करवाया। 35 तब फिलिप्पुस ने आपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। 36 मार्ग में चलते चलते, वे किसी जल की जगह पहुँचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? {यहाँ पर जहाँ फिलिप्पुस खोजे से अंगीकार करवाता है!} 37 फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: {यहाँ पर जहाँ खोजे ने अपनी <u>स्वतन्त्र इच्छा से</u> अंगीकार किया!} और <u>उसने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हुँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।</u> यहाँ मेरे पीछे न दोहरायें! फिलिप्पुस सही मार्ग जानता था, और जो लोगों से ऐसा ही अंगीकार करवाता था, जो कि <u>उनका अपना अंगीकार</u> था।

जैसा कि उसने अंतिम बार, कुछ इस तरह से पूछा, ''क्या आप विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा, और परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया?, ''हाँ, और नहीं?'' उन्हे चुनाव करने दो या फिर उन्हे चुनाव करने का मन बनाने दो! जब कोई मनुष्य, ''हाँ, और नहीं ?'' में चुनाव करता है? तो वे इन शब्दों **के मतलबों**

को स्थापित या फिर इन्कार कर रहे होते हैं। {क्या आप विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा, और परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया?} जैसा कि उनका विश्वास था।

"मेरे पीछे दोहरायें काम नहीं करते!" किसी पुस्तक में पढ़ना (दोहराना), या कोई ओर प्रकार का ढंग, आप के अंगीकार को स्थापित नहीं करता, क्योंकि वे मात्र आपके शब्द नहीं हैं। वे लेखक के शब्द है। न ही यीशु मसीह के, और न ही उनके चेलों के, बल्कि प्रत्येक ने कहा "मेरे पीछे दोहराईये" इसलिए यीशु सदा लोगों से अंगीकार करवाते थे। (जैसे कि प्रभु की प्रार्थना ने एक ऐसा उदाहरण दिया, कि मेरी प्रार्थना के पश्चात मत दोहरायें)

प्रार्थना क्यों मुक्ति के लिए अंगीकार का माध्यम नहीं है?

पहले हमें एक प्रमुख, उदाहरण की आवश्यकता है, कि यीशु की वाचा कि प्रतिज्ञाएँ अटल है। मत्ती 16:19, में यीशु पतरस को स्वर्ग के राज्य की कुंजी (चाबी) दे रहा है। दूसरे शब्दों में उदाहरण, कुंजी, क्या है, और कैसे हम इन बातों में स्थिर और/यो स्वर्ग में परमेश्वर को प्रभावित करते है? यीशु ने पतरस से कहा, "मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पुथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" **यह वह उदाहरण है कि, "जो कुछ हम पृथ्वी पर स्थापित कर रहे हैं और जो हमने पृथ्वी पर स्थापित किया है। परमेश्वर स्वर्ग में उस से प्रभावित होता है।" यीशु ने मत्ती 6:14 &15 में कहा,** "इसलिये यदि तुम मनुष्यों के पाप क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हे क्षमा करेगा। 15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" **यहाँ हम बिल्कुल वही उदाहरण देखते है, और हम यह भी देखते हैं कि, जो हम मनुष्यों के साथ मिलकर स्थापित कर रहे हैं! कुरनेलियुस (प्रेरितो के कामः 10 अध्याऐ) में पृथ्वी पर धार्मिकता का अभ्यास किया, और वह मनुष्य का कार्य था। उसके कार्य और जो परमेश्वर का भय उसके अन्दर था। उसने स्वर्ग में परमेश्वर के सामने उसकी यादगिरी को प्रस्तुत किया, स्वय को! क्योंकि उसके भलाई के कामों की वजह से परमेश्वर बहुत जोर से प्रभावित हुआ था। उसने इस बात से परमेश्वर को प्रभावित किया, क्योंकि जो कुछ उसने पृथ्वी पर किया, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। सूची ऐसे ही चलती रहेगी।**

इसलिए हम अपने विश्वास के अंगीकार के अनुसार, उसी उदाहरण पर आते हैं। यीशु ने कहा कि, वह ही केवल एक पिता तक पहुँचने के लिए एक मार्ग है। दूसरे शब्दों में, कि हम केवल प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ही पिता के पास जा सकते है। यीशु ने बिल्कुल उसी उदाहरण के अनुसार प्रतिज्ञा की है, कि कैसे हम स्वर्ग में किसी वस्तु को स्थापित करते है, और इसमें भागीदार होते हैं। यहाँ यीशु की वाचा की प्रतिज्ञा है, ''जो कोई मनुष्य के सामने (घोषणा) मुझे मान (से, पर, विरूद्ध) लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता (घोषणा) के सामने मान (से, पर, विरूद्ध) लूंगा।'' हम देखते हैं कि हम पृथ्वी पर **वहीं उदाहरण** मनुष्यों के साथ स्थापित कर रहे हैं, और कि परमेश्वर स्वर्ग में इसी तरह प्रभावित होता है। इसलिए जब एक मनुष्य अपने विश्वास को किसी दूसरे मनुष्य के सामने पृथ्वी पर स्थापित करता है, और उसी समय यीशु मसीह उसके विश्वास की घोषणा स्वर्ग में कर देते हैं। यह उसके पुत्र के द्वारा परमेश्वर का एक कानूनी ढंग है। जब हम इसे इस प्रकार से करते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ वाचा में आते हैं, और इस बात पर सहमित होते हैं कि, उसने मनुष्य को बचाने के लिए पृथ्वी पर अपने पुत्र को भेजा है।

जब हम **प्रार्थना के माध्यम** से, सीधे तौर पर, परमेश्वर के सामने अपने विश्वास, या अंगीकार करने का प्रयत्न करते हैं, तो हम यीशु की वाचा की प्रतिज्ञा के मार्ग से गुजरने का प्रयत्न कर रहे होते हैं। हम अपने आप से सीधे तौर पर स्वर्ग में अपना विश्वास स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, बजाये इसके कि, प्रभु यीशु हमारे विश्वास को स्थापित करे। हम अपने आप को, कार्यों के द्वारा सीधे तौर पर स्वर्ग में स्थिर नहीं कर सकते हैं। जो हम पृथ्वी पर (हमारा राज्य) स्थिर करते हैं वह स्वर्ग में (परमेश्वर का राज्य) के साथ ही स्थिर हो जाता है!

''मुक्ति की प्रार्थना,'' बहुत से विश्वासियों, और मनुष्यों के विचारों, के द्वारा प्रयोग की जाती है। यह आपको पवित्रशास्त्र में नहीं मिलेगी, न ही वचन में, न ही चेलों के द्वारा, और न ही किसी ओर के द्वारा मिलेगी। एक मात्र स्थान जहाँ आप इसे पाते हैं, वह कई बाईबलों के पृष्ठों के नीचे और पृष्ठों पर वह केवल मनुष्यों के द्वारा दिए गए निर्देष है। पौलुस ने कहा, यदि कोई उसकी शिक्षा के अतिरिक्त कोई ओर प्रकार की शिक्षा को सिखाता है, तो वह गलत है। रोमियो 10:6-13 में पौलुस हमारे बचाये जाने के लिए हमारे विश्वास के कार्यों की प्रक्रिया के बारे में सिखाता है। उदाहरण याद करो!

वह विश्वासहीन न बनो कहते हुए आरम्भ करता है कि, हम मसीह को अपने लिए प्रभावित कर सकें। 6. परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है, वह यो कहती है, कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिए) 7.

या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिए)

तब वह कैसे प्रकट करता है। 8. परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है, यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं। 9. कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन में विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

तब वह हमें इस बात की समझ देता है, कि जो उसने सभी ''क्योंकि'' के साथ कहा है।

10. क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है। उस ने केवल विश्वास के कार्य का अर्थ बताया है, जो कि एक मनुष्य के विश्वास की घोषणा है। विश्वास को धार्मिकता गिना जाता है, परन्तु मुक्ति अंगीकार के द्वारा आती है। प्रभु ने मुझे वह मनुष्य दिखाया, जो नरक में था और वह अपने हृदय से तो विश्वास करता था, परन्तु उसने अंगीकार नहीं किया था क्योंकि उसका विश्वास दूसरे मनुष्य के लिए था!

11. क्योंकि पवित्राशास्त्र यह कहता है, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा। उसने अभी कहा है, कि हम अपने विश्वास की घोषणा से किसी मनुष्य के सामने लज्जित नहीं होगें। परमेश्वर के सामने अपने विश्वास के अंगीकार की घोषणा करने के कारण हमें कोई लज्जा नहीं है। आप परमेश्वर से खुले मैदान में बात कर सकते हैं, जहाँ आपको कोई सुन नहीं सकता। परन्तु अपने किसी सहभागी मित्र के सामने हमारा अंगीकार करना, एक बड़ी चुनौती का कारण हो सकता है।

12. क्योंकि यहूदियों और यूनानियों में कुछ भी भेद नहीं है: इसलिए कि वह सब का प्रभु है, और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उद्धार का कारण है। अभी उसने कहा कि कोई भी राष्ट्रीयता, कोई भी पापी या किसी भी तरह का पाप क्यों न हो, कोई बात नहीं, वह बचाया जा सकता है। वे अपनी तरफ से परमेश्वर के सामने प्रभावित होगें, यदि वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा करेंगे, और यह कि, वे पृथ्वी पर मनुष्यों के सामने उसके पुत्र की घोषणा करेंगे।

यीशु ने लूका 6:47, 48: में कहा :- 47 जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हे बताता हूँ कि वह किसके समान है? 48 वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी, क्योंकि वह पक्का बना था।

मुक्ति के बारे में पौलुस की शिक्षा उस कथन पर अधारित है, जो कि कभी नहीं

बदलेगा, बिना इस बात के कि, मनुष्य क्या विश्वास करता है। ''जो कि मनुष्य के सामने (घोषणा) मुझे मान (से, पर, विरूद्ध) लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता (घोषणा) के सामने मान (से, पर, विरूद्ध) लूंगा।''

वहाँ आप की मुक्ति के अनुसार परमेश्वर के हिस्से की तरफ से कोई न्याय नहीं है। क्योंकि आपका नाम स्वर्ग में या तो लिखा है या नहीं लिखा है। प्रभु यीशु ही वह है, जो आपका नाम स्वर्ग में लिख सकता है। यह आप के कार्यों के द्वारा नहीं, परन्तु दूसरे के सामने आप के अंगीकार के द्वारा आता है। आप अपने अंगीकार में अपनी समझदारी को, जाने दे रहे होते हैं, और यह मानते हैं, क्योंकि मनुष्य अपने आप को नहीं बचा सकता है। इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा एक मार्ग बनाया है। यीशु स्वर्ग में अपने ढंग से, आपके लिए इस सच्चाई को स्थापित करता है!

एक सच्चे अंगीकार में क्या है ?

कई वर्षों पहले प्रभु ने मुझे मेरी पहली पुस्तक लिखने को दी। इस पुस्तक में प्रभु ने मुझे दस बातें दी, जो कि दूसरे मनुष्य के सामने हमारे विश्वास की सच्ची घोषणा है। इस लेख में शब्द **''क्योंकि''** समझ के लिए है। क्योंकि एक मनुष्य का अनन्त जीवन किसी दूसरे मनुष्य के सामने विश्वास के अंगीकार से होता है। और इसके सिवाये कुछ भी नहीं!

नीतिवचन 4:7
बुद्धि श्रेष्ठ है: इसलिये उसकी प्राप्ति के लिए यत्न कर; जो कुछ तू प्राप्त करे, उसे प्राप्त तो कर, परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न घटने न पाए।

यह कितनी अद्भुत बात है कि, जो परमेश्वर कहता है हमे केवल दूसरे मनुष्य के सामने उस विश्वास का अंगीकार करना है। जो पौलुस रोमियों 10 में कहता है कि, हम धार्मिकता पर विश्वास रखते है, और उद्धार की घोषणा करते हैं। यह दिखाता है कि, यह कितना सरल है और यह प्रकट करता है कि, परमेश्वर हम से कितना प्यार करता है।

यदि मैं आप से यह प्रश्न पूछता हूँ कि ''क्या आप विश्वास करते हो कि यीशु मसीह आप के पापों के लिए मरा और परमेश्वर ने उसे मृतको में से जीवित किया?'' और यदि आप अपने हृदय के साथ इस बात पर विश्वास करते हैं और ''हाँ'' के साथ उत्तर देते हैं। तब दस बातें जो कि परमेश्वर ने मुझे नीचे दी है, वे सब ''हाँ'' मैं हैं!

संख्या-1. आप स्वीकार कर रहे हैं कि परमेश्वर कौन है, यीशु कौन है और आप कौन हैं।

आप से स्वीकार करवाया गया है कि, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, क्योंकि हम

सब को मुक्ति की आवश्यकता है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा और हम ने किया।

संख्या-2. आप परमेश्वर में अपने विश्वास को प्रकट कर रहे हैं, कि आप परमेश्वर को नही देख सकते।

आप संसार और मानवता के सामने उसकी प्रर्दशनी कर रहे हैं। जो आपके हृदय में है। आप की घोषणा जो आपके हृदय में है, वो आपके विश्वास के कार्य हैं।

संख्या-3. आप स्वीकार करते हैं कि, कोई कार्य नहीं है, जो आप कर सकते हो; केवल यीशु मसीह का लहू ही पापों को ढांपता है।

अगर आप यह समझते हैं या नहीं, कि आप की घोषणा के द्वारा आप स्वीकार करते हैं, क्योंकि परमेश्वर केवल अपने पुत्र के द्वारा ही, हमें अनन्त जीवन दे सकता है।

संख्या-4. आप अपनी पापमूय दशा को स्वीकार करते हैं।

आप शायद उसे नहीं जानते, परन्तु आप सारी मानवता के पापी होने की दशा को स्वीकार करते हैं।

संख्या-5. आप स्वीकार करते हैं कि सब कुछ जो परमेश्वर ने किया और कहा वह सब सत्य है।

क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि, जो कुछ भी परमेश्वर ने अदन के बाग में कहा वह सब सत्य है? क्या आप यह स्वीकार नहीं करते हैं, कि परमेश्वर ने सदोम को नाश किया? क्या आप स्वीकार नहीं करते कि परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र देश में से छुड़ाया और मूसा के द्वारा समुद्र को दो भाग किया? क्या आप यह स्वीकार नहीं करते, कि परमेश्वर ने सब कुछ अपने पुत्र के द्वारा, और उस के लिए बनाया है? क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि, जो कुछ परमेश्वर ने योना, अब्राहम, आयूब आदि, के बारे में कहा था, और किया भी, वह सब सत्य है। इसलिए आप यह सब बाते समझते है या फिर नहीं समझते?

संख्या-6. आप की अयोग्यता उस घोषणा में है।

आप यह स्वीकार नहीं करते कि, मनुष्य जो पूर्ण रूप से ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता, जिस से कि वह अपने आपको बचा सके।

इसके पहले कि मैं आगे बढ़ूँ, मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि, आपके विश्वास का अंगीकार या घोषणा, कोई कार्य नहीं है, जो हम स्वीकार करते हैं। जो कुछ हमारे पास उसे स्वीकार करते हुए जाने देना है। अर्थात् जब हम अपने विश्वास को पृथ्वी पर किसी दूसरें

मनुष्य के सामने स्थापित करते हैं, तो हम स्वीकार करते हुए- महसूस करते हुए-जाने देते हैं। यह मेरे साथ कई बार घटित हुआ। जब विश्वास की घोषणा किसी से कराई जाती है। कई बार एक दिव्य आराम अनुभव किया जाता है। अभी भी जो मैं जब आपको बताता हूँ कि मैं यह जानता हूँ कि, यीशु मसीह परमेश्वर का इकलौता पुत्र है। तो मैं इन शब्दों के कहने से अद्‌भुत शांति को अनुभव करता हूँ।

संख्या-7. पश्चात्ताप जो उस घोषणा में है।

मुझे याद है कि, जब परमेश्वर मुझे इस विषय के बारे में सिखा रहा था, उसने कहा ,''मेरी वेदी पर आप क्या करने जा रहे हो जो मेरे पुत्र ने नहीं किया?'' मैं आपसे पूछता हूँ कि, आप परमेश्वर की वेदी पर क्या करने जा रहे हो या आप अनन्त मुक्ति के अनुसार परमेश्वर के वेदी पर किसी ओर की अगुवाई करने के लिए क्या करने जा रहे हो, ''जो उसके पुत्र ने नहीं किया?'' यह सब यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए किया और जिस पल हम ''विश्वास और अंगीकार'' से बाहर जाते हैं। जैसे कि पौलुस ने सिखाया था। हम हमारे अपने कार्यों में होते हैं।

मैंने कई लोगों को यह कहते सुना है कि, ''परन्तु आपको बचाये जाने कि लिए पश्चात्ताप करना ज़रूरी है। आपको एक सच्चा पश्चात्ताप करने वाला हृदय चाहिए, केवल अंगीकार ही नहीं।'' हाँ, "पश्चात्ताप" एक मनुष्य के अंगीकार में है, यदि वह सच में विश्वास करे, कि यह क्या है। केवल परमेश्वर जानता है! **पश्चात्ताप का अर्थ है अपने आप को 180 दरजे पर मोड़ लेना,** उन सब बातों से जो आप विश्वास करते हैं या इस समय कर रहे हैं। एक मनुष्य अपने हृदय से 180 दरजे तक मुड़ता है, आविश्वास से इस विश्वास पर कि, यीशु मसीह ही मुक्तिदाता है, और यह उस समय संसार में स्थापित या प्रकट होता है, जब कोई मनुष्य अंगीकार करता है। पश्चात्ताप प्रकट हुआ!

किसी मनुष्य के लिए **यह सम्भव नहीं है** कि, जो **सच्चा विश्वास** करता और बिना हृदय से पश्चात्ताप किए बिना यीशु का अंगीकार करता है। जिस पल कोई सच्चे तौर पर अनुभव करता है कि, यीशु मसीह कौन है, तो वे यह अनुभव करते हैं कि, वे पापी है। वे अपने अन्दर अपने आपको उस जगह पर पाते हैं, जहाँ वे अनुभव करते हैं कि उन्हें सहायता की आवश्यकता है, और यहाँ केवल एक ही है, जो उन्हे बचा सकता है। यदि आप एक विश्वासी है, तो उस समय के बारे में सोचे, कि जब आप ने वास्तव में अनुभव किया था कि, यीशु मसीह कौन है। क्या आप ने यह अनुभव करने के बाद अपने हृदय से पश्चात्ताप नहीं किया? क्या आपने स्वय से नहीं कहा कि, ''परमेश्वर मुझ पापी को, क्षमा कर?'' यह कभी भी, किसी भी समय, किसी भी दिन, कहीं भी और ये धीरे धीरे या फिर एक दम से हुआ होगा।

कुछ लोग कहते हैं कि बदलाव का चिन्ह होना चाहिए, और आप इस चिन्ह को जीवन के बदलाव के लिए रखो। ये लोग केवल कार्यों के द्वारा ही मुक्ति में हैं। यहाँ तक कि हमारी प्रार्थना भी एक प्रयत्न (कार्य) है, और हमारी ओर से किया गया कोई भी प्रयत्न **कार्य का एक** भाग ही है। परमेश्वर यह क्यों हम से जानना चाहता है, ताकि एक सच्चा अंगीकार अपने **पापी होने की दशा** को बताता है, कोई कार्य नही। जैसे कि हम दरवाज़े के हत्थे को छोड़ते है, यह कोई काम नहीं, आप उसे जाने देते है। आप केवल अपनी पकड़ ढीली करते हैं, और तब यह होता है।

हम वाचा की प्रतिज्ञा के माध्यम से बचाये गए है। यीशु ने उन प्रतिज्ञाओं को स्थापित किया जब वह यहाँ पर था, और वे कानूनी ढंग से उसकी मृत्यु के द्वारा स्थापित हुई। **उसने यह किया।** हमारा वेदी पर यह कहना "हे परमेश्वर मुझे क्षमा कर" आत्मा से सम्बन्धित है। हमारा वेदी पर इस बात को कहना एक धार्मिक कार्य है, पर बाईबल कहती है कि हमारे धार्मिक कार्य, परमेश्वर की आँखों के सामने मैले चिथड़ों के समान हैं। जो लोग दूसरों पर विश्वास करने और अंगीकार करने के बिना बदलने के बारे में जोर देते हैं और जो परमेश्वर से कह रहे हैं कि, उसके पुत्र ने क्रूस पर अधूरा काम किया है। उसके पवित्र लहू से बचाये जाने के पश्चात् **न बदलने वाले पाप को ढांप दिया, तब हम बचाये गए!** यीशु मसीह ने सम्पूर्ण कार्य किया, जब यह अनन्त जीवन से मुक्ति की ओर आता है, और हमारे भविष्य का अनन्त जीवन **सम्पूर्ण** रूप से मसीह में है, किसी ओर में नहीं जो हम कर सकते हैं!

अपनी व्याख्या की (संख्या 7) के निष्कर्ष के लिए **केवल एक बदलाव,** जो परमेश्वर "अनन्त जीवन की मुक्ति" के लिए सच्चा और शुद्ध बदलाव चाहता है। वह यह है कि, **पश्चात्ताप पवित्र आत्मा से उत्पन्न होता है!** वह बदलाव जो कि हृदय से होता है, अविश्वास से विश्वास को 180 दरजे तक मौड़ना। **यही पश्चात्ताप है, हमारे अन्दर, जो पवित्र हमारे आत्मा हृदयों में करता है कि, "हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर!" यह पवित्र आत्मा ही है, जो हमारे हृदयों को ताड़ना देता और सत्य को प्रकट करता है। तो हम देखते हैं कि परमेश्वर वास्तव में ऐसा करता है, जब यह "अनन्त जीवन की मुक्ति" तक आता है। यह हमारे हृदयों में तब होता है,** जब हम विश्वास करते है, और यह उन पलों में स्थापित या स्थिर होता है, जब एक मनुष्य अपने विश्वास की घोषणा किसी दूसरे मनुष्य के सामने करता है। (ये सरलता से सिय्योन में स्थापित होता है।)

संख्या-8. आत्मसमर्पण जो उस घोषणा में है।

जब आप अपने विश्वास की घोषणा या प्रदर्शन किसी दूसरे मनुष्य के सामने करते हैं, तो आखिरकार आप उसे जो परमेश्वर ने कहा, और किया है, समर्पित करते हैं।

संख्या-9. उस घोषाणा में सब का प्रकाशन है जो आप अब है और या जो आप भविष्य में होंगे।

जब परमेश्वर ने यीशु मसीह को नरक के गढ़हों में से ऊपर उठाया, तो उसने सारी मानवजाति को अनन्त जीवन के लिए ऊपर उठाया। क्रूस से पहले यह संभव नहीं था, क्योंकि विश्वासयोग्य शहर (दुल्हन) का वर्णन पुराने नियम में था, परन्तु यह पुनरूत्थान के समय में ही संभव हुआ था। क्योंकि अंतिम दिनों में ही पुनरूत्थान संभव होता है। मैं आगे से आगे जा सकता था। यह सब क्रूस में उस समय के कंलक के पलों में हुआ। जब हम अपने विश्वास को किसी दूसरे के सामने प्रकट करते हैं, तो सब स्वीकार करते हैं, कि जो हम अभी है, और हमारी अयोग्यताएँ और असफलताएँ सब स्वीकार करते हैं। यद्यापि हम यह नहीं समझते कि, परमेश्वर की हमारे लिए क्या योजना है, और क्या हम यह सब नहीं समझते कि, हम अनन्तकाल में क्या होंगे?

संख्या-10. साकारत्मक अंदोलन जो उस घोषणा में है।

यह बड़ी अजीब बात दिखती है कि, परमेश्वर ने मुझे यहाँ रखा है। उसने ऐसा किया क्योंकि वह चाहता है कि, हर कोई यह बात समझे और वह जानता है कि, मैं (एक किसान होते हुए) तकनीकी बाते समझता हूँ और बहुत सारे लोग समझते हैं।

रात के दर्शन में मैं एक बहुत विशाल नदी पर जल-धारा के ऊपर की ओर तैर रहा था, मानो की, मैं इसकी शुरूआत की ओर गया। मैंने मशीनी यंत्रो को एक साथ मिलाकर रखा, दंत-चक्र, (गरारीयां) आपस में फँसे हुए, आदि, और चरखीयां और मशीनी शस्त्र आपस में एक दूसरे के साथ बन्धे हुए थे। ये सभी मशीनी यंत्र, दंत-चक्र, आदि कार्यात्मक थे, जिस प्रकार एक भाग चलता, तो दूसरे भागों को भी उनके साथ चलना पड़ता था। ये मशीनी चीजें आसानी से नदी में, एक साथ कार्यात्मक रूप से, नीचे की ओर तैर रही थी, जैसे कि इनको करना चाहिए। इस दर्शन में मैंने जाना कि, मैं जीवन की नदी पर जल धारा के ऊपर की ओर जा रहा था, जोकि परमेश्वर के सिंहासन की ओर से बहती है। इस नदी पर सभी मशीनी यंत्र परमेश्वर के सामने नीचे की ओर बह रहे थे। सभी मशीनी चीजें जो मैंने परमेश्वर के सिंहासन से नीचे कि ओर आते देखी, वे सकारात्मक-अंदोलन थी। यदि आप एक भाग को चलाते है, तो दूसरा भाग भी चलता है, जब एक भाग फँसता है, तो दूसरों को भी चलना चाहिए!

इसलिए मैं क्यों "मुक्ति की प्रक्रिया" के विषय में बात करता हूँ। परमेश्वर मुझे मत्ती 10:32 समझाने के लिए चाहता है। "जो कोई मनुष्य के सामने (घोषणा) मुझे मान (से, पर, विरूद्ध) लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता (घोषणा) के सामने मान (से, पर, विरूद्ध) लूंगा।" यह एक प्रमाण, एक सकारात्मक अंदोलन, एक सत्य है, कि जब हम

किसी मनुष्य के सामने अपने विश्वास की घोषणा करते हैं तो यह यीशु मसीह को स्वर्ग में प्रभावित करता है! पौलुस रोमियों 10:6 में कहता है, कि कैसे हम परमेश्वर को प्रभावित करते है! तब फिर वह यह प्रकट करता है कि, हमारी मुक्ति दो चरणों में है, न कि तीन, या इस से अधिक, वे दो चरणों में है, पहला धार्मिकता से विश्वास तक और दूसरा मुक्ति से अंगीकार तक, जब हम ऐसा करते हैं, तो हम जैसा कि मत्ती 10:32 में लिखा है यीशु को प्रभावित करते है! यह उसकी प्रतिज्ञा है!

परमेश्वर ने मुझे इस तथ्य को दिखाया कि, एक मनुष्य सीढ़ी पर चढ़ रहा था। सीढ़ी पृथ्वी पर थी, और स्वर्ग तक पहुँचती थी, या अनन्त तक। मैंने उस मनुष्य को पृथ्वी को छोड़ने के लिए, पहला कदम रखते हुए देखा। जो वह अपने दाहिने पाँव को सीढ़ी के पहले डण्डे पर रखते हुए कर रहा था। यह विश्वास का पहला कदम है। दाहिनें का मतलब आत्मिक और बाएँ का मतलब शारीरिक है। इसलिए यह ठीक बैठता है, क्योंकि विश्वास का होना एक आत्मिक बात है। तो ऐसा ही मैंने एक मनुष्य को देखा, जिसका पृथ्वी को छोड़ने का लक्ष्य सफल नहीं हुआ। वह अभी तक पृथ्वी पर ही था! मैंने फिर उसे अपने दाहिनें पाँव की बजाये, उसके बाएँ पाँव को बिल्कुल सीढी के, उसी डण्डे पर रखते हुए देखा था। यह स्पष्ट है कि, बाएँ पाँव को उठाना, उस मनुष्य की शारीरिक घोषणा थी। और उस मनुष्य ने सम्पूर्ण तौर पर पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग में जाना था। मैंने देखा कि इस पृथ्वी को छोड़ने के लिए शारीरिक और आत्मिक दोनों के साथ मिलकर चलना पड़ता है। यह बिल्कुल उसी तरह है, जैसा कि (याकूब 2:17-20) में लिखा है। कि विश्वास (कार्य) के बिना शारीरिक कार्य मृत है।

सन् 1980 में पवित्र आत्मा मुझ से, परमेश्वर के व्यक्तित्व के बारे में बोला, तब मुझे यह समझने के योग्य होना था कि, परमेश्वर ने ही यह सब कुछ किया है। तब पवित्र आत्मा ने कहा.., "प्रभु तुम्हारा परमेश्वर परस्पर समझौतों (सहमति) का परमेश्वर नहीं है, परन्तु "वाचाओं का परमेश्वर" है। यह उस सत्य के लिए मेरा परिचय था कि, हम वाचा की प्रतिज्ञा के द्वारा बचाये गए हैं, और वह मनुष्य अपने अन्दर उस बात को नहीं रखता था कि, कैसे वाचा को स्थापित किया जाए, या इससे कैसे प्रवेश किया जाए, या कैसे इसमें शामिल होना चाहिए।

यदि मैं आप के साथ सहमत हो जाऊँ कि, जो कुछ मेरा है, वह सब कुछ आप के लिए है, और जो कुछ आप का है, वह सब कुछ मेरे लिए उपलब्ध है। तब यह सब परस्पर सहमति का सौदा होगा। हम अपना जीवन एक दूसरे को देने के लिए सहमत हो सकते हैं, आदि, और इससे यह समझो, कि जो एक परस्पर (साँझा) समझौता है, वो दो तरफ से है, और वे अतः टूट सकता है।

शुरूआत के दिनों में, यदि एक परिवार के मुखिया को दूसरे परिवार के मुखिया से जुड़ना होता था, तो **हमे वाचा के सिवाये किसी और बात पर सहमत नहीं होना होता था,** हमने यह पहले ही समझा है कि, वाचा का क्या अर्थ है: हमें प्रत्येक के लिए और प्रत्येक परिवारों के लिए मरना होगा! यदि हम में से कोई एक मरता है, तो दूसरे मनुष्य को यह काम समाप्त करना होगा, जो उसने शुरू किया, और उसे भी यह काम करना पड़ेगा। जो कला मेरे पास है, और आप के पास नही, आप के लिए उपलब्ध है, और जो कला सिर्फ मेरे लिए उपलब्ध है, किसी आभाव के कारण नहीं, **परन्तु आवश्यकता के कारण** है। यह भी स्पष्ट करता है कि, कोई भी यह नहीं जानता, कि भविष्य में क्या होने जा रहा है। वह वाचा न टूटने वाली थी, चाहें दोनो समुदाय चाहते भी थे।

परमेश्वर के साथ अपनी स्थिति को देखने के लिए, एक नवजात बच्चे के माता-पिता की ओर ध्यान दें। और माता-पिता की उस बच्चे के साथ यह वाचा है, कि वे उसकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे, साधारण तौर पर कि, वे उसके माता-पिता हैं। इस वाचा के नियम माता-पिता के द्वारा बाँधे जाते हैं, क्योंकि बच्चा नहीं जानता कि, उसकी क्या आवश्यकता है। वह कुछ नहीं जानता और उसे पूर्ण रूप से अपने माता-पिता पर निर्भर रहना पड़ता है, केवल उसकी स्थिति के कारण (न कि समझ के कारण) माता-पिता अपने बच्चे को प्रोत्साहित करते हैं, और प्रेम और समझ से उसका पालन पोषण करते हैं। कि बच्चा बड़ा होकर अपने अपने जीवन में उचित निर्णय लेगा; बच्चे की गतिविधियां उस की अपनी इच्छा पर निर्भर करती है।

उसका आचरण, जो परमेश्वर की वाचा के व्यक्तित्व का एक भाग है! जब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया, तो वह पहले ही से मनुष्य के साथ वाचा में था। जो कि ऊपर दिया गया है। परमेश्वर ने अदन के बाग में (वाचा की सन्तान) के लिए कुछ नियम दिए। परन्तु मनुष्य नियमों को तोड़ने के द्वारा पापी बना, और उस अनन्त जीवन में रहने के लिए, जो परमेश्वर ने उसके लिए तैयार किया था, अयोग्य हो गया। क्योंकि परमेश्वर वाचाओं का परमेश्वर है, उसने एक आवश्यकता देखी, उसने मनुष्य को अदन के बाग में से बाहर निकाला और मनुष्य के साथ एक नई वाचा बनाई, क्योंकि परिस्थिति बदल चुकी थी। ये वाचायें तेजी से आगे बढ़ी जैसे कि, वे उन पर लागू करने के लिए कानूनी तौर पर बहुत ही आसान थी, और अंतिम वाचा एक पवित्र और निर्दोष पात्र के द्वारा स्थापित होनी थी। क्योंकि परमेश्वर पवित्र निर्दोष है, मनुष्य की निर्बालता के कारण परमेश्वर को संसार के पाप अपने ऊपर लेने पड़े, क्योंकि मनुष्य गैर कानूनी पात्र जो ऐसा नहीं कर सकता था। वाचा!, यह एक वाचा का वह भाग है। जहाँ एक मनुष्य दूसरे मनूष्य को आगे लाने के लिए, **आवश्यकता के अनुसार** आगे बढ़ने की योग्यता रखता और जो

इस योग्यता को नहीं रखता है। यह सब परमेश्वर की वाचा और प्रेम के कारण है, जो वह सब मनुष्यों के साथ करता है। वह वाचाओं का परमेश्वर है!

कृपया याद रखें कि, परमेश्वर मनुष्यों की लगाई गई शक्ति के परिणाम से अपने सभी नियमों को नहीं बनाता है। परमेश्वर ही एक वह है, जो जानता था कि, स्वर्ग के न्यायालयों में खड़े होने के लिए, कानूनी तौर पर क्या प्रकट होना था। जब यह मनुष्यों की मुक्ति, विनाश या मृत्यु से जोकि, अदन के बाग में हुई बात आती है। तब मनुष्य होने के नाते हम इस बात की सच्चाई को देखने के योग्य नहीं हो सकते कि, अदन के बाग में क्या हुआ था। **क्योंकि हम इसके परिणाम से धंधला सा देखते है, कि-क्या-हुआ-था- अदन के बाग में!** पवित्र आत्मा हमें इस बात के लिए सूचित करता है।

यह मुझे उस स्थान पर लाता है, जो पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा ''आप शायद सही तरह से यीशु मसीह की शिक्षाओं की **नहीं समझ सकते** कि, अदन के बाग में क्या हुआ था'' ''शायद आप नहीं समझ सकते'' मैंने एक बात सीखी है जोकि, अदन के बाग में हुई, वह बुनियादी ''वाचा!'' थी। उसके व्यक्तित्व में शामिल होने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो।

एक और बात जो, पवित्र आत्मा ने मुझ से परमेश्वर के व्यक्तित्व के बारे में कही, जो एक सच्चे अंगीकार के बारे में हमारी समझ में योगदान करती थी।,''प्रभु तुम्हारा परमेश्वर आलोचना करने वाला परमेश्वर नही, बल्कि **सम्पूर्ण** सत्य का परमेश्वर है।'' यह शब्द स्पष्ट रूप से ''सम्पूर्ण'' पर जोर देता है। हमें इस बात को समझना चाहिए, कि परमेश्वर ही केवल सम्पूर्ण है, **परमेश्वर की सम्पूर्ण पवित्रताई जोकि मनुष्य की समझ से बिल्कुल परे है।** वह सम्पूर्ण, सच्चा, दया, प्रेम और अनुग्रह का परमेश्वर है, जो कुछ वह करता है, उस मे धार्मिकता, पवित्रता और सम्पूर्णता शामिल है। क्योंकि परमेश्वर अदन के बाग में सम्पूर्ण तौर पर पवित्र था। इसलिए मनुष्य को उसके छुटकारे के लिए, और स्वर्ग के न्यायलयों में खड़े होने के लिए, सम्पूर्ण पवित्रताई और ''निर्दोषता'' और समर्पण, और ढापने की आवश्यकता है।

आप किसी अशुद्ध बातों के साथ अपने आप को शुद्ध नहीं कर सकते। क्योंकि जो कुछ अदन के बाग में मनुष्य के साथ हुआ, और यह संभव नहीं था कि, मनुष्य के लहू के द्वारा, या किसी और बात (कार्य) के द्वारा, या पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा प्रस्तुत किया जाए, जैसे कि, पाप सब में प्रवेश हुआ। और जो प्रार्थना में भी शामिल हुआ! क्योंकि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को भी इस्तेमाल नहीं कर सका। क्योंकि वे भी अपवित्र थी। **इसलिए परमेश्वर क्यों वाचा को इस्तेमाल करता है!** परमेश्वर जानता था कि, एक सम्पूर्ण सिद्ध बात और पवित्रता केवल उसके पुत्र में थी। और वह पवित्रताई भस्म करने वाली आग

बनती है, जब अपवित्रताईयाँ अधीन हुई।

जब मैंने पिता परमेश्वर की आवाज को, सुना बिल्कुल वैसी ही आवाज जो मूसा ने सुनी, और बिल्कुल उसी तरह की आवाज जोकि, इस्राएल की संतान ने पहाड़ पर सुनी थी। मैंने सीखा कि, परमेश्वर भस्म करने वाली आग है। ताकि आप कैसे उस दिन को देख सकते हैं, उस पहाड़ को जहाँ परमेश्वर आग में से होकर बोला था। (देखो रॉन वायट पुरातत्व खोजा) इसलिए मैं कहता हूँ कि, यदि हम परमेश्वर की आवाज को प्रतक्ष रूप से सुनेगें तो, हम अपनी अपवित्रताई के कारण मर जाएँगे। सम्पर्क

इस बात को साथ लाते हए, हम देख सकते है कि, परमेश्वर की सम्पूर्ण सिद्धता के कारण हमारी अपनी अनन्त जीवन की मुक्ति केवल परमेश्वर पर अधारित है। और **यह न तो हमारे किसी प्रयासों से या न हमारी किसी योग्यता से है।** परमेश्वर कहता है कि, मुक्ति केवल उसके पुत्र में और उसके द्वारा ही है। और अपने किसी कार्य के द्वारा नहीं है। **वह गलत नहीं है!** परमेश्वर वाचाओं का परमेश्वर है, और उसके साथ वाचा में शामिल होने के लिए हमें केवल यह करना है, कि हम अपनी योग्यतायों को छोड़ दें, और परमेश्वर के साथ सहमत हो यह स्वीकार करते हुए कि, वह सही है। क्योंकि ''उसने हमारे लिए एक मुक्तिदाता भेजा जिसकी हमें आवश्यकता थी।'' हम वाचा की प्रतिज्ञा के अनुसार यह करते हैं। और किसी दूसरे मनुष्य की घोषणा के लिए, हम कैसे यह ''केवल, विश्वास के द्वारा'' प्रकट करते हैं, आपका अंगीकार किसी दूसरे मनुष्य के लिए हैः (क) क्योंकि मनुष्य ने मनुष्य के विरूद्ध अदन के बाग में पाप किया, यह परमेश्वर का न्याय धर्म प्रकट करता है, वह केवल परमेश्वर ही है। (ख) यीशु ने कहा कि, जो कुछ हम पृथ्वी पर बान्धे या खोलें, वह स्वर्ग में बन्धेगा या खुलेगा। यह प्रभु की प्रार्थना के अनुकूल है। ''हे पिता, हमे क्षमा कर जैसे कि, हम दूसरों को क्षमा करते है।'' यह उदाहरण पृथ्वी और स्वर्ग दोनों में स्थिर है। इस बात से यह प्रकट होता है कि, प्रभु ऐसा क्यो कहता है, कि ''अपने दोषों को एक दूसरे के सामने अंगीकार करो। यह केवल परमेश्वर का उदाहरण है। और ''यह वाचा भी है!''

क्योंकि जो कुछ भी अदन के बाग में हुआ, हमारे लिए असंभव है कि, पापी मनुष्य होते हुए, हम कुछ प्रस्तुत करें। (प्रार्थनाएँ, हमारे जीवनो में बदलाव, बपतिस्में) जो कि, हमें अनन्त जीवन में जाने के लिए, आयोग्य होंग, क्योंकि पवित्रताई केवल परमेश्वर की है। **हमारे किसी भी तरह के कार्य के द्वारा नहीं,** इसलिए कलीसियाऐं क्यों कहती हैं कि, कई लोग नरक में जा रहे हैं, साधारणीय क्योंकि उन्होने मुक्ति के बाद पाप किया और अपनी नौका को खो दिया, क्योंकि वे सम्पूर्ण अनूग्रह में नहीं चल रहे हैं, और सही में **दोष लगाने का पाप** कर रहे हैं। इस चित्र में देखें ''दया का सही पक्ष'' सम्पर्क के लेख में, हम केवल

वाचा की प्रतिज्ञा से बचायें गए हैं। हम सभी परमेश्वर के साथ सहमत होकर और प्रभु की वाचा की प्रतिज्ञा के द्वारा प्रवेश कर सकते है:- यदि तुम मनुष्यों के सामने (यीशु) मुझे मान लोगें, तो मैं भी पिता के सामने तुम्हें मान लूंगा। यह केवल यीशु के द्वारा है! **यह वाचा है!**

इफिसियों 2:8,9

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि, कोई घमण्ड करे।''

साधारण तौर पर बाईबल हमें बहुत सी बातों में न लटकने के लिए कहती है। लेकिन यहाँ एक बात जो बाईबल हमें बताती है वह यह है कि हमें **अपने अंगीकार** में अटकना है! ''अनन्त जीवन की मुक्ति'' यीशु मसीह ही में विराजमान है, और यह दूसरे मनुष्य के सामने सच्चे विश्वास की घोषणा से प्रकट होता है!

कुछ तो आदर के लिए, और कुछ अनादर के लिए।
बचाये गए और नही बचाये गए

एक प्रचारक ने मुझे बताया कि एक कलीसिया के पादरी ने उसे यह बताया है कि, उसने व्यभिचार किया है। उसने अपनी मुक्ति को खो दिया है, और वह नरक की ओर जा रहा है। पहले मैं यह बात बता दूँ कि, मैं सिखाता नहीं हूँ ''एक बार बचोगे, तो हमेशा बचोगे'' क्योंकि आप अपनी मुक्ति को खो सकते हो, परन्तु सारी कलीसियाओं में ऐसा नहीं सिखाया जाता है। मैं एक उदाहरण देता हूँ :-

प्रभु ने मुझे एक छोटी सी कलीसिया में बोलने के लिए भेजा था। मैं मुक्ति की प्रक्रिया के बारे में बोलना चाहता था, परन्तु पवित्र आत्मा ने, मुझे पहले कुछ प्रश्नों को पूछने के लिए कहा, और मैं उन के उत्तरों के द्वारा आश्चर्य चकित हो गया।

मैं मंच पर खड़ा हुआ और पूछा ''यदि कोई मनुष्य उन दरवाजों से अंदर आए, और जो कुछ आप चाहते है, मुक्ति के लिए करे, और वह करता है। वेदी पर तो, क्या वह बचाया जाएगा?''

उन्होने संकेत करते कहा, ''हाँ''

मैंने फिर पूछा, ''यदि यह मनुष्य अगले सप्ताह तक कलीसिया में न आए, तो क्या

वह अभी भी बचेगा?''

उन्होंने कहा, ''हाँ''

मैंने पूछा, ''यदि वह पूरे एक महीने तक कलीसिया में न आए तो ''क्या वह बचेगा?''

उन्होंने संकेत करते हुए कहा, ''हाँ'' परन्तु हिचकिचाहट के साथ।

तब मैंने पूछा, ''यदि यह मनुष्य तीन से छेः महीने तक कलीसिया में न आए?''

उन्होंने कहा, ''नहीं''

मैंने पूछा, ''वह नहीं बचाया गया, क्योंकि वह कलीसिया में वापिस नहीं आया?'' उन्होने ने उत्तर दिया कि, वह इसलिए नहीं बचेगा, क्योंकि वह परमेश्वर के साथ नहीं चला था।

मैंने अपने आप को ऐसे लोगों के बीच में खड़ा हुआ पाया, जो आत्मा की मुक्ति को, शारीरिक मुक्ति के अलग नहीं कर पाए थे। **ये वे लोग थे, जिन्होने कार्यों के द्वारा नरक से मुक्ति की ओर विश्वास किया था।**

बाईबल कहती है ,

इफिसियों 2:8

8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान हैः 9 और न कार्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

यहाँ हम देखते हैं कि, यीशु मसीह के राज्य में और उसके घर में कौन है।

मत्ती 5:19

इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलायेगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हे सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

पवित्रशास्त्र में हम ये श्रेष्ठता देखते हैं कि, यदि कोई प्रभु की आज्ञाओं की पालना नही करता, उसकी इच्छा, वे स्वर्ग के राज्य से बाहर नहीं निकाले जाते, परन्तु उन्हे ''स्वर्ग के राज्य में छोटा'' कहकर बुलाया गया है। ऐसा क्यो? क्योंकि यीशु मसीह का लहू जो आज्ञा-उल्लंघन का पाप ढांप देता है। जब मुक्ति से नरक की बात आती है।

बरतन

2 तीमुथियुस 2:19-21
19 तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे। 20 बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन ही होते हैं, कोई-कोई आदर, और कोई-कोई अनादर के लिए। 21 यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा, और स्वामी के काम आएगा, और हरे भले काम के लिए तैयार होगा।

यहाँ हम जो आदर के बरतनों और जो अनादर के बरतनों को देखते हैं, जो कि प्रभु के घर में है। वचन 19 कहता है कि, जो मनुष्य यीशु का नाम लेता, वो बचाया गया है। तब उन्हे परमेश्वर की व्यवस्था के नियमों को न तोड़ने का निर्देष दिया गया है (आज्ञाकारी बनो)। परन्तु वे प्रभु के घर से निकाले नहीं जाते, यदि वे व्यवस्था के नियमों को न तोड़ते। वे प्रभु के लिए अनादर के बरतन बने, परन्तु वे सब अभी तक उसी घर में (स्वर्ग) हैं। क्या यह परमेश्वर की व्यवस्था के नियमों को तोड़ने की अनुमति है? **नहीं!** पवित्रशास्त्र बताता है कि, परमेश्वर ने उसके उपयोग के लिए, हमें आदर के बरतन होने के लिए बुलाया है। पौलुस ने कहा हमें मसीह होने के नाते, हमें व्यवस्था को स्थापित करना है। (परमेश्वर की व्यवस्था) रोमियों 3:31 में।

परमेश्वर हमें अपने सामने सीधाई से चलने के लिए बुलाता है, परन्तु पाप करने के द्वारा हमारी अनन्त मुक्ति सदा के लिए, हम से अलग होने का कारण नहीं होती है। बाईबल स्पष्ट रूप से बताती है कि, **हम सब पाप करते और थोड़े समय के लिए गिरते हैं।** वह सब आगे आए कि, जिन्होनें बचाये जाने के बाद कभी भी पाप नहीं किया। आप पाप के द्वारा अपनी अनन्त प्रतिज्ञा को नहीं खोते हो। उदाहरण कि लिए , कुरिन्थियों 5 अध्याये में। पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया में मनुष्य के पाप करने का बयान कर रहा था, वचन 5 में पौलुस उन्हें सूचित करता है कि, **"शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन मे उद्धार पाए।"** उस मनुष्य ने अपनी मुक्ति को नहीं खोया था; परन्तु उसने अपने शरीर के साथ अपनी दौड़ को खो दिया था।

आप देखते है कि, उसकी आत्मा ने नये सिरे से जन्म लिए था। परन्तु उसके प्राण ने नहीं, उस ने अपनी प्राणों की मुक्ति और शारीरिक राज्य में काम नहीं किया, पौलुस कह रहा था, ''उसे जाने दो कि इससे पहले कि, वह आपको और दूसरों को नाश करे, शैतान

को उसे रखने दो, इससे पहले कि वो बाते उसे नियिन्त्रत करे, और उस से यीशु मसीह को इन्कार करवाये।"

यीशु के लहू ने क्रूस पर दोनो तरफ से हमारे पाप को ढांपा है, **उन पलों में जब हम दोनो तरफ से बचाये गए, यदि आप कहते हैं कि, प्रभु यीशु का लहू किसी मनुष्य के बचाये जाने के बाद उसके पापों को नहीं ढांपता, तो आप यह कह रहे हैं कि, यीशु मसीह ने परमेश्वर की वेदी पर पाप के ढांपने का कार्य अधूरा किया है।**

परमेश्वर ने लोगों को हमेशा के लिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करने कि लिए बुलाया है। क्योंकि वह जानता है कि, जब कोई मनुष्य पाप करता है तो, वे परिस्थितियाँ मृत्यू को पैदा करती हैं। यीशु हम से बहुत प्रेम करता है, और वह नहीं चाहता कि, हमारे साथ ऐसा हो। इसलिए हम फिर से उस प्रचारक के बारे में बात कर रहे हैं। जिसने मुझ से पूछा था कि, यदि वह मर जाए, तो नरक मे जाएगा। मैंने उसे बताया, "कदापि नही!" वह उन पलों मे अनादर का बरतन बना, जब उसने व्यभिचार किया, परन्तु वह अब प्रभु के घर में है।

हमें मसीह के बारे में क्या अंगीकार करना चाहिए?

इस सेवकाई से पूछो, कि इस प्रकार के अंगीकार के बारे में क्या है ?

"हाँ, मैं विश्वास करता हूँ कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और मै विश्वास करता हूँ कि, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया, परन्तु मैं यह विश्वास नही करता कि, उस की मृत्यु ने हमारे पापों का मोल चुकाया है मैं सोचता हूँ कि, (हम सभी) मैं अपने पापों के न्याय के लिए खड़ा हूँगा।"

पौलुस रोमियों 10:9 में कहता है कि, "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि, परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। पौलुस यहाँ सिखाता है कि, हमें अपने 'अंगीकार में यह स्थापित करने की अवश्यकता है कि, यीशु मसीह कौन "है" हमारे अंगीकार/ घोषणा में दूसरे मनुष्य के लिए और यह कहते हुए, अपने हृदय में यह विश्वास करना है कि, परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया है। यीशु मसीह की घोषणा के बिना, इस विश्वास को, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया असंभव "है।" मैं यहाँ इस बात पर जोर दे रहा हूँ कि, इन बातों/ यां सिद्धांतों मे मत उलझे कि, हम कुछ विशेष शब्दों को दोहरा

कर ही अंगीकार करें।, (मैं विश्वास करता हूँ कि, परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित किया है।) कृपया समझने की कोशिश करें, कि एक मनुष्य यह स्थापित कर सकता है कि यीशु मसीह कौन ''है'' और ये शब्द नहीं भी कहता। परन्तु वे तब तक सही तरीके से यह अंगीकार या घोषणा नहीं कर सकते, जब तक वे विश्वास न करें कि, परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित किया है।

मैं अपनी वैबसाइट पर लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ कि, वे आगे बढ़े और पूछे कि यदि दूसरा मनुष्य विश्वास करता है कि, परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित किया है। यह इस से स्थापित या प्रकट होता है कि, उस मनुष्य के दिमाग और मन में बिल्कुल सही भावना है कि, यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और सारे संसार का मुक्तिदाता है। **हमें सारे के सारे व्यकांश समझने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर का धन्यवाद हो!**

अब मुझे यह लगता है कि, उस मनुष्य ने अपने विशेष सिद्धांत को विश्वास के किसी कारण से अपने अंगीकार में शामिल किया है। (हो सकता है कि आप इस कारण को जानते हो।), यह मनुष्य विश्वास नहीं करता है कि, यीशु मसीह ने हमारे पापों को क्रूस पर उठा लिया। यह एक झूठा विश्वास है, जो उसने यीशु पर किया और मेरी समझ के अनुसार यह झूठा विश्वास नहीं है जो उसने किया।

उदाहरण के तौर पर, एक दूसरे विश्वास की गलत धारणा को देखे जिसे यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए नियम बनाया, इस बात पर विश्वास कीजिए कि, यीशु चंगाई नहीं देता। यहाँ पर बहुत सारे विश्वासी हैं जो, इस बात पर विश्वास नहीं करते कि, यीशु चंगा करता है। परन्तु मैं सच में यह जानता हूँ कि, यदि वो विश्वास करते हैं कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है और यह कि, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया है (इस बात को स्थापित करते हुए कि, यीशु संसार का मुक्तिदाता है।) वे बचाये गए है। वे साधारण तौर पर झूठे विश्वास को रखते हैं ''कि वह चंगा करने वाला नहीं है।'' यद्यापि यीशु ने क्रूस पर उनके लिए चंगाई को दे दिया है। मुझे आशा है कि आप यहाँ आपसी सम्बन्ध को देखते है।

आप और मैं विश्वास नहीं करते, या वास्तव में हर बात को नहीं समझते कि, जिन बातों को क्रूस पर यीशु ने हमारे लिए किया। उदाहरण के तौर पर, यहाँ ''बुद्धि की कमी'' के लिए (मेरे शब्दों में) मन्दिर में जो बलिदान था। वह जो मेरे विश्वास करने में मेरी अगुवाई करता है कि, यह एक पाप है। यीशु का लहू ही जो इस पाप को ढांपता है (बुद्धि की कमी), जो इस स्थान पर उस मनुष्य की बुद्धि की कमी को ढांपता है। आप पूछ सकते हैं ''फिर क्यों यह बुद्धि की कमी को नहीं ढांपता कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" परमेश्वर ने उस मनुष्य को उसकी स्वतन्त्र इच्छा से स्वीकार करने के लिए

ठहराया है, उसके पुत्र के लिए कि **वह कौन है,** और दूसरे मनुष्य के लिए, इस (सभी पाप) सच्चाई का अंगीकार करना, उस पाप को ढांपने के लिए है जो कि, परमेश्वर के साथ उसकी वाचा के समझौते में आने के लिए है।

बाईबल कहती है कि, परमेश्वर पर विश्वास रखना है कि वह (मौजूद) है, इसका यह मतलब नहीं है कि, हमें सब कुछ समझना है कि वह ''है'' और सब कुछ जो उसने किया है। सिर्फ यह कि, वह मौजूद है। यदि आप विश्वास करते हैं कि यीशु ''है'' और जीवित है और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है, तब आप विश्वास करते हैं कि, वह मौजूद है। मैं यह विश्वास करता हूँ कि, यह विश्वास करने पर लागू होता है कि, यीशु कौन ''है'' (प्रभु यीशु का अंगीकार) पौलुस की शिक्षाओं में कि मुक्ति कैसे मिलती है, परन्तु उसके बारे में हर बात को न समझते हुए और सब कुछ जिसे उसने हमारे लिए किया है। कोई भी यह सब नहीं जानता! सच्चे अंगीकार की कुंजी, जैसा कि मैं इसे देखता हूँ, यह स्थापित करना है कि यीशु संसार का मुक्तिदाता और परमेश्वर का पुत्र है।

आइये, हम इसे चिन्ह के रूप में देखें, उस दर्शन को जो मुझे वैबसाइट पर परमेश्वर ने मुझे मुक्ति के बारे में दिया है। मैंने अपनी पत्नी से पूछा कि, यदि वह विश्वास करती है, कि यीशु ''जीवन की रोटी?'' था? तो क्या इसका एक मात्र मतलब यह नहीं कि, ''संसार का मुक्तिदाता?'' तब उसने मसीह के लहू की बात की, जोकि एक वाचा को प्रस्तुत करती है, जो उसने स्थापित की, यह सच है कि उसका धार्मिक लहू पाप को ढांपता है। यह संकेत करता है कि, वह ''संसार का मुक्तिदाता'' है। और प्रश्न ''... और कि,वह आप के लिए मरा,'' और अति निश्चित रूप से संकेत करता है ''संसार का मुक्तिदाता!''

यह सब कहने के पश्चात मैं व्यक्तिगत रूप में विश्वास करता हूँ कि, यह मनुष्य अपने अंगीकार के द्वारा बचाया गया है। क्योंकि यह संकेत करता है कि, वे विश्वास करते हैं कि वह ''संसार का मुक्तिदाता'' है। चाहे यह मनुष्य सब कुछ नहीं समझता जो उसने हमारे लिए किया है।

कुछ लोग विश्वास करते और कहते हैं कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु यह विश्वास करते हैं कि, वह केवल एक भविष्यवक्ता है। यदि आप अपने आप को उस परिस्थिति में पाते हैं, जहाँ आप शायद यह सोचते हैं कि, जिस मनुष्य से आपने पूछा और हो सकता है कि, वह विश्वास नहीं करता कि यीशु वास्तव में कौन है, तो उन्हे यह पूछे, **''क्या आप विश्वास करते हैं कि, यीशु परमेश्वर था जो शरीर में प्रकट हुआ?''**

1 तीमथियस 3:16

और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में हुआ,

आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्य जातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।

1 यहून्ना 4:2,3
परमेश्वर का आत्मा तुम इस रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर मे होकर आया है। वह परमेश्वर की ओर से है। और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है।: और अब भी जगत में है।

यह मामले को हल करता है!

जब कोई परमेश्वर को अपने हृदय में आने को कहता है, तो वह उसके बारे में कैसे प्रभावित होता है?

मैंने देखा और अनुभव किया कि परमेश्वर प्रभावित होता है, जब कोई उसे अपने हृदय में आने को कहता है। परमेश्वर बढ़ता है ,क्योंकि जो दरवाज़ा खुला है। मैं ऐसा सोचता था कि, ''परमेश्वर जानता है, मैं कौन हूँ, उसने मेरी प्रार्थनाओं का जवाब दिया, मैंने उसे महसूस किया, इसलिए कि मैं सही हूँ!'' मैंने यह पाया है कि, यह सत्य नहीं है। लोग ये अनुभवों में प्रेम को महसूस करते हैं, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। परमेश्वर का प्रभावित होना और अनुभवों का यह मतलब नहीं होता कि, आप बचाये गए हो। मैंने अनुभव किया है कि, परमेश्वर को मुझ से बात करते हुए, मेरे बचाये जाने से **पहले जब मेरी आत्मा का नये सिरे से जन्म हुआ था!** मत्ती 7:21-23, यीशु ने कहा, जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमे से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। 22 उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेगे; हे प्रभु, हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए ? 23 तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि, मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ। भविष्यवाणी एक वरदान है और जिस के बारे यीशु बात कर रहे हैं, उन लोगों ने उसका अनुभव किया था, जो कि पवित्र आत्मा का वरदान है, और उसके नाम की सामर्थ्य को अनुभव किया था, परन्तु यीशु ने कहा कि, वह उन्हें नहीं जानता है।

वह मनुष्य जिसको मैंने नरक में देखा, वह पवित्र आत्मा का वरदान पाया हुआ था, जोकि एक बुद्धि का वरदान था! प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उसके बचाये जाने से पहले,

परमेश्वर उस के जीवन में बढ़ता होता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि कोई भी सच्चा विश्वास नहीं करता, इस बात को प्रकाशन के बिना जो पवित्र आत्मा ने उनके लिए दिया है कि, ''यीशु मसीह कौन है'' हमें अवश्य इस बात का एहसास करना चाहिए, क्योंकि कोई भी मनुष्य, जिनके जीवन में परमेश्वर प्रभावित होता है, और इसका यह मतलब नहीं होता है कि, वे बचाये गए हैं!

आपकी आत्मा का नये सिरे से जन्म कब होता है?

आप वाचा की प्रतिज्ञा के द्वारा बचाये गए हैं, और उन पलों में जब आप अपने विश्वास का अंगीकार दूसरे मनुष्य के समाने करते हैं, तो आप (यदि ध्यान दें) अपनी आत्मा के नये जन्म को अनुभव कर सकते हैं। यह अनुभव बड़ा हल्का सा है, जैसे कि बिजली का झटका, जो आप के शरीर से निकलता है। **इस का कारण यह है कि, आप ''आत्मिक जन'' हैं और यह बदलाव आप की आत्मा में बिल्कुल सत्य है!** जब मैंने परमेश्वर से इसके बारे में पूछा, तब उसने कहा, ''ज्योति अन्धकार में बिना प्रवेश किया नहीं रह सकती।'' आप एक ''पवित्र जन हैं-और यीशु ने कहा, हमें इस बात पर आश्चर्यचकित होने की अवश्यकता नहीं है कि, हमें नये सिरे से जन्म लेना चाहिए, आत्मा का जन्म ...।

यहून्ना 3:5-7
यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझसे सच सच कहता हूँ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, तो वह परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैंने तुझसे कहा; कि तुम्हे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।

पहला यहून्ना 4:15 कहता है;
जो कोई यह बात (घोषणा, घोषित) मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में।

पवित्रशास्त्र प्रकट करता है कि, जब आपकी आत्मा नये सिरे से जन्म लेती है। यह आपके अंगीकार से ही है, (दूसरे मनुष्य के आगे घोषणा से) और **यह केवल एक मार्ग है जिस से यह होता है!** यदि एक ऐसा मनुष्य हो, जो सुन या बोल नहीं सकता, पर वह लिख सकता है, जुबानी या, हाथ के दबाने से आप कह सकते हैं (लौखिक या मौखिक) ''मेरे हाथ को तीन बार दबायें, यदि आप विश्वास करते हैं कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और

परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया!'' तब मेरे हाथ को दो बार दबाईयें ''यदि आप विश्वास नहीं करते।'' साधारणीय! परमेश्वर की वाचा पर काम करने के लिए, और आपकी आत्मा को परमेश्वर से नये सिरे से पैदा होने के लिए, आपका विश्वास दूसरे मनुष्य के सामने पृथ्वी पर स्थिर होना चाहिए। नीचे दी गई दो गवाहीयों में हम पाते हैं कि, जब आपकी आत्मा का नये सिरे से जन्म होता है:

परमेश्वर खुले तौर पर प्रमाणित करता है जब आपकी आत्मा नये सिरे से जन्म लेती है!

परमेश्वर ने मुझे एक कलीसिया में भेजा, जहाँ परमेश्वर पादरी को बता रहा था कि, वहाँ पर मुक्ति की उन्नति के साथ कुछ गलत हो रहा था। उस दिन वहाँ के पादरी ने मुझ से यह प्रकट किया और मैं जानता था कि, यह मेरे लिए एक संकेत था, उसके सिखाने के लिए जो परमेश्वर मुझे सिखाता है। जब मैं उसके साथ ये बातें कर रहा था, तो मैं यह कहने के लिए विवश हुआ, ''परमेश्वर ही आप के लिए प्रमाणित करेंगे, जो कुछ मैंने आप को सिखाया है।''

पादरी और उसकी पत्नी को समझाने से प्रतीत हुआ कि, कैसे वाचा की प्रतिज्ञा ने कार्य किया है। उन्होंने हर समय लोगों मे से विश्वास की घोषणा को करवाना शुरू किया, जब उनको अवसर मिलता था। वे टेलीफोन के ऊपर भी लोगों से बाते करते, जो ये सोचते थे, कि वो पहले बचाये गए है। उनकी कलीसिया मे उन्नति होने लगी। प्रभु लोगों को जोड़ रहा था, परन्तु मुझे विश्वास नहीं था, कि हम क्यों इसी ही समय पर जागरूक थे।

परमेश्वर के प्रमाणित करने का दिन मेरी आशा करने से पहले ही आ गया। मेरे पास कोई भी विचार नहीं था कि, परमेश्वर कैसे इसे प्रमाणित करेगा, जब तक कि, यह सब मेरी आँखों के सामने हो नहीं गया। उस पादरी ने उस दिन बताया कि, तुम्हारे जीवन के लिए एक दर्शन मिला है और उनसे पूछा कि, आप में से कौन है, जो सेवकाई के लिए आगे आना चाहता है। तब मंच के सामने दो सीधी पंक्तियां एक के पीछे एक लग गई।

पादरी ने अपनी सेवकाई को पहले मनुष्य से आरम्भ किया, तब उसने सबसे पीछे वाली पंक्ति मे एक जवान महिला को देखा, जो पहले कभी भी वहाँ नहीं देखी गई थी। वह रूका और उस महिला को आगे आने के लिए कहा और वह आगे आई। तब उसने कहा ''मैं केवल एक प्रश्न आप से पूछना चाहता हूँ। क्या आप विश्वास करती हैं कि, यीशु आप के पापों के लिए मरा और परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया?''

उसने कहाँ, ''हाँ''

पादरी ने कहा, ''यही सब मैं चाहता था।'' वह पीछे पंक्ति मे चली गई और उसी प्रकार पादरी ने पहले की तरह अगली पंक्ति में खड़ा होकर सेवकाई करना जारी रखा।

उस लड़की ने चिलाना शुरू किया, और बहुत ही बुरी तरह से उस समय में चिल्लाई, जब पादरी ने उसे पिछली पंक्ति मे शामिल किया था। उसने कहाँ कि ,वह नहीं जानती कि, क्या गलत था और यह कि, वह पहले कभी भी इस तरह से नहीं चिल्लाई थी। हम सब उस लड़की की ओर देख रहे थे, जो अपने जीवन में कभी भी रोई या चिल्लाई नहीं थी, क्योंकि उसने एक साधारण से प्रश्न का उत्तर दिया था। हम सब जिन्होंने वास्तव में मुक्ति की प्रक्रिया को समझा और जानते थे, कि वह क्यो रो रही थी। क्योंकि उस की आत्मा का नये सिरे से जन्म हुआ और अब उसकी आत्मा एक नई सुष्टि थी। परन्तु उसका प्राण नहीं समझ पाया कि क्या हुआ था? मैं आश्चर्य-चकित रह गया कि, परमेश्वर ने उसे कैसे खुले तौर पर कलीसिया में प्रमाणित किया था।

परमेश्वर ने प्रमाणित किया कि, वह कितना ही सरल है। वे जो समझते और सरलता से देख सकते थे कि क्या हुआ था, परन्तु वे जो वास्तव में अपने प्राणों में नहीं समझ पाए, और इस बात से वंचित रह गए, कि सच में क्या हुआ था?

एक ओर दूसरा प्रमाण जब आपकी आत्मा नये सिरे से जन्म लेती है:

मेरे एक मित्र के चाचा जी जोकि कैंसर के पीड़ित थे। हम सब फुल गोसपल बिजनेस मैन'स की प्रार्थना सभा में शमिल थे। उस सभा के वक्ता (प्रचारक) ने अपना संदेश समाप्त करने के बाद पूछा कि, क्या किसी को सेवकाई की अवश्यकता है। मेरे मित्र के चाचा जो पहली पंक्ति में खड़े थे, वक्ता ने उससे पूछा, क्या आप बचाये गए हो? तब चाचा इधर उधर की बाते करने लगा, तब वक्ता ने बाद में उस से मुक्ति की प्रार्थना को दोहराकर उसकी अगुवाई की। तब वक्ता ने उसके कैंसर की चंगाई के लिए प्रार्थना की और पंक्ति में अगले मनुष्य की ओर बढ़ गया। मेरे मित्र ने अपने चाचा के कंधे पर थपथपाया और कहा, "जाओ और जो भी पहिला मनुष्य मिले उसे कहा कि, यीशु ही प्रभु है।"

चाचा जी मुड़े और मेरे कही हुई बात के अनुसार वह पहले मनुष्य की ओर नहीं गए, जिसे उसने देखा था। परन्तु उसने आखिरकार (थोड़ा समय बिताने के बाद) वही किया, फिर वो उस मनुष्य के पास गया और उससे कहा, "यीशु प्रभु है।" जब उसने ऐसा कहा तो वह एक दम से जीवित हो गया और अपनी पत्नी के पास गया और उसे बताया, "यीशु प्रभु है।"

यह सब एक कहानी नहीं है! मेरे मित्र ने प्रार्थना सभा समाप्त होने के बाद घर जाते समय, उस से यह प्रश्न पूछा कि, "कब परमेश्वर का आत्मा आपके शरीर में प्रवेश हुआ?"

उसने उत्तर दिया, ''जब मैंने दूसरे मनुष्य को बताया, ''यीशु प्रभु है।''

यह वास्तव मे सच था कि, उस पल उसकी आत्मा नये सिरे से उत्पन्न हुई, जब उसने दूसरे मनुष्य के सामने अपने विश्वास का अंगीकार किया था। यह मेरे पीछे दोहराये जाने की प्रार्थना के समय में नहीं हुआ था। मेरे मित्र ने यीशु मसीह की वाचा की प्रतिज्ञा को जो मत्ती 10:32 में दी गई है, उसको मानने के कारण, यह सब कुछ उसके साथ हुआ था।

पानी में बपतिस्मा
यह क्या है–और यह क्या नही है!

धार्मिक संसार में ''पानी में बपतिस्मा'' के बारे में बहुत सारी शिक्षाएँ है। यह भी एक मनुष्यों की ओर से विभाजित करने वाले साधन हैं। कि, **''हम अलग हैं''** यह कुछ नया नहीं है, क्योंकि यह एक बात थी, जिसका प्रेरित पौलुस ने शुरूआती कलीसिया मे सामना किया था।

1 कुरिन्थियों 1:11-18
क्योंकि हे मेरे भाईयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय मे बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरे कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का, कोई अपल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हे पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़, मैंने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। कहीं ऐसा न हो कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। और मैंने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इन को छोड़ मैं नहीं जानता कि, मैंने ओर किसी को बपतिस्मा दिया। क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दो के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।। क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता हैं, परन्तु हम उद्धार पाने वालो के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।

क्या आप इन **विभाजनों** (बटवारा) के कारणों को देख सकते हैं, जोकि मनुष्यों की अपनी समझ के अनुसार ऊपर पवित्रशास्त्र में दिए गए है? मैं इसलिए आशा करता हूँ। पौलुस भी यहाँ प्रकट करता है कि, यह सब कुछ **क्रूस की सामर्थ** के विरूद्ध आया। यहाँ इस संसार में कुछ ऐसी शिक्षाएँ हैं, जो यह कहती हैं कि, आप को पानी में बपतिस्मा लेना

आवश्यक है, नहीं तो फिर आप नरक में जाओगे। यह क्रूस की सामर्थ के विरूद्ध हो रहा है, क्योंकि पानी का बपतिस्मा यीशु मसीह की क्रूस से पहले से चल रहा था!

हम मसीहीयों को यह बात समझनी चाहिए कि, यदि पानी का बपतिस्मा हमे बचाता है, तो **फिर मसीह के क्रूस का कोई भी उद्धेश्य नहीं था।** मसीह यीशु व्यर्थ ही मरे! पौलुस ने यह क्यो कहा कि, **यह सारा विवाद** मसीह के क्रूस को प्रभाव-रहित बनाता है। जब प्रभु मुझे इस विषय के बारे में सिखा रहा था, तो मैंने सीखा कि, यहूदियों के जो समूह पहाड़ी इलाकों में रहते थे। वह पानी का बपतिस्मे की रस्म करते थे। यह वह स्थान था, जहाँ से यहून्ना बपतिस्मा देने वाला आया था। इन विशेष यहुदियों ने परमेश्वर को सुना था और इस रीति से उसकी आज्ञा का पालन कर रहे थे। यीशु का अपना पानी में बपतिस्मा लेना, इस बात की पृष्टि करता है कि, ये यहूदी जानते थे, जो वह कर रहे थे! यह सब यीशु मसीह की क्रूस से पहले चल रहा था।

पानी के बपतिस्मे को जानने के लिए, कि यह क्या है। हम देखते है कि, यीशु ने ठीक पानी में उसको यहून्ना बपतिस्मा देने वाले से पहले, इस बारे में क्या कहा था।?

मत्ती 3:14,15

परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्याकि हमे इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली ।

हम देखते हैं कि, यीशु ने इसके बारे मे क्या कहा कि, यह एक धार्मिकता का कार्य है। यहाँ पर एक पापरहित मनुष्य है, जो स्वर्ग मे अपने पिता की आज्ञा से बाहर पालन करता हुआ, सिर्फ धार्मिकता को पूरा करता है। यद्यापि यीशु आप नहीं, वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे।

यूहन्ना 4:1,2

फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा देता है।(यद्यापि यीशु आप नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे।)

यीशु ने कभी भी किसी को पानी का बपतिस्मा नही दिया, क्योकि उस का बपतिस्मा पवित्र आत्मा में, जोकि एक न बुझने वाली आग मे था। पानी के बपतिस्मे का अर्थ बनता है कि, जब हम समझते हैं कि, इस बाढ़ से मनुष्य के पाप को ढापने के लिए परमेश्वर के कार्य का एक चिन्ह है। जब शुरूआत के दिनों में वे यहूदी (क्रूस से पहले) जोकि पानी के

बपतिस्मे की रस्म करते थे, और वे यह मानते थे कि, इस कार्य के द्वारा चिन्ह के रूप में, सारे संसार के सामने और परमेश्वर के सामने कि, यहाँ एक परमेश्वर है, जो उसका वचन सत्य है, और जो उसने पानी के द्वारा पापी मनुष्य को ढाँप दिया है, जैसे कि नूह और उसके परिवार के साथ हुआ, वैसे ही यह हमारे लिए क्रूस के बाद हुआ। यीशु ने कहा हमे पानी का बपतिस्मा लेना चाहिए, परन्तु जब हम कहते है कि, अनन्त जीवन के लिए यह अति आवश्यक है, तो हम वास्तव में क्रूस की सामर्थ के विरूद आते हैं।

पौलुस ने थोड़े ही लोगों को पानी का बपतिस्मा दिया। यीशु ने किसी को बपतिस्मा नही दिया, परन्तु उसने कहा धार्मिकता को पूरा करने के लिए, यह किया जाना चाहिए। हमें इस बात को अनुभव करना चाहिए, कि वह मनुष्य जो यीशु के साथ क्रूस पर था, जिसे यीशु ने कहा था कि, तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक मे होगा, वह बचाया गया और उसने कभी भी पानी का बपतिस्मा नहीं लिया था। उसने साधारण रूप से अपने विश्वास का अंगीकार किसी दूसरे मनुष्य के सामने पृथ्वी पर किया था। वह मनुष्य कोई ओर नहीं परन्तु स्वय यीशु मसीह था। वह मनुष्य मरा और नरक के ऊपर वाले भाग में गया, जो अब्राहम की छाती (सीना) कहलाया गया। यह वह स्थान है, जहाँ अब्राहम और दूसरों के निवास के लिए, इसे बनाया गया था। जब यीशु का प्रयोजन क्रूस पर पूरा हुआ, तो वह नरक के नीचे वाले भागों मे गया और कानूनी ढंग से मृत्यु की कुंजिया ले आया और सारी मनुष्य-जाति के शत्रु को भी ले आया। तब उस ने सम्पूर्ण तौर से नरक में जो लोग अब्राहम की छाती पर थे, उन्हें आजाद करवाया। कुछ पृथ्वी पर जिन्हे स्वर्ग के रास्ते द्वारा गुज़रते हुए देख गया था। यह मनुष्य जो क्रूस पर यीशु के साथ मरा, वह भी उनके बीच था। वह दूसरा मनुष्य जो दूसरी तरफ यीशु का मज़ाक उड़ा रहा था, जो आज के दिन तक भी नरक के निचले भागों में है। क्योकि परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह की सामर्थ क्रूस पर थी, न कि "पानी के बपतिस्मों में" और न जो कुछ या तो पहले या क्रूस के बाद हुआ।

यह भी एक बहुत बुरी बात है कि "मनुष्यो की बुद्धि" जो "पानी में बपतिस्मे" को अनुमति कहने का साधन बनाते हैं कि, "हम अलग हैं" इसलिए वे उसके महत्व को कम कर रहे हैं जो क्रूस पर हुआ। परन्तु आने वाली बेदाग़ कलीसिया ऐसा नहीं करेगी । यह सच्चाई में बढ़ेगा, जो परमेश्वर का उसके वचन के साथ मतलब था। यह कैसे होगा? परन्तु यह न तो बल से, न शक्ति से, परन्तु यह परमेश्वर की आत्मा के सत्य द्वारा प्रकट होगा। परमेश्वर के लोग सच्चाई के लिए खीचें जाएँगे। सबसे अच्छी बात यह है कि, हमें अपनी शिक्षाओं को जाने देने के लिए, इच्छुक होना चाहिए और परमेश्वर के साथ आगे बढ़ने का साहस करें। पानी का बपतिस्मा साधारण मात्र केवल एक धार्मिकता का कार्य है। जोकि हमें पूरा करना चाहिए। यह मसीह की देह को विभाजित करने का एक साधन नहीं होना चाहिए!

किसी को वेदी पर निमंत्रण करना खतरा भी हो सकता है!!!

मुझे गलत मत समझना, क्योंकि वेदी पर निमंत्रण कई अवसरो के लिए महान है, परन्तु इस सत्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए, कि यह रीति-रिवाज भी एक बहुत बड़े खतरे का कारण बन सकता है। जिस प्रकार परमेश्वर मुझे अनन्त जीवन की मुक्ति की प्रक्रिया के बारे में सिखा रहा था, तो वह मुझे कई कलीसियाओं में अंगीकारो के खतरों को दिखाने के लिए ले गया। इस से मुझे बहुत लाभ प्राप्त हुआ और मुझे अंगीकार के मामले की सच्चाई के बारे में ओर भी अधिक सही जानकारी प्राप्त हुई, और यह कितना ही सरल है। उस समय, मैं इन सभी कठिनाईयों से अभिभूत हो रहा था। जो परमेश्वर मुझे ये सभी अलग-अलग कलीसियाओं मे दिखा रहे थे। मैं उन पर मनन कर रहा था, और परमेश्वर से कह रहा था कि, यह मेरी सहनशक्ति से कही ज्यादा ही मुझे दिखा रहा था। मैं उसको याद कर रहा था, जो पवित्रशास्त्र कहता है कि, वह ऐसा नही करेगें। मैं कोई ऐसी बात के लिए देख रहा था, जो मुझे "अत्यधिक" सहायता करेगी। मैं मुकाबला कर रहा था।

तब मैंने अनुभव किया कि, मैं एक कलीसिया को जानता हूँ, जो किसी दूसरे मनुष्य के लिए अंगीकार करने का ठीक विचार रखती है। मैं जानता था कि वे इस धारणा को वास्तव में पूरे तौर पर नही समझे थे, परन्तु उनका विचार सही था। मेरी निराशा में जो परमेश्वर मुझे दिखा रहा था, मैंने उसको बताया, कम से कम, मुझे इस (विशेष) संस्था के साथ कोई समझौता नही करना था। मैं उनसे यह एक तरीके से पूछने लगा, न कि जैसे छिपे हुए ढंग से।

अच्छा तो, परमेश्वर ने मुझ से इस विशेष कलीसिया के बारे मे इस तरह बात की, कि मैं एक मनुष्य को प्रयोग करते हुए, जिसे मैं जोन कहूँगा, जो मेरा पड़ोसी होगा। तब परमेश्वर ने मेरे एक मित्र को खड़ा किया किया, जिसने मुझे जोन के बारे में, और उसकी उस विशेष कलीसिया के बारे में विशेष अवसर पर अवगत कराया। जोन किसी खास अवसर पर ही कलीसिया में जाता था। मुझे बताया गया कि, इस मनुष्य को वेदी पर बुलाहट के लिए काफी समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उस अतिथि वक्ता (पादरी) को पता था कि, यहाँ कोई था, जिसे बचाये जाने की अवश्यकता है। मुझे शंका थी कि, वह शायद कुछ जानता था, जोन कभी भी आगे नहीं गया। इसके बाद मेरे मित्र ने मुझे जोन के बारे में जानकारी दी। मैंने जाना कि परमेश्वर चाहता है कि, मैं उस मनुष्य के कारण को और उस समय की अवधि के बारे में जाँनू, जो मैं ने रात के दृश्य के बारे में देख था।

मैंने एक मनुष्य को कलीसिया के बैंच पर बैठा देखा। जो लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए पीआनों बजा रहा था, और यह धुन..."सिर्फ जैसे मैं हूँ .....मैं आता हूँ, मैं आता हूँ।" तब वह पादरी द्वारा वेदी पर बुलाया गया, और पादरी कह रहा था कि, वहाँ कोई है, जिसे आगे आने के लिए अवश्यकता है। परन्तु वह मनुष्य जिसे मैं देख रहा था, वह आगे नहीं गया।

इस दृश्य में, परमेश्वर ने मुझे नही दिखाया कि, क्यो वह मनुष्य आगे नहीं गया। क्या यह उसका व्यक्तित्व था या आत्मिक प्रभाव? क्या यह इसलिए था कि, उसने विश्वास नहीं किया? क्या पादरी परमेश्वर की आत्मा के द्वारा जानता था कि, यह कोई विशेष मनुष्य था? अत्यन्त संभव! फिर भी जो बात हमें देखने की अवश्यकता थी, और जो बात परमेश्वर मुझे दिखा रहा था, वह यह थी कि, पादरी को उस मनुष्य से अंगीकार करवाना चाहिए था। उसे चाहिए था कि, वह सीधा उस मनुष्य के पास जाता और उससे पूछता, और, या केवल कमरे में प्रत्येक से पूछता, या किसी न किसी तरह, इस विशेष मनुष्य को सही उत्तर देने के लिए तैयार करता। परमेश्वर मुझे दिखा रहा था कि, इस तरह लोगों को प्रणय निवेदन करने का रीति-रिवाज (जो आंशिक रूप से सही लगता था) लोगों को उनकी कलीसिया में मुक्ति पाने में असफलता का कारण बन रहा है, और वहाँ के विश्वासी अब नरक में हैं, क्योंकि उन्होने आगे नही जाना चाहा-चाहे, कोई भी कारण क्यो न हो!

कुछ वर्ष पश्चात उस मनुष्य का निधन हो गया और मेरे पास विश्वास के लिए प्रत्येक कारण है कि, वह मनुष्य इस समय नरक में है। एक भयानक बात है।, है ना? मैं उस मनुष्य को जानता था। आप ही निर्णय लें कि, क्या मैं सही हूँ! यहाँ एक कारण है कि, जो मैं विश्वास करता हूँ कि, वह एक विश्वासी था, जो बच नहीं सका। क्योंकि इसका कारण विशेष रीति-रिवाज और कलीसियाओं में बुद्धि की कमी और प्राचार सभाओं से है।

एक दर्शन में, परमेश्वर ने मुझे दूसरे मनुष्य को दिखाया, जिसे मैं जोय कहूँगा जो जीवित है, और जोन, जिसके बारे में मैं बाते कर रहा हूँ, वह मर चुका है। इस दर्शन में, दोनो मनुष्यों की एक जैसी ही समस्या थी, खुले हुए मार्ग से गुज़रना, एक ही मार्ग से निकलना, जोकि प्राकृतिक रूप से असंभव था। मुझे दिखाया गया कि, मैं उस मनुष्य(जोय) को जो जीवित है, खुले हुए मार्ग के द्वारा बाहर खीच सकता था, जिसमें से गुजरना प्राकृतिक रूप से असंभव था। परन्तु उस दर्शन में, जिसे जोन कहकर बुलाया गया था, उस मनुष्य को उस मार्ग में से निकालने वाला कोई नही था।

अपने मित्र की बात फिर से करते हुए जोन, जोकि आगे नहीं गया, यह देखना बिल्कुल स्पष्ट है कि, यदि अतिथि वक्ता (पादरी) उस मनुष्य से सही प्रश्न पूछता, तो वह जोन की मृत्यु से बचा सकता था। मैं जानता हूँ कि, यह मनुष्य जिसे मैं जोय कहता हूँ (जो दर्शन में अभी तक जीवित है) हर एक छोटे शहर की कलीसिया में जहाँ वह रहता था। उसने कुछ समय के लिए उस कलीसिया में भी भाग लिया, जिसमें जोन भी जाया करता था। वह खोज रहा था। है न? मैंने रात के दृश्य में जाना कि, वह बचाया नहीं गया है। मैं उसके समुंदाय और उसके व्यक्तित्व की परिस्थित को जानता था। मैं देख सकता था, कि वह क्यों आगे नहीं जा सका, चाहे वह जाना भी चाहता। क्योंकि इसके इलावा बहुत सारी ऐसी कलीसियाएँ हैं, जिन्होंने कभी भी वेदी की ओर आने का प्रयत्न नहीं किया। मैंने अपने मन में विचार किया कि, मैं उस मनुष्य के पास जाकर उस से भेंट करूँ और उस से अंगीकार करवाऊँ, बिना सारी जानकारी जाने, उसका प्रभावशाली उत्तर था कि " हाँ " प्रभु की स्तुति हो!

मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि, यीशु मसीह में उनके विश्वास के अंगीकार से किसी मनुष्य पर आत्मिक प्रभाव पढ़ सकता है।एक रात के दृश्य में,

यहाँ पर एक मनुष्य और महिला सोफे पर बैठे थे। मैं उनकी तरफ, उनके चेहरों को देखने के लिए झुका- ताकि उनसे बात करूँ। मैं उनसे बार-बार इस प्रकार के प्रश्नों के पूछ रहा था "क्या आप विश्वास करते हैं कि, यीशु परमेश्वर का पुत्र है, आदि?" "क्या आप विश्वास करते हैं कि, परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जीवित किया?" उन्होंने प्रत्येक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रत्यन किया, परन्तु वे बोलने के योग्य नही थे। वे नजदीक आए, और सिर्फ "ओ-हू!" बोल पा रहे थे। वे नीचे जाते हुए, मुझ से दूर जाना चाहते थे। मैं उनके चेहरों की तरफ देखते हुए कह रहा था कि,"मैं 'हाँ' और 'नहीं' में आपसे उत्तर चाहता हूँ।"तो काफी प्रयत्न करने के बाद मैंने उन्हें मनाया और वे बड़े जोर की आवाज के साथ बोले "हाँ" तब जैसे ही उन्होने कहा "हाँ" वे दोनो उस सोफे पर से कूद कर उठे, जैसे कि मैं कह सकता हूँ, सिर्फ जीवित। वे स्वतन्त्र हो चुके थे!

आत्मिक शक्तियाँ जीवित हो सकती हैं, और एक सच्चे अंगीकार से आगे आती हैं। मसीहीयों को यह अनुभव करना चाहिए, कि वे एक युद्ध में है। चाहे वे विश्वास करें या न करें, और वह युद्ध आत्मिक राज्य में है।

मेरे पास एक दूसरी गवाही भी हैं, इस बारे में जो हम बात कर रहे हैं। मैंने एक पादरी को अपनी पहली मुक्ति के बारे में कैसेटें (टेपें) दी। इन कैसटों को सुनने के बाद,

उस पादरी ने मुझे बताया कि, मैं एक "कट्टर-पंथी (कठोर) मनुष्य" था और उस ने मेरी खुलकर अलोचना की, उस बारे में, जो मैंने सभा के सामने बताया था। यह व्यंग्यात्मक बात है कि, निस्संदेह उसकी अपनी गवाही यह दिखाती है कि, जो मैं कह रहा था, वह सब सत्य है। मैं वास्तव में इसे वैसे ही आपको नहीं दे सकता, परन्तु आपको चित्र मिल जाएगा। जो यहाँ पर है।

वह सेना के एक टापू पर था। वहाँ एक जागृति थी, और वह वहाँ जाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उसने कहा कि, ऐसा लगता था कि, यह कभी समाप्त नहीं होगी। वह कई बार वापिस गया। जब कभी भी वेदी की बुलहाट होती, तो वह आगे जाना चाहता, परन्तु जैसे कोई चीजं उसके पाँवों को वेदी पर जाने से रोकती थी। जैसे कि, उस के पाँवों को फर्श से चिपका दिया हो। वह फिर पीछे का पीछे ही रह जाता था। आखिरकार जब वेदी की ओर से आगे आने की बुलाहट हुई, तो उसके पाँवों एक बार फिर फर्श से चिपक गए, तब उसके पास एक पादरी आया और उसके कंधे पर हाथ रखकर उससे कहा "क्या तुम आगे आना नहीं चाहते हो, ताकि प्रभु यीशु मसीह आप को बचा सके?" जैसे ही उसने पादरी को "हाँ" में उत्तर दिया, तब तुरन्त ही उसके पाँवों स्वतन्त्र हो गए। वह वेदी की ओर भागा, और प्रभु के साथ उसको एक अद्‌भुत अनुभव हुआ।

यह देखना बिल्कुल स्पष्ट है कि, उसने अपने विश्वास को जोकि सच में यीशु मसीह ही मुक्तिदाता है। किसी दूसरे मनुष्य के सामने भी स्थपित किया और वह न केवल बचाया गया, परन्तु स्वतन्त्र भी हो गया। यह कितने शर्म की बात है कि, वह पहचान नहीं पाया, कि मुक्ति सचमुच उसके लिए हुई है। बेशक, उसे अपनी शिक्षाओं को त्याग देना था।

आप इन सब गवाहीयों में देख सकते हैं, जोकि वेदी पर बुलाहट के बारे में है, कि क्यों मनुष्य के रीति-रिवाज परमेश्वर की सामर्थ को प्रभाव रहित करते हैं। जैसा कि आपने पढ़ा कि, एक सच्चे अंगीकार में क्या है। परमेश्वर ने मुझसे कहा, "तुम मेरी वेदी पर क्या करने जा रहा हो, जो मेरे पुत्र ने नही किया?" पिछली गवाहीयाँ हमारे विचारों को बड़ा करती हैं। जोकि इस विशेष विषयों के बारे में हैं, और प्रकट करती हैं कि, कैसे संकट का बड़ा समय आ सकता है, या बुद्धि की कमी के कारण और एक रिवाज जोकि बहुत सी कलीसियाओं में चल रहे हैं, और प्रचार सभाऐं जो सारे विश्व में चल रही हैं। इस लेख को बन्द करते हुए, मैं यह कह सकता हूँ कि "हे, पिता हमे मसीह होने के नाते हमारी सहायता कर, ताकि यहाँ हम इन परिस्थितियों में से गुज़रते हुए, किसी एक को निकाल सकें, जोकि आत्मिक या शिक्षाओं की रूकावटो के कारणो से है।"

परमेश्वर प्रकट करता है कि समस्या मेरे कितने निकट थी।

परमेश्वर ने इसे बहुत लम्बे समय तक किया ताकि, मैं उसकी गंभीरता को देख सकूँ जो उसने मुझे मुक्ति के बारे में सिखाया था। मैं यह जानता था कि, यह सम्पूर्ण रूप से कलीसिया में गंभीर था, परन्तु मैंने निजी तौर पर अनुभव नहीं किया कि, समस्या मेरे कितने निकट थी।

प्रभु ने मुझे एक स्वप्न दिखाया कि, मैं एक कलीसिया में, एक गली में, और एक शहर में सेवकाई करूँगा और इसे समाप्त होने के बाद एक महिला के साथ सेवकाई करूँगा। मैंने यह सोचा कि, यह बहुत रोमांचित था, इसलिए मैं उस शहर मे गया और उस गली में गया और देखा कि, वहाँ कही भी आस-पास कोई भी कलीसिया नही थी। मैंने सोचा कि यह एक " यह एक चिन्हरूपी स्वप्न होगा " और मैं वपिस अपने ही घर आया। मैं जल्द ही इस स्वप्न को भूल गया। तब लगभग छः महीने के बाद मेरे कुछ मित्रों ने, मुझे एक कलीसिया में संदेश देने के लिए कहा, जो उन्होंने नई शुरूआत की थी, और, हाँ, यह उसी गली में ही थी!

उन्होंने मुझे बहुत ही आन्नदित किया, क्योंकि तब मुझे वह स्वप्न याद आया। मैंने उन्हें नीचें नहीं होने दिया। मैंने उस कलीसिया में वो बाते बाँटी, जो प्रभु ने मुझे अंत के दिनों के बारे में दिखाई थी; और किसी बात की कमी के कारण, मैंने उनके साथ वह बाते बाँटी, जिन का प्रकाशन प्रभु ने मुझ पर मुक्ति के बारे में किया था। जल्द ही सभा समाप्त हुई। मैंने उस महिला की प्रतिक्षा की, जिसके बारे में स्वप्न में मुझे दिखाया गया था। परन्तु जल्द ही वह कमरा खाली हो गया और मैं सोच रहा था "और मुझे यह समझ नहीं आया? परन्तु स्वप्न का पहला भाग सच हो गया था, परन्तु वह महिला कहाँ है?" मैंने अपना समान इक्कट्ठा किया और अपनी कार की ओर गया। मैं गाड़ीयाँ खड़ी करने वाले स्थान में था, तब मैंने किसी की सिसकती हुई सी रोने की आवाज सुनी, जो मुझ से कह रही थी, "रोय, मैं नही जानती कि, मैं बचाई गई हूँ, या नही"

मैं हैरान हो गया कि वह कौन है, मैंने पूछा " आपके कहने का क्या अर्थ है?"

उसने रोते हुए, फिर मुझसे कहा, " मैं नही जानती कि, मैं बचाई गई हूँ या नहीं।"

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि, यह वही महिला थी, जो प्रार्थना सभा में थी, जहाँ मैंने भाग लेना शुरू किया था। वह भी उसी कलीसिया में थी, जहाँ मैं जवान हुआ और कई बार हमने एक साथ मिलकर प्रार्थना की थी। परन्तु अब वह नियत्रण से बाहर थी, जोकि

बच्चों की तरह सिसकियाँ भर रही थी । यह जानते हुए जो परमेश्वर ने मुझे सिखाया था, मैंने उससे पूछा कि, क्या वह विश्वास करती है कि, यीशु मसीह उस के पापों के लिए मरा और अब वह परमेश्वर के दाहिने और बैठा है? उसने रोते हुए कहा, "हाँ"

उसके अगीकार के साथ, उसका सिसकियाँ भरना तुरन्त ही बन्द हो गया, मैंने कहा "तुम बचाई गई हो!"

मैं सच में अपने उस स्वप्न को भूल गया , जब मैं उस महिला से बात कर रहा था। परन्तु जब मैं अपने घर को जा रहा था, तो मुझ अनुभव हुआ कि, यह वही महिला थी जिसके बारे में मुझे परमेवश्वर ने स्वप्न दिखाया था। मैंने अपनी माता जी से उस महिला के बारे में बात की, क्योंकि वह एक दूसरे को जानते थे, और कई स्थानों पर एक साथ गए थे। मैं इस स्थिति को समझने की खोज कर रहा था। मैने जाना कि, वह प्रत्येक सभाओं में हर समय अपने उद्धार के लिए रोती हुई आगे जाती है। तब मैंने जाना कि, परमेश्वर मुझ पर प्रकट कर रहा था कि, सच में यह महिला अब तक बचाई नहीं गई थी। जब तक मैंने उस से विश्वास की घोषणा नहीं करवाई थी। इसलिए जब उसने अंगीकार किया, तो तुरन्त ही उन पलों में उसका सिसकियाँ भरना बन्द हो गया। उसने कई बार, "मेरे पीछे दोहराओ की प्रार्थना" में भाग लिया, परन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला था।

यह महिला जानती थी कि, उसकी आत्मा में कुछ बहुत गलत था। मैं जानता था कि, वह बहकने वाली नही, परन्तु बहुत ही शान्त स्वभाव की थी। मैं सीख रहा था कि, यह मेरे लिए कितनी बड़ी और कितने निकट बात थी, कि जो यह समस्या परमेश्वर के विश्वासीयों की मुक्ति के बारे में थी। प्रभु धीरे-धीरे मुझ पर यह दवाब डाल रहा था कि, मैं अपने पुराने विचारों को मरने दूँ, मुख्य रूप से " यह वास्तव में इतना गंभीर नहीं हो सकता। " साधारणीय, मैंने कलीसियाओं में समस्या की गंभीरता को असत्य घोषित करना चाहा, क्योकि मैं उनके साथ कोई समझौता नहीं करना चाहता था!

परमेश्वर ने कहा, "धर्म!"

एक बार पादरी, मुझे एक मनुष्य के बारे में बता रहा था, जोकि उसके पास यीशु, बाईबल, और परमेश्वर के बारे में बात करने के लिए आया था। यह पादरी किसी को वचन के द्वारा यीशु मसीह के पास लाने के लिए बहुत ही अच्छा था। उन्होंने बहुत देर तक बातें की और पादरी ने उसको मुक्ति की प्रार्थना करने के माध्यम से, उसकी अगुवाई करने का प्रयत्न किया। परन्तु हर बार जब, वह यह करने का प्रयत्न करता, तब वह मनुष्य

प्रार्थना न करने का कोई न कोई बहाना करता था। उस मनुष्य ने पादरी को बताया कि, वह न तो यह चाहता था, और न ही यीशु मसीह से विवाह करने के लिए तैयार था। वह पादरी बहुत ही परेशान हो गया, क्योकि वह उस मनुष्य से न तो प्रार्थना करवा सका और वह न ही उसको बचा सका। आप इस बात पर ध्यान दे कि, वह मनुष्य यीशु पर विश्वास रखता था और उसे यह भी पता था कि, वह कौन है! क्योंकि उसकी बातो से यह पता चलता था।

पादरी इस बारे में बहुत चिंतित था, कि वह असफल हो गया है, परमेश्वर से पूछने के लिए कि, ऐसा क्यों हुआ? वह पादरी मुझे यह सब कुछ बता रहा था, तब उसने मुझे एक स्वप्न के बारे में बताना आरम्भ किया, जो उसने देखा था।

यह स्वप्न पादरी के परिवार के बारे में था। जहाँ उसका पालन-पोषण कैथोलिक विश्वास में हुआ था। स्वप्न में उसके परिवार के सदस्य ने पाप किया था, और इसलिए उसके पाप के कारण उसे प्रभु-भोज में भाग लेने की अनुमति नहीं दी गई थी। यह मूल रूप से बहुत ही साधारण सा स्वप्न था। मैंने पादरी से पूछा कि, इस स्वप्न ने आप को क्या संकेत किया। उसने कहा "कि यह धर्म है।" "धर्म" केवल एक मात्र ऐसा शब्द है, जो इस स्वप्न का वर्णन करता है।

परमेश्वर ने स्वप्न के द्वारा उसकी प्रार्थना की अत्मिक "बात" का उत्तर दिया। पादरी जानना चाहता था कि, वह क्यों उस मनुष्य को बचाने में असफल हुआ था। परमेश्वर ने उत्तर दिया- "धर्म।" पादरी का धर्म!

पादरी ने उस वार्तालाप के समय दौरान, उस मनुष्य से यह प्रश्न नहीं पूछा कि, वह यीशु से विवाह नहीं करना चाहता, और यह प्रश्न कि, "मैं जानना चाहता हूँ कि,वास्तव में तुम्हारा विश्वास क्या है।" तब उस से विश्वास का अंगीकार करवा लिया होता। जब उसने यह कहा था कि, "मैं मसीह से विवाह नहीं करना चाहता हूँ, कि सच में आपका विश्वास क्या है," और मनुष्य से उसके विश्वास की घोषणा करवाता। क्या पादरी यह समझ पाया कि, मुझे उसके धार्मिक विचारों को प्राप्त करना है कि, "जब आप बचाये जाते हो, तो आप यीशु सें विवाह करते हो।" क्योंकि पादरी यह विश्वास करता था कि, मेरे पीछे दोहराओ की मुक्ति की प्रार्थना के द्वारा ही मनुष्य बच सकता है, परन्तु वास्तव में उस का धर्म उसे मुक्ति पानें के लिए रोक रहा था। चिन्ह के रूप में परमेश्वर ने प्रकट किया कि, इस स्वप्न में पादरी का या किसी ओर मनुष्य का धर्म नहीं था। क्योंकि परमेश्वर ने न तो किसी कैथोलिक परिवार को, और न तो किसी मनुष्य के परिवार को, परन्तु, सिर्फ पादरी के

परिवार को ही इस्तेमाल किया था। वह एक सत्य का परमेश्वर है!

हमें इस अनुभव से क्या लाभ प्राप्त होता है? पहला यह है कि, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि, यीशु मसीह आपका मुक्तिदाता, आपको चंगा करने वाला, और या आपका पति भी हो सकता है। यह केवल आपका निर्णय है कि, आप कितनी दूर तक जाते है। जब से आप बचाये गए हो, तब से वह आपका मुक्तिदाता है। यदि वह आपको चंगा करता है, वह इस बात सें आपका चंगा करने वाला बन जाता है। एक दुल्हन उस पर ध्यान केन्द्रित करती है और उसके निकट है। एक बचाये हुए, मनुष्य को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इन बातों में महान अंतर है।

दूसरी बात यह है कि, हम इसें अपने अन्दर देख सकते हैं कि, इन स्वप्नो का अनुवाद कैसे करें। परमेश्वर सदा उसी बातों का उपयोग करता है, जिसे हम समझ सकते हैं। यदि हम मनन करें, और उसकी आत्मिक बातों को समझने के लिए खोज करें।

तीसरा, हम यह देख सकते हैं कि, परमेश्वर साधारणीय सत्य का परमेश्वर है, जो प्रकट कर रहा है कि, यह एक धर्म था। एक विश्वास जोकि केवल मुक्ति की प्रार्थना से ही बचाये जाने का, मनुष्य के लिए एक मात्र मार्ग बनता है, जिसने उस मनुष्य को बचने से मना कर दिया। (मुक्ति की प्रार्थना, जैसा कि हम इसे जानते हैं, क्या यह पवित्रशास्त्र में नही है!)

यह धर्म शब्द जोकि बार-बार मनुष्य और पादरी दोनों के लिए, इस परिस्थिति में लिखा गया था। इसलिए इस एक शब्द "धर्म" को परमेश्वर ने निष्कर्ष किया। वह अलोचनात्मक नहीं हुआ। परन्तु केवल सच्चा.... धर्म।

एक छोटा लड़का, एक चिड़चिड़ी आत्मा के साथ!

23 फरवरी, **1990** की रात के दृश्य में, परमेश्वर मुझे उस कलीसिया में ले गया, जहाँ मेरा पालन-पोषण हुआ था। वह मुझे इसलिए वहाँ लेकर गया, क्योंकि वह जनता था कि, मैं यह सब जानता हूँ कि, क्या मैंने सिखाया और वहाँ मैंने क्या सीखा, जब मैं एक नौजवान पुरूष था। प्रभु लोगों के प्रति मेरे प्रेम को जानता है। वह जानता है कि इसे कैसे मेरे हृदय में चुभोना है। इस कलीसिया के दृश्यों के एक भाग में, मैंने एक छोटे से लड़के को देखा, जो चिड़चिड़ी आत्मा वाला था। इस दर्शन मे मुझे दिखाया गया कि, लड़का इतना

छोटा था कि, मैं उसे अपने घुटने पर बिठाकर उस से बातें करने लगा। इस बात से यह विचार आता है कि, कैसे एक जवान मनुष्य यीशु मसीह के बारे में जोर देकर, यह कह सकता है, कि प्रभु यीशु ही मुक्तिदाता है। मैं इस दृश्य से यह जानता था कि, वास्तव में यहाँ एक छोटा लड़का है, जो विश्वास तो करता है, परन्तु वह नये सिरे से जन्मा या बचाया नहीं गया है! क्योंकि मैं इस यह दर्शन में चारो तरफ से शैक्षिक स्थान में गया, मैं जानता हूँ कि, समस्या उस एक छोटे लड़के से भी बड़ी है!

उस छोटे से लड़के की चिड़चिड़ी आत्मा से मुझे यह अनुभव याद आया, जोकि परमेश्वर मुझे कलीसियाओं में मुक्ति से सम्बंधित गंभीरता के बारे में सिखा रहे था। तो मैंने महसूस किया कि, मैंने अपनी सबसे पहली किताब में इस अनुभव के बारे में कभी भी नही लिखा था।आप ने मुझे यह कहते सुना होगा कि, यहाँ जो पादरी प्रचार करते है, और यीशु के बारे में सिखाते हैं, परन्तु वे अभी तक बचाये नहीं गए हैं। आपने मुझे यह घोषणा करते हुए सुना होगा कि, जो लोग परमेश्वर को अनुभव करते और पवित्र आत्मा के वरदानो को रखते हैं, परन्तु वे नये सिरे से नहीं जन्मे हैं। मुझे यह आशा है कि, इन अनुभवों को पढ़ने के बाद और इन शब्दों को सुनने के बाद आप समझोगे और कलीसिया के संसार में यह कैसे बाँटती है और उसके स्पष्ट चित्र को देखोगे।

अनुभव

मुझे एक इंटरनैशनल, गिडीयनस सभा में बुलाया गया। उस रात परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट किया कि, मुझे उस सभा में भाग लेना है, परन्तु उसने नही बताया कि, क्यों लेना है। उस सभा के वक्ता (पादरी) ने अपनी गवाही में बताया कि, उसने कैसे प्रभु को पाया है, जब उसने एक होटल के कमरे में गिडयिन की बाईबल उठाई और जोन की पुस्तक को बार-बार पढ़ा रहा था। तब उसी समय वह बड़े ही चमत्कारी ढंग से अपनी शराब पीने की आदत से स्वतन्त्र हो गया, और उसने यह अनुभव किया कि, परमेश्वर ने उसे बहुत बड़ा छुटकारा दिया था।

जब सभा समाप्त हुई, तब मैं और मेरी पत्नी इस देश में उसकी पत्नी का स्वागत करने के लिए, उसे बुलाना चाहते थे। क्योंकि वह यहाँ हमारे देश में नई थी। वह बड़ी ही खुशदिल और जिंदादिल थी। चाहे, उसने अधिक अग्रेजी भाषा नहीं सीखी थी, इसलिए हम अच्छी तरह से बातें नहीं कर सकते थे। तब मैं उसके पति की तरफ मुड़ा,जोकि एक पादरी था, मैं उससे बाते करने लगा और मैंने उस से हाथ मिलाया, और उस से बोला, परन्तु

जैसे ही मैंने ऐसा किया, तो एक बड़ी ही अजीब सी बात हुई। मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि, मैंने क्या कहा, क्योंकि मैं अपने आप को उस मनुष्य के अन्दर **उसके शरीर से परे** देख रहा था। मुझे ऐसा अनुभव पहले कभी भी नहीं हुआ था। मुझे याद है कि, मैं सोच रहा था, जैसे यह हुआ कि "यह मनुष्य जैसा लगता है, वैसा वह है नहीं!" जो मैंने देखा इस से हैरान होकर, मैं तुरन्त ही दूसरे कमरे की तरफ गया, यह सोचते हुए, कि मैंने क्या देखा था। मैं इस की व्याख्या केवल उस मनुष्य के अन्दर जैसे कि, "एक बड़े दुःख" के रूप में कर सकता हूँ। मैं जानता था, कि प्रभु ने यह मुझ पर प्रकट किया था, कि " यह मनुष्य वैसा नही था जैसा कि, वह दिखाई देता था " जो कुछ भी मेरे साथ बीता, मैंने यह घर जाते समय अपनी पत्नी को बताया, और क्यों हैरानी हो रही थी।

उसी रात प्रभु ने मुझे दिखाया, कि वह मनुष्य (पादरी) वक्ता कौन था। मैंने उसकी आत्मा को देखा-- वह मर चुकी थी। बिल्कुल मरी हुई-- जो कि यह चिड़चिड़ी थी, **जैसा कि आरम्भ के समय में हुआ था।**(अदन के बाग़ में)

जब मैं दृश्य से जागा तो, अचानक मुझे पता चला कि, परमेश्वर ने मुझे उस सभा में क्यों भेजा था। उसने मुझे "नये सिरे से न पैदा हुई आत्माओं" के लोगों के बारे में और न बचे हुए लोगों की गंभीरता की स्थिति के बारे में सिखाया था, जो केवल विश्वास रखते थे! मैंने तुरन्त प्रार्थना की, "हे प्रभु, मैं समझता हूँ, परन्तु मैं कैसे उनको बताऊँ?" **प्रभु ने कहा,** "उन्हें बता, यह बिल्कुल उसी तरह है, जब मैंने अपने लोगों को मिस्रियो से छुड़ाया था।"

आप देख सकते हैं कि, परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्रियो से छुड़ाया था, परन्तु बहुत थोड़े ही प्रतिज्ञा किए हुए देश में आए। गिडीयन वक्ता ने यह अनुभव किया, कि परमेश्वर ने उसे शराब पीने की आदत से स्वतन्त्र करवाया, एक विश्वासी बनाया, परन्तु ठहराई हुई प्रतिज्ञा के द्वारा उसकी आत्मा ने नया जन्म (उद्धार) नहीं पाया। मैं जनता था, कि उसने साधानणीय तौर पर कभी भी अपने विश्वास की घोषणा किसी दूसरे मनुष्य के सामने नहीं की थी।

यह कैसे है, कि कोई मनुष्य यीशु मसीह की छुडाने वाली शक्ति की गवाही दे सकता है और कैसे प्रचार और उसके बारे में कैसे सिखा सकता है, और अपने विश्वास की उचित घोषणा का अभ्यास नहीं कर सकता? मैंने अनुभव किया कि, मुझे अपने संघर्ष को आपके साथ बाँटने की आवश्यकता है। मैंने कैसे इसे समझा कि, क्यों प्रभु के छुटकारे और चंगाई की गवाही किसी मनुष्य के सामने काम नही करती है। इस मनुष्य ने जिसने

इस बात की गवाही गिडयन की सभा में दी थी, कि कैसे परमेश्वर ने उसे शराब पीने की बुरी आदत से स्वतन्त्र करवाया था। लोग यह समझते थे कि, वह बचाया गया और नये सिरे से जन्म पाया हुआ है। उसने यीशु के बारे में बहुत सारी बातें पवित्रशास्त्र में से की थी। मैं जानता था कि, क्यों वह नये सिरे से नहीं जन्मा था, परन्तु कोई बात मुझे परेशान कर रही थी, और मैं समझ नहीं पा रहा था, कि इस परिस्थिति का "कारण" क्या है।

मैं सदा अपने पाठकों के साथ ईमानदार रहा हूँ, और मुझे अवश्य यह गवाही देनी चहिए कि, परमेश्वर ने मुझे विश्वास दिलाया कि, कैसे कोई एक मनुष्य बाद में बचाया जाता है। मैंने सदा इन विचारों से सीखा है कि, आप अपने पड़ोसी को बतायें, इत्यादि.... कि परमेश्वर ने उन्हे चंगाई दी है। क्योंकि उनके विश्वास की घोषणा ने कार्य किया है, यदि आप नें यह लेख पढ़ा है। "मसीह के बारे में हमें क्या अंगीकार करना चाहिए" तो आप जानते हो, कि मैंने कुछ अलग सीखा है।

यहाँ नीचे लिखे गए एक भाग में मैंने कुछ अलग प्रकार से सीखा है, और यहाँ मैंने आप से बाँटा है। इसलिए नहीं कि, यह गिडीयन सभा के वक्ता (पादरी) से सम्बन्धित है। परन्तु इस का कारण यह भी है कि, प्रभु मुझ से चाहते हैं कि, मैं स्पष्ट रूप से, इस चित्र के "कारण" को देखने के लिए अपनी आँखे खोलूँ। मैं आशा करता हूँ कि, जब आप मेरे लिए प्रभु के उत्तर को पढ़ेंगे, तो आप को भी यही अनुभव होगा।

एक दिन आखिरकार, मैंने प्रभु से विशेष रूप से पूछा कि, उस के (प्रभु) छुटकारे और चंगाई की गवाही क्यों, किसी दूसरे मनुष्य के सामने काम नहीं करती है? प्रभु ने कहा, "परन्तु आप किसी को कह सकते हो!"

तब मुझे यह अनुभव हुआ कि, (उदाहरण के लिए) एलिय्याह ने मरे हुए को जीवित किया, और यीशु ने भी मरे हुए मनुष्य को जीवित किया। इसलिए हम प्रचार और सिखाने के बारे में बात करते हैं कि, " यीशु ने मरे हुए मनुष्य को जीवित किया।" क्या इस बात का यह अर्थ नहीं है कि, यीशु एलिय्याह से भी बड़ा है। इसलिए जब हम कहते हैं कि "यीशु मसीह ने मुझे चंगा किया है," तो हम यह घोषणा नहीं कर रहें हैं कि, वह किसी ओर मनुष्य से बड़ा है। इसलिए बाईबल में दूसरे मनुष्यों के द्वारा चंगाई दी गई, और आज के दिन तक भी मनुष्यों के द्वारा चंगाई दी जा रही है। कई मनुष्य इस संसार में प्रभु या यीशु कहलाये गए होगें। इसलिए एक मनुष्य के अपने अंगीकार में क्रूस और परमेश्वर का अपने पुत्र को मृतको में से जी उठना शामिल होना चाहिए। इसलिए सच्चा प्रभु यीशु मसीह दूसरे मनुष्य से अलग स्थापित होता है। उन सब में से, जोकि पृथ्वी पर दूसरे यीशु

या प्रभु कहलाये गए है।

इसलिए क्यों उस मनुष्य ने यह गवाही दी थी कि, यीशु मसीह ने उसे शराब पीने की आदत से छुड़ाया था, जो अभी तक होटल के एक कमरे में जो " दोबारा न जन्मी हुई आत्मा के साथ था। उसने चाहे उस रात यह गवाही दी थी कि, यीशु ने उसे बचाया है, उसे शराब पीने की आदत से स्वतन्त्र किया था! परन्तु अनन्त जीवन की मुक्ति के लिए नहीं, और असली यीशु मसीह ने कई वर्ष पहले क्रूस पर इन चीजों का प्रबंध कर दिया था। उस ने वास्तव में इस संसार के सब लोगों को बचा लिया, परन्तु थोड़े ही उसे अनन्त वाचा में प्रवेश हुए, और उस ने क्रूस के द्वारा यह स्थापित किया। वह महान प्रवेश उस समझौते (वाचा) में हमारे निजी विश्वास के द्वारा ही स्थापित हो रहा है। दूसरे मनुष्य के लिए जिस से हम कहते है कि, यीशु मसीह ही केवल एक मात्र मूक्तिदाता है और परमेश्वर ने उसे मृतको में से जीवित किया है, यीशु मसीह प्रत्येक मनुष्य को जो जीवित है, अलग करे। परन्तु यह केवल उसके द्वारा और उसी में है? क्योंकि सब ने पाप किया, और उसकी महिमा से वंचित हो गए!

मुझे आशा है कि, इस गिडीयन वक्ता की स्थिति में मनुष्य की "न जन्मी" चिड़चिड़ी आत्मा को देखने की यह गवाही, आप के शेष जीवन में आपका साथ देगी। मैं आशा करता हूँ कि, आप देखते हैं या फिर देखना शुरू कर चुके हैं, क्योंकि इस समस्या की गंभीरता कलीसिया के अगुवों और प्रचारकों के बीच में हैं! जैसे कि हम लोग होने के नाते, कई बार सच मान लेते हैं। और परमेश्वर की गंभीर बातों को जिन्हें वो हमें सिखाता है, भूलने का प्रबल रूझान रखते हैं। मैं अभी तक भी अपने आप में यह मानता हूँ कि, लोग बचाये गए हैं, विशेष तौर पर पादरी और बड़े बड़े नाम जो परमेश्वर मुझे याद दिलाता है कि, यह कितना गंभीर है। ऐसे दृश्य जैसे कि उस छोटे लड़के की तरह, जो उस कलीसिया में था, जहाँ में जीवित हुआ। इस समय हर कही कलीसियाओं में हजारों और हजारों इस तरह के छोटे लड़कें और लड़कियाँ आज भी इस परिस्थिति में है। यहाँ संसार की कलीसियाओं में बहुत सारे न बचाये हुए, विश्वासी प्रचारक भी है। प्रभु ने यह क्यों कहा, "कभी भी कलीसिया में यह समझ कर मत जाओं कि, वहाँ का पादरी बचा हुआ है!"

एक पल निकालें?

यह एक बहुत बड़ा लेख नहीं है, परन्तु मैं यह अनुभव करता हूँ कि, यह एक महत्वपूर्ण और एक मुख्य भाग क्यों है कि, वहाँ दाँतो का पीसना होगा। प्रभु ने मुझे दिखाया कि, बहुत सारे लोगों ने सेवकाई की सामग्री को देखा, और पढ़ा, और बाँटा है। जोकि मसीह की देह पर तीन दाग़ों के बारे में है, और एक तरह सें उन्होंने इसे "तुच्छ" **भी जाना है। यह मेरे हृदय पर कुछ समय तक एक भोझ था, इसलिए मैंने यह निर्णय लिया कि, मैं कुछ जानकारी और गवाही को सांझा करूँ, जोकि इस परिस्थिति के बारे में बतायेगी।**

यह मुक्ति का संदेश है, जो मेरे हृदय के निकट है। इसलिए मैं इस गवाही को जो, मुझे एक मनुष्य के द्वारा भेजी गई, उसे आप के साथ बाँट रहा हूँ, <u>जोकि परमेश्वर की सेवकाई में है।</u> इस फिल्म की प्रस्तुति में मैंने जिकर किया, जो प्रभु ने मुझे बताया था कि, किसी भी कलीसिया में यह सोच कर न जाओ कि, वहाँ का पादरी (अगुवें) बचाया गया है। यह गवाही निस्संदेह प्रकट करती है, जो प्रभु ने मुझे बताया। यह गवाही भी निश्चय तौर पर, जो परमेश्वर ने रोशनी या बिजली जोकि, हमारे शरीरों में प्रवेश करती है, एक प्रकाशन दिया है। जैसे कि मुक्ति के भाग की प्रस्तुति में प्राकशन किया गया है। मुझे दो ई-मेल प्राप्त हुए जो उसकी गवाही को पूरा करते हैं।

गवाही का आरम्भः

आप के परमेश्वर की वाचा के प्रमाण द्वारा, मैंने यह सीखा है कि, मेरी मुक्ति के लिए मुझे क्या आवश्वकता थी। मैंने अपने विश्वास का अंगीकार किसी दूसरे मनुष्य के समाने किया और मैं बचाया गया!!!

आप का धन्यवाद!

ध्यादे दे- आप बिजली के चार्ज के बारे में सही है, (इस पुस्तक के पृष्ठ 28 में)

मैंने उसकी गवाही को उस से प्रयोग करने के लिए पूछा और उसने मुझे फिर वापिस लिखा!

प्रिय रोय,

आप अवश्य ही मेरी गवाही का प्रयोग कर सकते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि, यह दूसरों को मुक्ति प्राप्त करने के लिए और प्रोत्साहित करने में लाभदायक हो सकती है। रोय, मैं और आप दोनों ही प्रभु की सेवकाई में है। हम उसकी महिमा के लिए सेवा करते हैं, और उसकी इच्छा पूरी होगी।

मेरी गवाही का एक ओर दूसरा भाग है, जो मैं आपके साथ बाँटना चाहूँगा। अपने बचाये जाने से एक रात पहले, मैंने प्रभु से प्रार्थना की और उस से मांगा कि, "वह मुझे ओर अच्छी तरह से समझने के लिए सहायता करे" मैंने परमेश्वर से इस बात का मार्ग-दर्शन माँगा कि, मुझे बता कि, वह कौन है जो तेरे वचन का सच्चा प्रचार कर रहा है, और कौन नही कर रहा है। मैंने प्रभु से शिकायत की, कि मैं ज्यादातर कलीसियाओं और मसीहीयों को जानता था, जिन्होंने बहुत से विचारां को पकड़ा हुआ था। और उनके विश्वास से मुझे लगा कि, वह परमेश्वर की ओर से, नहीं ब्लकि मनुष्य की ओर से हैं। इस बड़े समझौते ने मुझे परेशानी और दुविधा में डाल दिया था। क्योंकि मैं तो केवल मनुष्य हूँ, और मैं परमेश्वर के मन के बारे में नहीं जानता, इसलिए मैंने परमेश्वर से पूछा कि, "मुझे दिखा कि, मुझे क्या जानने की आवश्यकता है और मुझे दिखा कि, कौन आपके वचनों को समझता है। जैसे कि मुझे इसे समझना चाहिए था" मैं प्रभु से बुद्धि और मार्गदर्शन के अन्तर को पूछने के लिए गया, और मैंने परमेश्वर से एक बात माँगी... मैंने परमेश्वर से माँगा कि, वह मुझे इन सब बातों को बिल्कुल सही ढंग से समझाये कि, इसे बच्चा भी भलि-भांति समझ सके। अर्थात इस प्रकार से मुझ से कोई गलती नहीं होगी। अगली सुबह मुझे किसी मनुष्य से एक ई-मेल पत्र प्राप्त हुआ, जिसे मैं थोड़ा बहुत जानता था, और यह बड़ा ही "अजीब और आश्र्चय की बात" दिखती थी। क्योंकि यह किसी विषय के वार्तालाप का निरन्तर भाव नहीं था। यह धर्म निरपेक्ष भी नहीं था। इस ई-मेल पत्र ने आपकी वेबसाइट के लिए मेरी अगुवाई की और मैंने " प्रकाशितवाक्य के 19" वे अध्याये के सफेद घोडे पर अधरित फिल्म जोकि "परमेश्वर की वाचा के प्रमाण फिल्म" द्वारा बनाई गई, दोनों फिल्मों को देखा। जैसे ही मैं आपकी वैबसाइट पर इन दोनों फिल्मो को देख रहा था, तब मैंने अपने आपको रोते हुए पाया, (जोकि सम्पूर्ण तौर पर मेरी समझ से बाहर था) और उसी समय पर मुझे इस तरह से लग रहा था। जैसे कई बिजली के बल्व, मेरे सिर के ऊपर बुझ रहे हो, और जो बातें मुझे अपने जीवन में कभी भी समझ नहीं आई, वो सब बातें अचानक से ही बिल्कुल साफ तौर पर स्पष्ट हो गई। और जब मैंने फिल्मों को देखना समाप्त किया, तो मुझे बिल्कुल सही प्रकार सें समझ आ गया कि, मुझे क्या करने की आवयवकता थी। अगले दिन मैंने अपने विश्वास का अंगीकार किसी दूसरे मनुष्य के सामने किया, और मैं बचाया गया! प्रभु अपना कार्य बड़े ही अदभुत ढंग से करता है, और हमारी प्राथनाओं का उत्तर भी देता है। (प्रत्येक उनका भी जो इधर-उधर की होती है..... .हा-हा-हा)

मसीह में आपका
गुप्त-नाम

गवाही का अन्त ।

मैंने दूसरी बार बताया कि, एक मनुष्य जिस ने मुक्ति की सामग्री को देखकर कहा, कि कलीसिया के पास उन लोगो को खोजने के लिए इतना भी समय नहीं है जोकि अपने आप में बचें नहीं है। यह मेरे हृदय पर बहुत बड़े भोझ और **गम्भीर दुःख की बात है!** क्योंकि प्रार्थना सभाओं में लोगों से अंगीकार करवाने के लिए, एक मिनट से भी कम समय लगता है। जैसे कि, इस जानकारी में और फिल्मों की पेशकश में विस्तार से बताया गया है। यहाँ यह उदाहदण है कि, इस कैसे करना है, और जितनी इस की आवश्यकता है, यह उससे भी कही अधिक बड़ा है।

आप सभी को!, शुभ नमस्कार (दोपहर का - शाम का), प्रभु में यह महान दिन है! हम जैसे मसीहीयों को अपने अंगीकार को पकड़े रहना चाहिए। इसलिए आज मेरे पास आप सब के लिए एक प्रश्न है और मैं चाहता हूँ कि, आपके हृदय से बिल्कुल सच्चा उत्तर "हाँ" और या फिर "नहीं" के रूप में आए, आप में से प्रत्येक अपने अपने उत्तर को एक ही बार में दे सकते है। इसलिए आपको अपने उत्तर " हाँ" और " नहीं " में देते समय बिल्कुल भी भयभीत नहीं होना है। मैं आपको सोचने के लिए थोड़ा समय देने के बाद, आप सब से प्रश्न पूछूगाँ। जब मैं आप से चाहूँ कि, आप मुझे उत्तर दे तो, तब आप अपने हाथ को उठाना। क्या आप तैयार है? यहाँ एक प्रश्न है "क्या आप विश्वास करते हैं कि, यीशु मसीह हमारे पापो के लिए क्रूस पर मरा और कि, परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया?" (5 सैकण्ड प्रतीक्षा करे) अपना हाथ उठाये। (2 सैकण्ड के लिए प्रतीक्षा करे) इस समय के मुताबिक आप सभी को प्रश्न का उत्तर देने के लिए सिर्फ एक मिनट का समय दिया जाएगा। मैंने और मेरी पत्नी ने यह सब करने के लिए, एक दूसरे को समय दिया और यह लगभग एक मिनट का समय था।

आप ऐसा कर सकते है, इस प्रकार की सभा में निर्भर करते हुए, जिस मे आप शमिल है। तब आप लोगो को कह सकते हैं, कि प्रभु पर मनन करें, और उन चिन्हों को देखें, जो प्रभु ने किसी न किसी के बीच में किए हैं। रोना भी एक चिन्ह है। आप भी ऐसी सभा में जा सकते हो, आप देख सकते हैं कि, आप यीशु मसीह के दिव्य प्रकाश का उच्चारण किसी दूसरें में भर सकते है और इस में एक मिनट से ज्यादा समय नहीं लगता है। आप भी अलग शब्दों का प्रयोग कर सकतें हैं ताकि, मैं उनके लिए बिल्कुल सहीं प्रश्नों को लाऊँ। वास्तव में, आप लोगों की मण्डली में 30 सैकण्ड से भी कम समय में उनसे

अंगीकार करवा सकते है! उदाहरण के तौर पर:

प्रभु की स्तुति हो! मैं आप सभी से चाहता हूँ, जो इस कमरे में बैठे है। कृपया, मेरी तरफ देखें और मेरे प्रश्नों का उत्तर "हाँ" और "नहीं" के साथ दें। "क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह देहधारी हुए और वह जीवित है, और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है," (उत्तर देने के लिए केवल 30 सैकण्ड का समय लेता है।) धीरे-धीरे भी बताते हुए, यह सिर्फ 30 सैकण्ड का समय लेता है!

यदि संसार की सारी कलीसिया निश्चित तिथि पर, एक मिनट में सभी लोगों के विश्वास का अंगीकार को निकलवाने में लगाए। तो हम (24 घण्टे के कार्यक्रम में) इतने <u>महान चमत्कारों</u> को देखेंगे, जोकि यीशु मसीह के क्रूस पर जाने से पहले अब तक नहीं हुए है! और एक बहुत बड़ा 48% प्रतिशत विश्वासीयों के लापता होनें के आकड़ों का प्रभाव बहुत ही कम हो जाएगा।

क्या आपके पास एक पल का समय है?

क्या आपका नाम लिखा है?

क्या आपका नाम लिखा है? क्या आपके रिश्तेदारों के नाम लिखे है? क्या आपके मित्रों के नाम लिखे हैं? मैं यह प्रत्यन कर रहा था कि, लोग अनुभव करें कि जो कलीसिया मुक्ति की प्रक्रिया के अनुसार कार्य कर रही है, उस में एक समस्या थी। मैंने एक कैसेट बनाई और बिना स्पष्ट नतीजों के उन्हें, कुछ लोगों के पास भेजा। एक प्रचारक ने कहा कि, मैं भी एक कट्टरपंथी (हठी) था। मैं संघर्ष करके थक गया था, इसलिए मैंने निर्णय लिया कि, मैं अपना जीवन व्यतीत करूँ और जो समस्याएँ सभी कलीसियाओं के साथ है, उन्हें मैं जाने दूँ।

जिस रात मैंने यह निर्णय लिया, तब उसी रात के दर्शन में प्रभु मुझे एक कलीसिया में ले गया..... प्रभु और मैं पीछे की तरफ खड़े हुए, एक महिला को मंच के ऊपर देख रहे थे। वह एक पुस्तक में से कलीसिया के सदस्यों को वर्णमाला के रूप में निश्चित कार्य दे रही थी। वह एक नाम पुकारती और उसे एक राज्य में नियुक्त करती, "जोन डोय,

तम्हें टैकसास (राज्य) को जाना है।" इत्यादि जैसे ही उसने "एम, तक" समाप्त किया। तब उसने अनुभव किया, कि उसकी प्रिय मित्र का नाम पेश नही हुआ था। उसने फिर से पुस्तक पढना आरम्भ किया, और कहने लगी, "मैं जानती हूँ कि, उसका नाम यहाँ लिखा है मुझे पता है कि, कई बार उसका नाम इस पुस्तक में लिखा है। तब वह गई और एक दूसरी महिला को अपनी मित्र का नाम जोकि एक पुरानी, और बड़ी किताब में, जो कमरें के दूसरी तरफ पडी थी। उसमे से ढूढने के लिए सहायता मागने लगी, तब वे दोनो पागलों की तरह उसका नाम खोजते हुए कहने लगी "मै जानती हूँ कि बार-बार," उसका नाम इस पुस्तक में लिखा है। उसी समय पर प्रभु मुझे पुस्तक दिखाने के लिए मंच पर ले गया। यह किताब दो भागों में छपी हुई थी, और एक भाग में नाम और दूसरे मे निश्चित रूप से किए हुए कार्य लिखे थे। मैंने अपनी आँखो से देखा कि, लगभग आधे नाम उस में से लापता हो गए थे, परन्तु सभी निश्चित कार्य वही पर थे।

इन नामों के लापता होने के इस दृश्य ने मेरे मन को बहुत ही भर दिया, और जब मैं इस दर्शन से बाहर निकला तो मुझे पता चला कि, यह एक विश्वासियों की पुस्तक थी। प्रभु मुझ से अपने विश्वासियों के बारे में बात कर रहा था कि, सभी विश्वासियों के पास निश्चित कार्य थे, परन्तु उनमें से लगभग आधे अभी तक बचाये नहीं गए थे। **वे बचाये नहीं गए थे- जैसे कि कलीसिया सोचती है कि, वे बचाये गए है।**

मैने प्रभु को बताया कि, मैं प्रत्येक के छोड़ कर चले जाने के लिए माफी मागता हूँ। प्रभु ने मुझ पर एक सत्य का भोझ रखा और मैं जानता था, कि यह मेरा नहीं, ब्लकि उसका न्याय था। मुझे नहीं पता था कि, वह बाद में मुझे सही आंकडा देगा। **प्रभु ने सन 1996 और तारीख 21 सितंम्बर में मुझ पर प्रकट किया, कि उन पलों में 48% प्रतिशत कलीसिया के लोग जो कहते थे, कि वे बचे हुए है, परन्तु सच में वे बचे-हुए नहीं थे।**
वे 48% प्रतिशत सीधे फाटक से वापिस मुड़ गये है, नरक की ओर, जोकि ज्ञान की कमी ओर रीति-रिवाजों और मनुष्यो की शिक्षाओं के कारणो की वजह से है!

“बचाया गया” शब्द को उचित रीति से विभाजित करना!

अनुभव
आप अपनी अनन्त मुक्ति को खो सकते
व्यवस्था इसको नही कर सकी

स्पष्ट बात
परमेश्वर की आज्ञा-पालना द्वारा मुक्ति
दण्ड
वाचा की प्रतिज्ञाएँ
नरक नही!
प्रिय-मनुष्य
दया का सही पक्ष
प्रभु अपनी इच्छा प्रकट करता है

“बचाया गया” शब्द को उचित रीति से विभाजित करना!

कई सालों पहले परमेश्वर मुझे मुक्ति की प्रक्रिया से अनन्त जीवत तक के बारे में सिखा रहा था। उसने मुझे दिखाया कि बाईबल, जैसे अब यह हमारे पास है जो “बचाया गया” शब्द में कोई भी भिन्नता नहीं करती, जब कि यह भौतिक रूप से मुक्ति की ओर संकेत कर रही है, इसी जीवन में मुक्ति की ओर! अंग्रेजी भाषा में दोनो शब्दो का अनुवाद “ बचाया गया” ही था!

जब परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया, तब मैं इसे समझा, परन्तु मेरे पास कोई युक्ति नहीं थी, कि यह समस्या मनुष्यों की झूठी शिक्षाओं के अनुसार अनन्त जीवन तक कितनी गहराई तक पहुचँती थी। और जैसा कि समय अनुसार लोगों के दण्ड के कारण, जोकि वहाँ पर नहीं होना चाहिए था। इस गलत अनुवाद का परिणाम यह है कि, समझ की कमी, और रक्तसंचित होता है, अनगिनित विषयों के लिए, जैसे कि परमेश्वर का राज्य, और बाहरी अंधकार में फेक दिए जाना, और पवित्रशास्त्र और बहुत कुछ इन्यादि को बारे में है। यह एक रिसते हुए जहर की तरह है, जोकि लोगों, सत्यों और परमेश्वर के प्रयोजनों को हानि पहुँचा रहा है। मानव जाति का शत्रु भी इन बातों से प्यार करता है।

कई वर्षो पहले मुझे इस शब्द "बचाया गया" के बारे में विशेष ज्ञान दिया गया। प्रभु ने मुझे बताया कि, "कोई भी मनुष्यों आपनी शिक्षओं को बीच में डाले बिना इसका अनुवाद नहीं कर सकता" चाहे यह मनुष्यों की शिक्षाओं के कारण हुआ, या यह केवल वास्तव में गलत अनुवाद से असंबधित हुआ हों। परमेश्वर प्रकट करता है कि, हमें उसके वचन का उचित रीति से विभाजन करे। यह गलत अनुवाद या अनुवाद की कमी, जोकि बहुत बड़ी गलतफहमी का करण होती है। जब बात मुक्ति से संबधित बड़ी कल्पना के रूप में होती है।

मैं आप से बाँटना चाहूँगा कि, क्या हुआ और तब हम पूर्ण तौर पर न समझने वाले कुछ प्रभावों की ओर देखेंगे, जहाँ हमारी अनन्त मुक्ति हमेशा के लिए विराजमान है। मैं भी आप से "शारीरिक मुक्ति" की प्रक्रिया को बाटूँगा या फिर "शारीरिक मुक्ति" प्राप्त करने के लिए, उस दिन परमेश्वर की दुल्हन के रूप मे हमारी आवश्यक उदाहरण होगा!

अनुभव

एक दिन जब परमेश्वर मुझे, "मुक्ति की अनन्त प्रक्रिया" के बारे में सिखा रहा था। तब उस समय मैं बाईबल पढ़ रहा था, तो कुछ शब्द अचानक आधा इंच, पृष्ठ ऊपर की ओर उठ गए। तब प्रभु मेरा ध्यान पवित्रशास्त्र में नीचें लिखे हुए शब्द "बचाया गया" की ओर लेकर आया।

1 पतरस 3:20
जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए।

प्रभु ने मेरे साथ " बचाये गए " शब्द के बारे में बातचीत करना आरम्भ किया। जो कि, यह शब्द बचाये गए, शब्द से भिन्न था, जोकि पौलुस ने मुक्ति से अनन्त जीवन तक के बारे में सिखाया था।

रोमियों 10:9
कि यदि, तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करें कि, परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

मुझे नही पता कि, कैसे मैं इस दर्शन में घिर गया था, या किस तरह मैंने इस शब्दों के अक्षरों को देखा, मैंने सोचा कि ये इब्रानी भाषा है, परन्तु वो कुछ अलग (भिन्न) प्रकार में थे। प्रभु मुझे निम्नलिखित वचन, यह पक्का करने के लिए कि, "अनन्त जीवन की मुक्ति" और शरीरिकि मुक्ति को दोनो में भिन्नता दिखाने के लिए ले गया, कि जो काम

हम उसकी आज्ञा मानने के द्वारा कर रहे है, और वह जो हम परमेश्वर की आज्ञा न तोडने के द्वारा कर रहे हैं।

मत्ती 5:19

इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं (व्यवस्था) में से किसी एक को तोड़े, और वैसे ही लोगो को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य मे सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान् कहलाएगा।

इस बात से मैंने अनुभव किया कि, वहाँ स्वर्ग में कई लोग ऐसे थे, जिन्होंने पृथ्वी पर किसी दूसरे मनुष्यों के सामने, यीशु में अपने विश्वास की घोषणा की थी। अनन्त मुक्ति को प्राप्त किया, यद्यापि उन्होने गलत ढंग से परमेश्वर के वचन को सिखाया था। कई लोगों ने तो इस प्रकार सिखाया, कि पानी में बपतिस्मा आपको बचाता है। या इस प्रकार कि आप उद्धार की प्रार्थना करने के द्वारा अनन्त मुक्ति पा सकते हो। ये लोग जिन्होंने परमेश्वर का वचन गलत रीति से सिखाया था, वे सभी स्वर्ग के राज्य में छोटे कहलाये गए, परन्तु वे अभी तक स्वर्ग में है, और बचाये गए। क्यों? क्योंकि उन्होने संयोग से एक वाचा की प्रतिज्ञा को अनुसार सही कार्य किया, यद्यापि वे इसे नही समझे थे! वाह, जोकि उनका एक सिखाने वाला अनुभव था। इस के बाद मुझे समझ दी गई कि, "क्यों" प्रेरित पौलुस ने एक मनुष्य को उसके शरीर के विनाश के लिए (शैतान) का सौपा था, इसलिए जो उसकी आत्मा को बचाया जा सके।

1 कुरिन्थियों 5:5

शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।

पौलस नही चाहता था कि, यह मनुष्य अपनी अनन्त जीवन की मुक्ति को खोये। वह जानता था कि, वे मसीह के इन्कार की सम्भावना के मार्ग की ओर जा रहे थे।

आप अपना अनन्त जीवन खो सकते हैं।

बाईबल में यह बात स्पष्ट है कि, एक मनुष्य अपने जीवन की मुक्ति को खो सकता है, परन्तु बहुत सारे लोगों ने इस तरह नहीं सोचा है। आप इसलिए अपने मुक्ति के अनन्त जीवन को नहीं खोते, क्योंकि आपने अपनी आत्मा के नये सिरे से पैदा होने के बाद पाप किया है। (जैसे बाईबल कहती है कि हम सब पापी है और गिर गए है) लोग मुझ से पूछते है कि, कैसे हम अनन्त जीवन की मुक्ति को खोते है और मैंने उन्हें बताया कि, कैसे मनुष्य अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए विपरीत दिशा में जाता है। यीशु को इंन्कार

करने का यहाँ एक उदाहरण है कि, यदि आप को गोली-बारी में, दूसरे के सामने लाकर कहा जाता है, कि आप यीशु मसीह का इन्कार करो, नहीं तो आप को गोली मार दी जाएगी। यदि आप इन्कार करते हैं, तो आप अपनी अनन्त मुक्ति को खोएँगे और आपका नाम मेमने की जीवन की पुस्तक से काटा जाएगा। यह एक उदाहरण की "कल्पना" है कि, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि, किस तरह से मनुष्य अपनी अनन्त मुक्ति को खो देते हैं। इसलिए हमेशा अपने विश्वास की घोषणा और अपने अंगीकार को पकड़े रहें, जोकि यीशु मसीह में है।

(मुक्ति की प्रक्रिया पर अधारित हमारी वैबसाइट पर जो फिल्म है, जो स्पष्टता के साथ, और आत्मिक रूप से प्रकट करती है कि, कैसे वाचा की प्रतिज्ञा के माध्यम से मनुष्य की आत्मा का नये सिरे से जन्म होता है। यह सत्य है और, यदि आप ध्यान दे रहे हैं, तो आप इसे अनुभव कर सकते हैं। मैं आपको यहाँ पर बहुत अधिक शिक्षा देने नही जा रहा हूँ, क्योंकि आप मेरी वैबासाइट के लिखे हुए, भागों में या फिर इनमें दी हुई फिल्मों से सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हो। क्योंकि जो अनुभव मैंने सिर्फ पक्षपातपूर्ण ढंग बाँटा है। मैं उसे जनता था, जो प्रभु मेरे मन के अन्दर बिठा रहा था कि, अनन्त जीवन की मुक्ति बहुत ही आसान है, क्योंकि क्रूस पर समर्थन के द्वारा यीशु ने वाचा को स्थापित किया। यह हर बार कार्य करती है और, मुक्ति की हर दूसरी किस्म का जोकि, हमारे द्वारा किए गए किसी भी कार्य का सम्बन्ध अनन्त मुक्ति के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की मुक्तियों के साथ है, क्योंकि अनन्त मुक्ति क्रूस पर यीशु मसीह के कार्य में ही है। इस जीवन में बहुत सारी मुक्तियाँ कुछ है, जिनमें हम भाग लेते हैं या फिर हम मसीह की सहायता से कार्य करते हैं, जैसे कि बाईबल प्रकट करती है।)

व्यवस्था ऐसा नही कर सकी थी

क्योंकि पाप करना परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ना है, और व्यवस्था के नियमों को तोड़ना पाप है। बाईबल स्पष्टता से बताती है कि, यीशु मसीह ने वह किया जो व्यवस्था नहीं कर सकी थी।

रोमियों 8:3
क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया। अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान हाने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दीः

प्ररितों के काम 13:39
और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नही ठहर सकते थे, उन्हीं सब से

हर एक विश्वास करने वाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।

इसलिए हम देखते हैं कि, यदि व्यवस्था हमे अनन्त जीवन नही दे सकी थी (यह एक उपहार है, जो कमाया नही जा सकता) तो हमें यह भी देखना चाहिए, कि व्यवस्था, या पाप, हमसे हमारे अनन्त जीवन को छीन नही सकता है। अपने आप से, व्यवस्था का तोड़ना (पाप), हमसे हमारी अनन्त मुक्ति को नही छीन सकता है। क्योंकि हमारी अनन्त मुक्ति (उपहार) यीशु मसीह में है, न कि व्यवस्था में है।

हमारा पाप करना किसी भी तरह से हमारे शत्रु के लिए बहुत सारे द्वारों को खोल सकता है। तब एक दुष्ट-आत्मा अन्दर आ सकती है, और किसी एक को नियन्त्रण मे लेकर उस मनुष्य से यीशु के लिए इन्कार करवा सकती है। इस उदाहरण में घमण्ड की आत्मा घातक हो सकती है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि "क्यों" पौलुस ने उस मनुष्य को शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौपा था। इसलिए वे अपनी अनन्त मुक्ति को पूर्ण रूप से खोने के शिकार नहीं बने। (मैं यहाँ यह समझाना चाहूँगा कि, यदि एक मनुष्य निस्संदेह दुष्टात्माओं द्वारा अधीन होता है, तो एक दुष्ट-आत्मा मनुष्य में बोल सकती है, और उस से यीशु को इन्कार भी करवा सकती है। इस बात का यह मतलब नहीं निकलता कि, उस मनुष्य ने यीशु मसीह का इन्कार कर दिया है, परन्तु परमेश्वर जानता है कि, यह दुष्ट आत्मा ने किया। यहाँ एक स्पष्ट अंतर है।)

प्रभु से मिले इस चित्र के बाद (हमारे कार्य की मुक्ति से अनन्त मुक्ति का अलगाव) मुझ में बोया गया। प्रभु ने पवित्रशास्त्र में से कई "क्यों के" भेदों को खोला। मैंने पहले से ही एक (क्यों) शब्द के बारे में आपको बताया है कि, क्यों पौलुस ने एक मनुष्य को शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा था। (यहाँ पर मेरी इस वैबसाइट पर ओर भी बहुत सारे "क्यों" को प्रकट किया गया है।)

इस शरीरिक जीवन में से अनन्त जीवन की मुक्ति के बीच में उस अलगताई की प्राप्ति के बाद, प्रभु ने मुझे दिखाया कि, मेरे सिर के ऊपर एक मुक्ति का टोप था। मैं हैरान था कि, मैंने न तो इसे माँगा और न ही इसके बारे सोचा था। यहाँ पहले ही से वैबसाइट पर कुछ है:

प्रभु फिर मुझ से दर्शन के बाहर बोला, "यह उन के लिए गर्व की बात है कि, वे सोचते है कि, वे कुछ भी जान सकते हैं, परन्तु मुझ से प्राप्त करके नहीं!"

मुझे यह बताया गया कि, मैं समझू कि, मेमने के विवाह का उत्सव कैसे घटित होता है, और मैं अनन्त मुक्ति की प्रक्रिया को समझता हूँ। सब कुछ कही ओर है, मैं केवल कुछ सीमा तक जानता हूँ।" यह सोचना खतरनाक है कि, हम परमेश्वर के प्रकट किए बिना, हम कुछ जानते हैं। तथापि अनगिनत लोग जो यह सोचते हैं कि, वे बहुत सारे

विषयों को और बहुत सारी बातों को जानते हैं। परन्तु उनमें से बहुत सारे लोग यह अनुभव नहीं करते कि, वे केवल उन उदाहरणों मे चल रहे हैं, जिनमें वे पले बढ़े हुए हैं। हमें इन गलत उदाहरणों और सही उदाहरणों के बारे में अवश्य बात करनी चाहिए। या हमें इसकी पूर्ण तस्वीर नहीं मिलगी। यह बिल्कुल उसी तरह है, कि जब परमेश्वर ने मुझे बताया "तुम्हें यह जानने की आवश्यकता है कि, पवित्रशास्त्र क्या जानने को नहीं कहता और क्या यह जानने के लिए कहता है।" इसलिए यदि हम गलत उदाहरणों नहीं जानते, तो हम वास्तव में सहीं उदाहरणों की पूर्ण तस्वीर को देख नहीं पाएँगे। प्रभु ने यह प्रकट किया कि, यह कैसे इतना गंभीर हैं।

मैंने इस लेख को लिखने के बाद आरम्भ किया कि, हमें **20-12-2009** एक सेवकाई की सभा में, "नीम हकीम (बुद्धिमान समझने वाले)" शब्द के साथ कुछ सूचना दी गई थी। परमेश्वर यहाँ पर अलोचनात्मक नही हुआ है। परन्तु केवल सच्चाई प्रकट कर रहा है, कि सत्य हमें स्वतन्त्र कर सकता है, यदि हम इसे जाने देते हैं। साधारणतया, नीम हकीम (बुद्धिमान समझने वाले) वह लोग हैं, जो यह झूठा दावा करते हैं कि, उनके पास कोई कला या विशेष ज्ञान है। और संसार के आरम्भ में वापिस जा रहे हैं। मानो कि, यह एक चलते-फिरते उपचार करते हुए, विक्रेता की ओर संकेत करता है।

मुझे फिर **24-12-2009** में स्वप्न दिया गया और अचानक अनुभव हुआ कि, प्रभु ने यह स्वप्न मुझे इस लेख में प्रयोग करने के लिए दिया है। क्योंकि मैं नीम हकीम (बहुत समझने वाले) लेख की ओर देख रहा था।

यह बहुत ही लम्बा एक दृश्य था, जिसमें लोग दूसरे लोगों के द्वारा नियंत्रित हो रहे थें। सभी नियंत्रण करने वाले के वस्त्रो के कारण उसी तरह से वे नियंत्रण हो रहे थे, जो लोग नियंत्रण में हो रहे थे, वे बन्दीग्रह में थे, परन्तु उस में सलाखें नहीं थी। इस दृश्य में मैं पहली बार नियंत्रित किया जा रहा था। परन्तु वहाँ एक ऐसा संकेत आया। जहाँ मैं कई दूसरे लोगों के द्वारा लम्बे समय से नियंत्रण में नहीं किया जा रहा था। (मैं स्वतन्त्र हो, चुका था) यह दृश्य निरन्तर चल रहा था, और मैं ध्यान से उन लोगों को जो दूसरे लोगों के द्वारा नियंत्रण मे हो रहे थे, देखता रहा कि, वे उन्हें उस अदृश्य बन्दीगृह मे छोड़ दिए गए। अधिक से अधिक समय में लोग एक या दो दूसरे लोगो को नियंत्रण में कर रहे थे। यह केवल यहाँ था, और एक अदालती-आँगन में अलग-अलग समयों पर, जगह पर भीड़ दिखाई देती थी।(मेरे उस दृश्य में से जागने के बाद मैंने अनुभव किया कि, जो नियंत्रण कर रहे थे, वे संगठित नहीं थे। और वास्तव में अनके पास किसी को नियंत्रण करने का अधिकार नहीं था। वे अपनी ही बातें कर रहे थे। और वे नीम हकीम (बहुत समझने वाले) लोग ही थे।)

स्पष्ट बात

परमेश्वर कहता है, "आओ हम मिलकर सोच-विचार करें!" यह निस्संदेह इस बात की ओर संकेत करता है कि, हमें अपने दिमागों को इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। मैंने कई बार कहा है कि, यदि मसीही लोग अपने विचारों का प्रयोग करने की बजाय, सिर्फ सत्य की बातों को मानते रहें, तो वे अनुभव करेगे कि, उनके पास उनके जीवन में झूठी शिक्षा और विचार है। मैंने इस भाग को स्पष्ट बात कहकर चुना है, क्योंकि परमेश्वर के निर्देष पर, मेरा विचार कुछ ऐसी अनुचित योजानाओं और अनुचित बातों से पर्दा उठाने का है। पवित्र-आत्मा की सिखाने की योग्यता के अनुसार प्रभु ने कहा "यदि कुछ बातें आप के ध्यान को साधारणो तौर पर आकर्षित करती हैं, तो इसका यह अर्थ बनता है कि यह सत्य है।" "अर्थ पूर्ण होने" का सम्बन्ध हमारी समझ के प्रयोग करने से और बातों को संगठित करने से है।

मसीही लोग गंभीर व्यापार में हैं, और वहाँ गलती का कोई भी अवसर नहीं है, मैं इस कारण नहीं बचाया गया। क्योंकि पादरी वास्तव में जानता और अनन्त जीवन की मुक्ति तक के कार्यो को समझता है। परन्तु मैं पवित्र आत्मा की अगुवाई के कारण बचाया गया था। क्यों इस मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया था? परमेश्वर चाहता है कि, यह समस्या ठीक की जाए।

कई वर्षो से परमेश्वर के बताने के बाद, उसने मुझे अनन्त जीवन की मुक्ति की प्रक्रिया के बारे में सिखाया कि, यदि वह मेरे जीवन में प्रवेश न करते, तो मेरी बेटियाँ अभी तक न बचाई गई होती। यह बहुत ही सम्भावित है, जैसे कि उस दिन के लिए, वे अभी तक बचाई नहीं गई होती। मैं प्रभु का आभारी हूँ!

मैं एक कहानी के साथ आरम्भ करूँगा, जोकि साधारणीय न्यायपूर्वक है। यहाँ बहुत सारे ऐसे मसीही लोग है, जो मृत्यु के बिस्तर (चारपाई) पर अंगीकार करते है। फिर भी उनमें से कुछ ऐसे लोग भी है, जो बिना मृत्यु के बिस्तर की स्थिति में कहेगे कि, सचमुच में कोई बचाया नहीं गया है। (अनन्त जीवन तक) क्योंकि उनके जीवन में काई भी परिर्वतन नहीं हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में कुछ ऐसे प्रकार के पाप से छुटकारा प्राप्त नहीं किया था। ये दोनों विचार एक दूसरे के साथ मेल नहीं खाते है। यदि हम दोनों विचारों को सच मानते है, तो तब हमे किसी मनुष्य को मार देना चाहिए। जों उसके तुरन्तु अंगीकार करने के बाद इस पहले कि, उस मनुष्य को पाप करने का अवसर मिले। इस बात के बारे में जरा ध्यान से सोचिये।

पाप से मुक्त होना (आप के किसी दूसरे मनुष्य के सामने, इस घोषणा के बाद, कि यीशु कौन है) शारीरिक रूप में मुक्ति लाता है। यह मानवता के शत्रु का दरवाज़ा बंद कर

देता है। परमेश्वर प्रत्येक से ऐसा करने के लिए चाहता है, परन्तु लोगों का ऐसा कहना है कि आप को अवश्य पाप से मुक्त होना चाहिए। (आप के किसी दूसरे मनुष्य के आगे इस घोषणा के बाद कि, यीशु कौन है) या आप धर्मशास्त्र के कार्यो के द्वारा अनन्त जीवन की मुक्ति लिए बचाये नही जाते होः पौलुस ने स्पष्टता से कहा कि, हमारी अनन्त जीवन की, मुक्ति हमारे कार्यो के द्वारा नही, परन्तु केवल यीशु मसीह के द्वारा ही है।

गलतियों 2:16

तौभी यह जानकार कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हमनें आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि, हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें, इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।

पौलुस आप सब को बचाने के लिए, व्यवस्था के विचार या पाप की अनुपस्थिति के विरूद बोला था, आपको बचाने की लिए!

गलातियों 5:4

तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, (पाप नही करते) मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।

इस समझ की गलती के कारण कि, अनन्त जीवन की मुक्ति कहाँ विराजमान है जोकि, हमारे विचारों में गलत विचारों को टपकने (प्रवेश) की अनुमति देती है। मैंने पादरीयों को यह कहते सुना है कि, लोग नरक में जा रहे हैं, यदि वे अपने जीवनों में से पाप को बाहर नहीं निकालते। कौन सी अनन्त जीवन की मुक्ति कार्यो द्वारा प्राप्त होती है, बाईबल कहती है कि, हम सब ने पाप किया और उसकी महिमा से वंचित हो गए। इसलिए हम इन पादरीयों को देखते हैं, जिनके अपने जीवन में भी पाप है और वे अपनी ही शिक्षाओं के अनुसार चलतें हैं। वो कुछ भी नहीं कर सकेगें।
इसके बारे में सोचिये!

परमेश्वर की आज्ञा-पालना द्वारा मुक्ति

यहाँ एक ओर दूसरे प्रकार की निर्दोषता है, (मुक्ति) जोकि कामों के द्वारा आती है, परमेश्वर की आज्ञा-पालना के द्वारा

याकूब 2:25

वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा, और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या वह कर्मो से धार्मिक न ठहरी?

राहाब (और उसके घराने) ने एक ईनाम के रूप में शारीरिक मुक्ति को प्राप्त किया।

यहोशू 6:17
और नगर और जो कुछ उस में है, यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी; केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर में हो, जीवित छोड़े जाएँगे, क्योंकि उसने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रखा था।

नूह ने भी परमेश्वर के ऊपर विश्वास रखने के द्वारा (और सभी जो उसके घर में थे) शारीरिक मुक्ति को अपने कामों और परमेश्वर की आज्ञा-पालन के द्वारा ही प्राप्त किया। यह सब मिलकर कार्य करता है। इसलिए कि, हम यहाँ एक निर्दोषता और एक प्रकार की शारीरिक मुक्ति को परमेश्वर की आज्ञा के पालन के द्वारा देखते हैं।

मैंने पवित्रशास्त्र में प्रकाशित की हुई दो निर्दोषताओं को या मुक्तियों को आप से बाँटा है। परन्तु इस प्रकार की शारीरिक मुक्ति के बारे हमारे दिन में क्या असर पड़ता है? आप कैसे पसन्द करना चाहेगें कि, परमेश्वर इस के लिए आप से यह कहे?

परमेश्वर की उपस्थिति एक मधुर सुंगधि की तरह आप को प्रसन्नता प्रदान करती है, क्योंकि तुम मेरे हो। मेरी उपस्थिति जीवनो में आशीषें लाती है जिससे संसार अपरिचित है। यह इसलिए है क्योंकि मैंने तुम्हे अपने हाथों से पकड़ा और सम्भाला है। मैंने तुम्हे संसार से एक अलग होने वाला हृदय दिया है। जो संसार देता है, वह सदा के लिए नही होता। सच्ची सुन्दरता मेरे द्वारा बनाई गई है। मनुष्य के द्वारा कुछ भी रचा नहीं गया है। शैतान आप के ध्यान को दूसरी ओर आकर्षित करने की पूरी तरह से कोशिश करता है, परन्तु आप सब पर यह कार्य नही कर रहा है। संसार ने गठजोड़ के बाहर जोर की चोट से हमला किया है। दृचित्तेपन से दूर रहो। केन्द्र बिन्दु! मेरे ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करो!

मैं एक ऐसे दम्पति (जोड़े) को जानता हूँ जिन्होंने अपनी स्वर्ण सभा में इसे प्राप्त किया। ये वही लोगो में से है, जिसको परमेश्वर ने **13/9/08** में हाथसटोन के तूफान से बचाया था। जो खाड़ी से फूटबाल मैदान की दूरी पर रहते थे, उन्हें विशेष जगह से हटने का आदेश दिया गया था। प्रभु ने उनको बताया था कि यह किस प्रकार का तूफान होगा और उन्हें वह लोगो को बताने के लिए नहीं कहा गया था। वह उन पर प्रकट करेंगे जिन पर प्रभु प्रकट करना चाहेंगे। यह मेरे लिये स्पष्ट है कि, परमेश्वर अपनी योग्यता की तस्वीर प्रस्तुत करना चाहता था कि, वह अपनी दुल्हन को उसकी आज्ञा-पालना के द्वारा रक्षा कर सकता है। उस मनुष्य ने कहा कि, यदि वे उसकी आज्ञा का पालन नही करेंगे, तो वे अपने अधिकार का खो देगे। प्रभु ने उन्हें कोई चुनाव नहीं दिया कि, वे कहाँ जाए।वे इस

जीवन मे बहुत बड़े दुःख से बचाये गए थे। वे निर्दोष थे और शारीरिक रूप मे बचाये गए थे, केवल इसी तरह से जैसे कि कुछ लोग बाईबल में अपनी आज्ञा-पालनं और कार्मों के द्वारा बचाये गए थे, और इस दिन मे भी ऐसा ही हुआ। यह "अनन्त जीवन की मुक्ति" के लिए बचाये नही गए, परन्तु "केवल शारीरिक रूप में ही बचाये गए थे" वे अपने विश्वास की निर्दोषता से और अपने आज्ञा पालन की जल्दबाजी के द्वारा बचाये गए थे।

उन्होंने क्या किया था? उन्होंने "प्रक्रिया में चलना आरम्भ किया किस प्रकार से चले जैसे कि प्रभु की दुल्हन चलती है" वे कलीसिया सम्पर्क से बाहर आए और उन्होंने अपने आपको तीन दाग़ो सम्पर्क से मुक्त किया था और बाद में सबसे महत्वपूर्ण सम्पर्क "आत्मा की बातों सम्पर्क का अनुगमण करना आरम्भ किया! उन्होंने स्वर्ण सभाओं सम्बन्ध को प्राप्त किया था, जैसे कि आप देख सकतें हैं उनके वचन के पाठन से प्रभु उन से बहुत प्रसन्न हुआ था। उन्होंने परमेश्वर को उन के साथ रिशता बनाने की अनुमति दी थी, जोकि किसी ओर दूसरे प्रकार से नही आती है। यह इसलिए है, क्योंकि यह प्रभु की रचना है!

मैंने यह कहानी आपको इसलिए सुनाई है, क्योंकि मसीहीयों को यह देखने की आवश्यकता है कि, यहाँ एक निर्दोषता और एक मुक्ति है, जो इस दिन में प्रभु की आवाज के आज्ञा-पालन द्वारा शारीरिक रूप में आ सकती है। जैसे कि "शारीरिक क्रिया" और वैसे ही "अनन्त जीवन की क्रिया" को सीखने के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन अंतिम दिनों के दौरान दोनों में चलने की आवश्यकता है। मसीहीयों के लिए यह अनुभव करना महत्वपूर्ण है कि प्रभु अपनी दुल्हन को बाहर ला रहा है, और उन्हें समझने की आवश्यकता है कि, वह अब इन दिनों में क्या कर रहा है। जब परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुटकारा दिलाया, जब लोग पानी के तेज बहाव में प्रवेश कर रहे थे, तो उस समय परमेश्वर क्या कर रहा था। जब वे उस बहाव से बाहर निकले तो, वे भटक गए थे। यह अब भी ऐसा ही है! वह अपनी बेदाग़ दुल्हन को प्रकट कर रहा है। मसीहीयों को उसके बहाव में आने की आवश्यकता है। फिर भी प्रभु ने प्रकट किया है कि, थोड़े इसे जानते है!

हमें मसीही होने के नाते दो विभिन्न प्रकार की निर्दोषताओं और दो विभिन्न मुक्तियों के अलगाव को सीखने के लिए ध्यान देना चाहिए, सख्या एक, अनन्त निर्दोषता (अनन्त मुक्ति) को यीशु मसीह के द्वारा होना और संख्या दो, हमारी शारीरिक निर्दोषता की मुक्ति का इस पृथ्वी पर शारीरिक रूप में होना। क्या मैंने इस दम्पति को पापरहित होने के बारे में बताया? न तो मैं और, या फिर आप पापरहित है! जैसा कि प्रभु ने कहा कि, हमें मसीह होने के नाते दुल्हनता पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, यदि शत्रु हमारा ध्यान पाप पर केन्द्रित कर सकता है, तो फिर हम दुल्हन होने पर कभी भी केन्द्रित नहीं होंगे। दोनों पर एक ही समय में ध्यान केन्द्रित करना सम्भव नहीं है। मुख्य केन्द्र दुल्हनता होने

पर होना चाहिए और पाप पर केन्द्रित दूसरा स्थान होना चाहिए।

दण्ड

परमेश्वर दण्डों को रोकना चाहता है। मुझे लोगों ने बताया है कि, उन्होंने छोड़ दिया है, क्योंकि वे इसके पीछे हटने से पाप में गिर गए है। कुछ इस प्रकार सोचते हैं कि, वे नरक में जा रहें हैं, क्योंकि उन्हें इसी प्रकार से प्रचार किया गया था। यह बड़े दुःख की बात है, क्योंकि कि, वे अपने हृदय में ऐसी कुंजी की पकड़ते हैं कि, यीशु मसीह परमेश्वर का सच्चा पुत्र है और वह उनके पापों के लिए मरा है। हमारे कार्यो के द्वारा अनन्त मुक्ति की गलत धारणा कहाँ से आई है? क्या यह कलीसियाओं के द्वारा प्रेरित हुआ था, या फिर स्वय शैतान द्वारा?

अजगर की आत्मा कार्यो के द्वारा अनन्त जीवन की मुक्ति के साथ भरपूर सफल थी। मुझे याद है कि, कई वर्षो पहले जब परमेश्वर ने मुझे एक दर्शन के बारे में बताया था। जोकि एक टेप (कैसेट) पर दिया गया था और मैंने उसे कुछ कलीसियाओं में बाँटा जोकि, एक नरक में ले जाए गए, मनुष्य के बारे में था। वहाँ नरक में उनके लिए विशेष प्रकार की शारीरिक यातनाएँ थी। जिन्होंने परमेश्वर की दी हुई सेवकाईयों को आरम्भ या समाप्त नही किया था। हमारी प्रार्थना सभा में एक ऐसा मनुष्य था, जो इस टेप (कैसेट) को दिखाना चाहता था। परन्तु प्रभु ने मुझे ऐसा करने से मना किया, यह इस प्रकाशन के द्वारा हुआ क्योंकि उस मनुष्य को अजगर के बारे में अनुभव था। प्रभु मुझे इस प्रकाशन के द्वारा बता रहे थे कि, यह अजगर के दृश्य का अवचेतन चित्र था, उस मनुष्य के बारे में, जो मनुष्य नरक में ले जाया जा रहा था। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के द्वारा दी हुई सेवाकाई की बुलाहट को पूरा नहीं किया था। उस मनुष्य के अनुभव से विश्वासीयों के दण्डों के प्रति मेरी आँखें अचानक से खुल गई, यह कार्यो द्वारा मुक्ति थी और यह एक अजगर के अनुभव के द्वारा कलीसिया में पेश किया गया था।

आम-तौर पर कलीसिया अजगर की आत्मा से अनजान है। यह नहीं जानते कि अनन्त जीवन की मुक्ति कहाँ विराजमान है। क्या यह इसका अंश है, जो अनजाने में अजगर को कार्य करने की अनुमति देता है। हमें अवश्य समझना चाहिए कि, मसीह में उसके सर्म्पक में और उसकी दुल्हन बन के चलने में दण्ड की आज्ञा नहीं है। हमें हमारे अंदर दण्ड का भाव नहीं रखना चाहिए। यहाँ हमारे भाग में दण्ड के बिना, सही तौर पर बाते करने और बातें बोलने के सही ढंग हैं।

जैसे कि मैंने कहा है कि, परमेश्वर दण्डों को रोकना चाहता है। एक नौजवान पुरूष ने मुझ से फोन पर सम्पर्क किया और मुझे अपने जीवन के एक विशेष पाप के बारे में बताया था, जिसे वह समाप्त करने का कार्य कर रहा था। उसने यह वचन दिखायाः

1 यहून्ना1:9
यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारें पापों को क्षमा करने और हमे सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

उसने मुझे बताया कि, वह अपने पादरी के पास नहीं जा सकता था, नहीं तो वे उसे कलीसिया से बाहर निकाल देंगे। उस दण्ड को देखें, जिसके बारे में प्रभु बात कर रहा है। किसी न किसी तरह उसने मेरे समाने अपने पाप का अंगीकार किया और मैंने उसे बताया कि, प्रभु तुम्हें छुड़ायेगा। मैं नहीं जानता था कि, कितनी देर बाद, परन्तु मेरी सोच के अनुसार हम चार या पाँच महीनों के बाद दोबारा फिर मिले और उस जवान पुरूष ने बताया कि, फोन काल करने के बाद उसे पाप कोई समस्या नहीं थी। प्रभु उसे छुटकारा दे चुका था! वाचा की प्रतिज्ञा जोकि "शारीरिक रूप में मुक्ति के साथ है, उसने कार्य किया।

वाचा की प्रतिज्ञाएँ

हम जैसे मसीहीयों को समझने की आवश्यकता है कि, वाचा की प्रतिज्ञाओं की धारणा स्वतन्त्रता से कार्य कर रही है, और यह नही मानना चाहिए, क्योंकि उनमें से एक ने हमारे जीवनों में कार्य किया है। यहाँ एक पवित्रशास्त्र है, जिस में से कुछ पादरी सुझाव देते हैं, कि यदि आप ने ऐसा किया तो आप अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे।

प्राकशित वाक्य 3:20
देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।

जब मैं लगभग 8 या 9 वर्ष का था, मेरे दो भाई और मैं रविवार के दिन अपनी माता जी को परेशान कर रहे थे। वह रविवार को अखवार पढ़ने का प्रत्यन कर रही थी, और वह बाहर खड़ी हमारी पीकप (गाड़ी) में अखबार पढ़ने के लिए गई। हम उसके पीछे गए और हम अभी तक उसे तंग कर रहे थे। उसने बहुत जल्द ही पीकप (गाड़ी) को चालू किया और कहने लगी कि, मैं छोड़ कर जा रही हूँ और सड़क की तरफ चली गई। मैंने जवान होते हुए, यह सोचा कि वह सदा के लिए हमें छोड़ कर जा रही है। मैं एक मील के आठवें भाग के लगभग भागकर दक्षिण की ओर अपनी कृषि-भूमि की एक छीटी-सी नदी को पार किया। मैं परमेश्वर के आगे चिल्ला कर कहने लगा कि, उसे वापिस लाओ, और अपनी पूरी शक्ति के साथ परमेश्वर को खोजने लगा। मैंने एक आवाज को यह कहते हुए सुना कि, "एक आदमी अपने अनुभवो का प्रतिफल पाता है!"

मैं इस के साथ हैरान होते हुए, घर की ओर चल पड़ा। क्योंकि मुझे उस समय नहीं

पता था कि, यह परमेश्वर था। मैंने महसूस करना शुरू किया कि, कुछ लोगों को मैं जानता था, जोकि मतलबी दिखाई देते थे। इसलिए उनके बोलने के कारण उनके जीवन में कुछ हुआ। उनके कार्य के ढंग से, वे नाटक कर रहे थे। मैने यह देखा जब मैं स्कूल बोर्ड़ में था और मेरे जीवन में यह जानते हुए कि, इसके द्वारा अवश्य ही लोगों को क्षमा करने में मुझे सहायता मिलेगी। यह जानते हुए कि, कुछ लोगों का ऐसा कार्य करने या सोचने के पीछे कोई कारण है।

इस कारण मैं इस अनुभव को लाया, क्योंकि मैं जानता था कि, इसका सम्बन्ध परमेश्वर को अपने पूरे हृदय से खोजना था और उसने मुझे उत्तर दिया। फिर भी मैं बचा नहीं था, और जब तक मैं उच्च स्कूल में था, तब तक मेरी आत्मा ने नये सिरे से जन्म नहीं लिया था।

द्वार खोलो (था) (और) "मैं उसके पास भीतर आऊँगा, और उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ," यह मेरे जीवन में अनन्त जीवन की वाचा की प्रतिज्ञा से पहले हुआ और इसने मेरे जीवन में कार्य भी किया था। कुछ लोग कहेंगे कि, यह परमेश्वर नहीं था, जो मुझ से बोला। इसके कारण जो उसने कहा था। मैं इसे जानता था और जो मैं प्रार्थना कर रहा था। उसके बारे में उसने मुझे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बातों को बताया था। (जो मैं प्रार्थना कर रहा था, सच में वह इस बारे में नही थी कि, मेरी माता जी ने छोड़ा नहीं था) उसने यह सब मेरे जीवन में किया। वह आप के जीवन में भी करेगा, क्योंकि उसका महान प्रेम आपके लिए है, और वह आपको अच्छा बनायेगा। किसी भी कठिन समय में आप उसकी खोज कर रहे हो, और आप द्वार खोलते हो। तो तब वह आपको आपके विषयों के ऊपर कुछ विभिन्न प्रकार से बता सकता है। यदि आपके बच्चो को कुछ जानने की आवश्यकत से, परन्तु वे आप को एक निश्चित समय पर नही सुन रहें, तो क्या आप उन्हें वह नहीं बतायेंगे कि, उन्हें किस चीज की आवश्यकता है, जब वह सुन रहें है। इस बात में हम परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं। इसलिए क्यों मसीहीयों का भी स्वर्ण सभाओं से सीखने की आवश्यकता है ".....द्वार खोलो," निरन्तर सीखने के लिए सम्पर्क।

इसलिए हम इस अनुभव को और उस नौजवान पुरूष के अनुभव को, जिसने अपने पाप के अंगीकार के लिए मुझे फोन किया था। हम देखते हैं कि, वाचा की प्रतिज्ञाएँ स्वतन्त्रता से कार्य करती है कि यह देखने के लिए अति महत्वपूर्ण है कि, वाचा की प्रतिज्ञा जोकि "अनन्त जीवन" देती है और स्वतन्त्रता से कार्य करती है, यह वाचा की प्रतिज्ञाएँ हैं, जोकि "इस शारीरिक जीवन में भी जीवन देती है!"

नरक नहीं!

यहाँ एक ओर प्रकार की झूठी शिक्षा है, जिसे मैं एक महत्वपूर्ण मुख्य बात की अगुवाई के लिए प्रयोग करना चाहता हूँ। मेरा एक मित्र जो मुझ से फोन और ई-मेल के माध्यम से सम्पर्क करता था। उस बात-चीत के दौरान यह प्रकट हुआ कि, वह कुछ लोगों के विरूद खड़ा हुआ था जिन्हे वह जानता था, उनमें से कुछ प्रसिद्ध लोग थे। जो विभिन्न प्रकार की शिक्षाओं में गिर रहे थेः प्रत्येक गलत शिक्षा में जा रहे थे कि, वे सब बचाये जाएँगे। उनका कहना था कि, सदा के लिए कोई भी नरक नहीं है। इसके बाद में ई-मेल की बात-चीत में, उसने मुझे बताया कि, उसे बहुत कुछ कहा जा रहा था। और उसे इस प्रकार बताया गया कि, वह नरक में जा रहा है! उफ! यहाँ उन लोगों में से एक है, जो कहता है कि, कोई नरक नहीं है, परन्तु किसी को बता रहे थे कि, कई लोग नरक में जा रहें हैं! मेरा अनुमान है कि, हम यथार्थ ऐसे लोगों को बुद्धिमान कह सकते हैं। बिना सोचे-समझे बोलना खतरनाक है, परन्तु बिना सोचे-समझे सिखाना भी एक घटिया बात है।

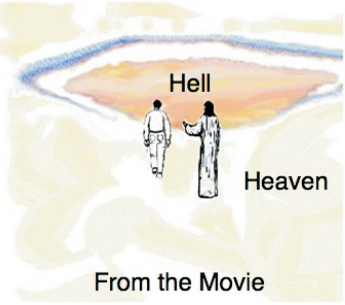

(मैं स्पष्ट साक्षी देता हूँ कि, वहाँ एक नरक है जैसा कि, मैने इसे स्वर्ग से देखा था)

यहाँ मैं जो कुछ बातें आप को बताना चाहता हूँ, जोकि प्रभु ने मुझ से कहा, जब वह अनन्त मुक्ति के बारे में, मुझे सिखा रहा था। उसने कहा, "आत्मा का नये सिरे से जन्म प्राप्त करो और तब मैं उस पर भीतर से कार्य करूँगा!" उसने मुझको यह भी बताया कि, कभी भी यह बात सच न मानना कि कोई पादरी (बड़े नामो में) बचाया गया है। मेरी वैबसाइट के मुख्य पृष्ठ पर, वहाँ एक सम्पर्क (link) के ऊपर पादरी जैरिको की गवाही है, जिसने कई लोगों को मुक्ति की प्रार्थना द्वारा अगुवाई का प्रचार किया, और बहुत सारे लोगों को अंगीकार करवाकर बपतिस्मा दिया, परन्तु वह खुद बचाया नही गया था। उसने यह सब कुछ खुद के द्वारा किया था, परन्तु फिर भी उसकी आत्मा ने कभी भी नये सिरे से जन्म नहीं पाया था! हमें महसूस करना चाहिए कि, इसी प्रकार से कलीसिया में झूठी शिक्षाऐं इस बारे में आ सकती है और इस कारण 48% प्रतिशत ऐसी विश्वासीयों की आत्माओं ने नये सिरे से जन्म नहीं लिया है (हम यह भी जानते हैं कि, अजगर की आत्मा ने, उनको भी उलझन में डाल दिया है, जिनकी आत्माओं का नया जन्म हुआ है और जिनके सोते में अंधेरा है। सम्पर्क)

परमेश्वर का मनुष्य के भीतर और बाहर से कार्य करने की योग्यता मे भिन्नता है। यदि यह सच नही होता, तो वह यह नही कहता कि , "आत्मा का नये सिरे से जन्म प्राप्त करो और तब मैं उस पर भीतर से कार्य करूँगा!"

यह नज़र आने वाली एक बहुत बड़ी रूकावट है। यह अनुभव बहुत ही महत्त्वपूर्ण होना चाहिए या फिर परमेश्वर हमें नही बतायेगा। ये विश्वासी वहाँ, कोई नरक नहीं है, कोई शैतान नहीं है, और इस तरह वे सम्भावित तौर पर, निस्संदेह ऐसे उम्मीदवार हैं जिनकी आत्माओं का नये सिरे से जन्म नहीं हो रहा है। हम नहीं जानते, परमेश्वर जानता है, परन्तु हमें सारी घटनाओं को पहचाननें और इस के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है।

प्रिय-मनुष्य

जब मैं यह लेख लिख रहा था, तब परमेश्वर ने मुझे एक दृश्य दिया। **1-1-2010** पर, जिसे में लोगों को एक बहुत ही सख्त टॉफी (गोली) खाने को दी गई थी। यह बहुत ही ज्यादा सख्त थी, क्योंकि उन्हें इसे चबाने के लिए पीछे के दाँतों का प्रयोग करना था और मैं हैरान था, क्योंकि वे ऐसा कर सकते थे। यह टॉफी एक पत्थर की तरह थी! यह सुनहरी रंग जैसी और मीठी थी। (परन्तु बाहर की तरफ से) इस दृश्य से यह प्रकट हुआ था कि, इस तरह से लोगों ने अपने प्रिय मनुष्यों को मारने का प्रयास किया था। यह प्रिय मनुष्य सुनहरी बालों वाले थे (चमचमाते लगते) जैसे कि उनके बालो में थोड़ा सा सोना मिला हुआ था। मैंने अनुभव किया कि, इस दृश्य का सम्बंध इस लेख से है, और सच में यह इसी लिए दिया गया था। क्योंकि परमेश्वर साधारणीय चिन्ह के रूप में इसे प्रकट कर रहा था कि मसीहीयों को क्या करने की आवश्यकता है।

निर्मल मुक्ति के ज्ञान का सम्बंध सुनहरी रंग के साथ है, और यह जानकारी प्रभु के सच्चे सम्बन्ध के लिए "आह कितरी ही मीठी" बात है! यह स्वतन्त्र करने वाली और चटटान जैसी मजबूत है! इस कारण प्रिय मनुष्यों के सुनहरी बालो में थोड़े से सोने की मात्रा का सम्बन्ध उनकी मुक्ति की शिक्षाओं के अनुसार, सच की थोड़ी सी मात्रा के साथ है। आजकल विभिन्न प्रकार की संस्थाओं (गुटों) के पास उनके अपने ही तरीके (प्रिय मनुष्यों) की अनन्त जीवन की मुक्ति है। यहाँ कुछ इस प्रकार है:

कुछ कलीसियाएँ कहती हैं कि, आप को अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए उनकी मंडली को सदस्य बनना जरूरी है। "कार्यो द्वारा अनन्त जीवन की मुक्ति"

कुछ कहते हैं कि, आप को अवश्य विशेष प्रभु-भोज में भाग लेना चाहिये। "कार्यो द्वारा अनन्त जीवन की मुक्ति"

कुछ लोग कहते हैं कि, आप को अवश्य शनिवार को सब्त के दिन की पालना करनी चाहिये। या आप नरक मे जा रहे हो **"कार्यो द्वारा अनन्त जीवन की मुक्ति"**
इस प्रकार यह सूची आगे से आगे जा सकती है। यह लोग उस सत्य से भटक गए हैं, जो प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर सफलतापूर्वक पूरा किया और **यह सत्य है कि, सारी अनन्त मुक्ति केवल उसी में ही है!**

1 कुरिन्थियों 1:18
क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।

प्रिय मनुष्यों का सम्बन्ध, यहाँ पर इस लेख का एक उचित भाग है।

''पहली बार परमेश्वर ने मुझे एक मनुष्य के सिद्धान्तात्मक प्रेम को दिखाया। उसने यह प्रकट किया कि, यह उस का सिद्धान्त (विश्वास) था। जिसे (स्वामी या मालिक) **वह छोड़ना नही चाहता था।** यहाँ पर मैं बलपूर्वक कहना चाहता हूँ कि "सिद्धान्त" शब्द का अनुवाद "शिक्षा" हो सकता है, परन्तु इस कारण से सिद्धान्त (एक विशेष विषय पर विचारों का सग्रह है) जो कभी भी इस मनुष्य को सिखाया नहीं गया था। यह कुछ इस प्रकार था, जिसमें मसीही लोग पले-बढ़े हुए थे। क्योंकि इसका अभ्यास हो रहा था, जैसे कि आप इसे कई वर्षो से करते हैं, ''यह कुछ ऐसा था'' जिस पर वे **विश्वास रखना चाहते थे**, यह कुछ ऐसा था, जिसे वे जोर से **पकड़े रहना चाहते** थे। इसलिए हम कुछ बातों को आपसी सम्बन्ध के बीच में जारी रखते हुए देखना **चाहते** हैं, जोकि सत्य नहीं हैं और एक प्रिय मनुष्य की क्रिया को जारी रखना चाहते है'' पूरा लेख पढो।

इस दृश्य में उसने प्रकट किया कि, वे जिन्होंने टॉफी को खाया, उन्होंने अपने प्रियों को मारा था। यह सम्पूर्ण बण्डल (पैकेज) है। आप किसी एक बात को किए बिना, दूसरी बात को नहीं कर सकते ओर परमेश्वर की इच्छा का परिणाम नहीं जान सकते हो!

दया का सही पक्षः

एक सेवकाई सभा **27-12-09** में यह सूचना दी गई कि, प्रभु ने "दया का सही पक्ष" निजी स्र्वण सभा में कहा था। यह मनुष्य विवरण पेश कर रहा था। उसने इसे इस तरह से लिया, जैसे कि प्रभु हमें किसी बात को सिखा रहा है। और उसमें हमारी अगुवाई कर रहा है। हम नहीं जानते कि, प्रभु ने क्या, "अनुग्रह का सही पक्ष," के बारे में कहा है हमें जल्द ही ओर जानना था। मैंने इसे **2-1-2010** की प्रार्थना सभा में से, जोकि यूरोप में पैटिरस नामक शहर में, प्राप्त किया! (इटली में) :

"दुल्हन को तैयार करे!!!

प्रभु यीशु मसीह का वचन मेरे पास आया "मुझ में और मेरे वचन में बने रहो।" मैंने भी इस शब्द को स्पष्टता से अनुभव किया कि, प्रभु एक दया की लहर को अविश्वासीयों (मुक्ति के लिए) और विश्वासीयों के लिए भेज रहा है, ताकि वो अपने आपको इस से पवित्र बनाकर उसके पास वापिस आए, क्योंकि उन्होंने अपने पहले प्रेम को भुला दिया है।''

इन परिस्थितियों को देखते हुए, मैंने अपने मन में दौड़ते हुए, आपको इस लेख के बारे में लिखना आरम्भ किया है। इस से अचानक मेरे हृदय को चोट पहुँची कि नीम हकीम (बुद्धिमान समझने वाला) के लिए प्रभु ने **दया के गलत पक्ष पर** निस्संदेह अज्ञानपूर्वक होकर इस लेख में एक चित्र को स्थापित किया है! विशेष करके उन लोगों के लिए जो कहते हैं कि, वे पाप के कारण नरक में जा रहे हैं।

प्रभु अपनी इच्छा प्रकट करता है:

प्रभु ने मुझे इस लेख में स्थान के लिए **2-1-2010** के समय पर, एक ओर दूसरा दृश्य दिया। मैंने सोचा कि, मैंने पूरा कर लिया था, मैंने इस दृश्य में एक स्वर्ण फर्श को देखा, जो हमें कई वर्षो पहले दिया **गया था, और वह फर्श जिस पर मसीहीयों को चलना है। यह फर्श जो प्रकट करता है कि, हमें हर समय इन तीन मुख्य दाग़ो पर अवश्य ध्यान देना चाहिये या नहीं तो, हम प्रभु के साथ अपने चलने में ठोकर भी खा सकते हैं। यह स्वर्ण फर्श एक मनुष्य के द्वारा उसके पाँवों में और उसके हृदय के क्षेत्र के ऊपर रख गया था। मैं जानता था कि, प्रभु प्रकट कर रहा था** "बचाया गया" शब्द को उचित रीति से विभाजित करना। **यह हमारे लिए और उसके लिए कितना ही महत्वपूर्ण है। प्रभु हम से चाहता है कि, हम अनन्त मुक्ति और शारीरिक मुक्ति के बीच की भिन्नता (अंतर) को समझें और इन दोनों में कैसे चलना है। अपने हृदयों में इनका ध्यान रखें, क्योंकि यह प्रभु के अपने हृदय में बहुत ही बहुमूल्य है।**

मुफ्त पुस्तक
बिक्री हेतु नहीं

Free Book
Not for Sale

Take His Heart to the World Ministries

www.takehisheart.com
PO Box 532
Wellington KS 67152